CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जयश्रीराधे श्रीमते रामानुजाय नमः जयश्रीकृष्ण

श्रीरामानुज संकीर्तन कालिन्दी

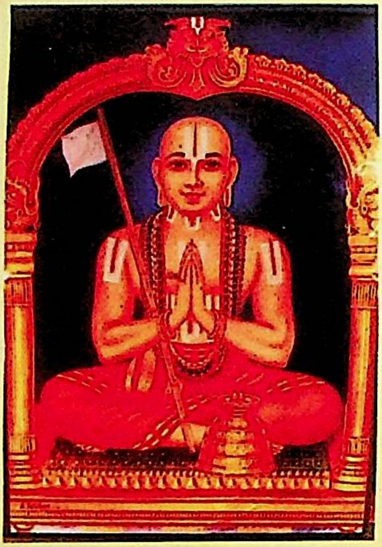

श्रीसम्प्रदाय प्रवर्तकाचार्य

श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्य

आविर्भाव 1017 ई० तिरोभाव 1137 ई०

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीमते रामानुजाय नमः श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः श्रीरंगदेशिकमहागुरुवे नमः

श्रीमधुसूदन गुरवे नमः

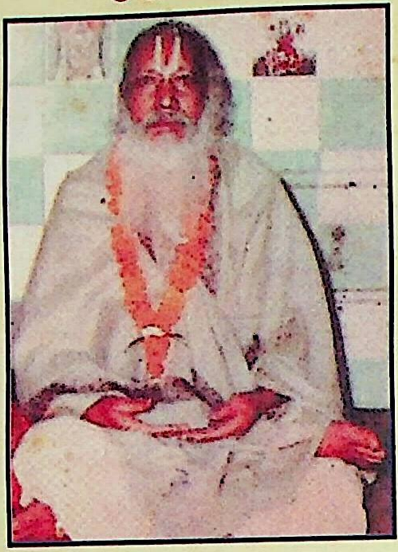

श्री श्री १००८ श्री

श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्यश्रीमत्सत्सम्प्रदायाचार्यश्रोत्रियब्रह्म

पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय राष्ट्रसन्त जगदाचार्य वैकुण्ठवासी
अनन्तश्रीविभूषित श्रीस्वामी मधुसूदनाचार्य जी महाराज
अशर्फी भवन, श्रीधाम अयोध्याजी

श्रीशाण्डिल्यकुलारविन्दतरणिं श्रीवैष्णवार्यप्रियम्
श्रीमद्रामविलाससूरितनयं भक्त्याप्रदीप्तोज्ज्वलम् ।
श्रीगोपालपदाब्जलुब्धमधुपं वेदान्तविज्ञं गुरुम्
श्रीमच्छ्रीमधुसूदनार्यमनघं वन्देदयैकार्णवम् ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री रामानुज संकीर्तन कालिन्दी

श्रीमद्भागवत एवं श्रीरामचरितमानस तथा प्रवचनों में
डा० आचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमजी महाराज के
द्वारा गाये गये
मंगलाचरण, भजन, धुन, स्तुति एवं मन्त्रों का संग्रह

संकलन कर्ता :

डा० स्वामी पुरुषोत्तमाचार्यजी महाराज

श्रीवैष्णववेदान्त शिक्षा संस्थान, श्रीवैष्णवधाम ट्रस्ट (निर्माणाधीन)
वृन्दावन-मथुरा रोड, श्रीधामवृन्दावन
सम्पर्क सूत्र 011-6966273

गायक एवं संकलक कलाकार
श्री रामकृपाल अवस्थी श्रीधामवृन्दावन,
धवाड़, खजुराहो, मध्य प्रदेश

--- : प्रकाशक :---

श्रीरामजीलाल अग्रवाल, 15-16 बनारसी दास स्टेट तिमारपुर दिल्ली-54

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीवैष्णव विद्या प्रकाशन ग्रन्थमाला प्रथम पुष्प

प्रकाशक : रामजीलाल अग्रवाल,
15-16, बनारसी दास स्टेट,
तिमारपुर दिल्ली-54

प्रकाशन सर्वाधिकार सुरक्षित ©

प्रथम संस्करण संख्या 2000
दीपावली 2000

न्यौछावर : तीस रुपये मात्र 30/-

प्राप्ति स्थान :

1. श्रीरामजीलाल अग्रवाल, 15-16, B.D. स्टेट, तिमारपुर, दिल्ली, Ph: 3984943, 3931366
2. श्रीमती इन्दु शर्मा, F-208, कटवारियासराय, नई दिल्ली-16, Ph : 6966273
3. प्रमोद अग्रवाल 1721, ऋषिनगर, गुरुद्वारारोड, कोटलामुबारकपुर, नई दिल्ली-3, फोन. न. 4690840, 4698204, 4694007

लेजर टाईप सेटिंग : स्टार बुक बाइंडर्स,
1721, ऋषिनगर, गुरुद्वारा रोड,
कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली-110003

मुद्रक : वैदिक मुद्रणालय, 3957, पहाड़ी धीरज दिल्ली-110006

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीमते रामानुजाय नमः

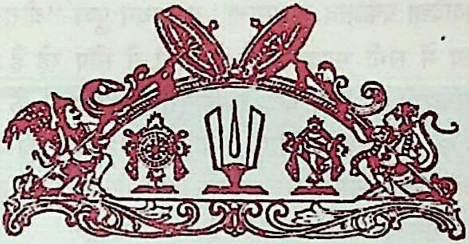

श्री श्री १००८ श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्य
श्रीमत्सत्सम्प्रदायाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय
राष्ट्रसन्त जगदाचार्य वैकुण्ठवासी अनन्तश्रीविभूषित
अशर्फी भवन पीठाधीस्वर परमश्रद्धेय परम पूज्य
श्रीपरमसद्गुरुदेव श्रीस्वामी मधुसूदनाचार्यजी
महाराज श्रीधाम अयोध्याजी के
श्रीचरण कमलों में भजन
भाव प्रसून
सादर
भेंट

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्राक्कथन

अकामः सर्वकामो वा मोक्षकाम उदारधीः।
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम्।। (भागवत)

"श्रीवैष्णवविद्या प्रकाशन ग्रन्थमाला" का प्रथम पुष्प "श्रीरामानुज संकीर्तन कालिंदी" के रूप में सभी भगवत्प्रेमियों के हाथों में सौंप रहे हैं। श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा कार्यक्रमों के मध्य यथा प्रसंगानुसार कलाकारों के साथ गाये हुऐ भजनों के संग्रह के रूप में कथा प्रेमियों के द्वारा आवश्यकता की अनुभूति की जा रही थी। गाये हुये भजन प्रसंगानुरूप रोचक तथा भाव परिपूर्ण हो ने के कारण भक्तों ने इसकी माँग की अतः सभी से प्रेरणा प्राप्त कर अपने व्यस्त कार्यक्रम मे से समय निकाल कर धीरे-धीरे इन सभी भजनों का संकलन किया जाता रहा। संकलन कार्य पूर्ण होने पर इसे प्रकाशनार्थ प्रेस में भेजा गया चार माह के अथक परिश्रम के पश्चात यह कार्य पूर्ण हुआ तथा नई सहस्राब्दी के प्रथम दीपावली के पावन पर्व पर इस प्रथम पुष्प को सभी भक्तों के हाथो में सहर्ष प्रसाद पूर्वक सौंप रहे हैं। दीपावली के साथ भाव परिपूर्ण ये भजन सभी भक्तों के लिये मंगलमय, आनन्दमय, सुखकारक, एवं भगवत्प्रेमवर्धक हों।

"कलौ केशव कीर्तनात्" "नाम संकीर्तनं यस्य सर्व पाप प्रणाशनम्" के अनुसार भगवान का भजन कीर्तन करने से जीव के समस्त पाप नष्ट होते है। इस बात को उद्देश्य में रखकर प्रस्तुत संकीर्तन कालिन्दी को आपके हाथों मे सौपने का श्रेय श्री मामराज जी अग्रवाल मुम्बई, श्रीरामजीलाल अग्रवाल, श्री सन्तराम जी अग्रवाल, 14-15 B. D. स्टेट तिमारपुर दिल्ली, को है जिनके सम्पूर्ण सहयोग से इस ग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है उक्त सपरिवार श्री राम जी लाल अग्रवाल को मेरी विशेष हार्दिक शुभकामनायें हैं। मैं अपनी सासू जी श्रीमती पुरुषोत्तम रामानुज दासी, जनकपुर, नेपाल तथा धर्मपत्नी श्रीमती इन्दु शर्मा, इन दोनों का विशेष आभारी हूँ जिनकी सतत प्रेरणा और सहयोग से यह प्रकाशन कार्य सम्पन हो सका। अन्त में मैं अपने माता-पिता और श्री सदगुरु देव को प्रणाम करता हूँ जिनका आशिर्वाद मुझे प्राप्त हुआ।

दीपावली संवत् 2057
तदनुसार 26-11-2000

दीपावली की शुभकामनाओं के साथ
आपका शुभचिन्तक
डा० स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

समर्पण

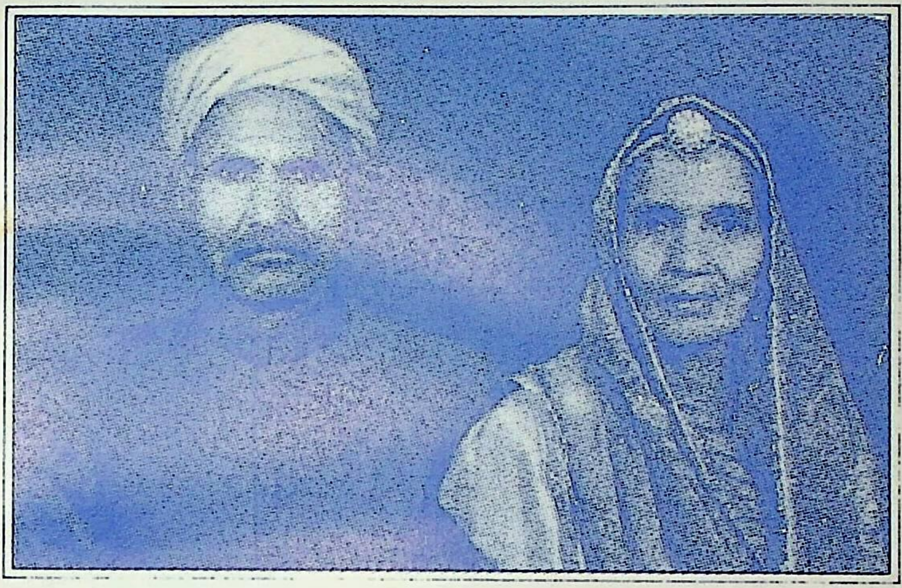

परम पूजनीय पिता श्री रामस्वरूप जी अग्रवाल

एवं

परमपूज्या माता श्रीमती कस्तूरी देवी जी

के चरण-कमलों में

सादर समर्पित ।

-रामजीलाल अग्रवाल

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रकाशकीय

अखिलकोटि ब्रह्माण्डाधिनायक परात्पर परब्रह्म आप्तकाम पूर्णकाम गोलोकाधिपति लीला पुरुषोत्तम श्री राधा सर्वेश्वर भगवान श्री कृष्ण के चरणों में भक्ति करने वाला अत्यन्त मलिन मनुष्य भी गौरवान्वित होता है। अजामिल पतित था, ध्रुव और प्रहलाद की आयु छोटी थी, गजेन्द्र विवेक शून्य था, शबरी बाल्यावस्था से ही प्रभु चरणों में समर्पित थी, कुब्जा भाव शून्य थी, मीरा प्रभु चरणों में समर्पित थी। भक्त नरसी मेहता और श्री सुदामा जी प्रभु प्रेम मे पगे हुए थे। ईश्वर ने इन सब की प्रेमा भक्ति से प्रसन्न होकर इन्हे कृतकृत्य कर दिया। इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर केवल भक्ति और भजन भाव से प्रसन्न होते है, गुण और धन से नहीं। भगवान श्री कृष्ण ने गोभक्ति को अपना प्रथम कर्तव्य बनाया और गोपाल बनकर यह संदेश दिया कि सेवा और भक्ति ईश्वरप्राप्ति के साधन हैं। भगवान श्री कृष्ण की गौ में इतनी निष्ठा है कि उन्होने अपने धाम का नाम गोलोक धाम रखा है।

महाराजा दिलीप ने गोमाता की भक्ति से ईश्वर की कृपा प्राप्त की और उन्हें गो सेवा से रघु जैसे पुत्र की प्राप्ति हुई। वस्तुतः गोमाता में तैंतीस करोड़ देवताओं का निवास है, अत एव ऋषियों ने गाय की सेवा को भक्ति का ही अंग माना है और गाय को विश्व की जननी माना है- **'गावो विश्वस्य मातरः'** मनुस्मृति में गाय का वैज्ञानिक महत्त्व प्रतिपादित किया गया है-

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजा।।

अर्थात् सूर्य, वरुण, वायु आदि देवताओं को यज्ञ में दी गयी आहुति से जो पुष्टि मिलती है, वह गाय के घी से ही मिलती है, जिससे सूर्य-किरणें पुष्ट होती हैं और उससे वर्षा होती है तथा वर्षा से सभी प्रकार के अन्न एवं वनस्पतियाँ आदि पैदा होती हैं। जिससे सम्पूर्ण स्थावर, जंगम, चर-अचर प्राणियों का भरण-पोषण होता है।

प्राचीनकाल में हमारे ऋषि-मुनियों ने शान्त प्राकृतिक स्थानों पर गुरुकुलों व आश्रमों का निर्माण किया, जहाँ देश-विदेश के छात्र विद्याध्ययन हेतु आते थे, प्रतिदिन नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान तथा धनुर्विद्या की शिक्षा दी जाती थी, सभी गुरुकुलों में

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रचुरमात्रा में गोधन रहता था, विद्यार्थियों को गो-सेवा के महत्त्व का ज्ञान कराया जाता था और गाय के दूध, दही, मक्खन तक्र, घी के प्रयोग से छात्रों की बुद्धि और शक्ति का सम्पोषण किया जाता था। इसीलिए हमारा देश सम्पन्न था तथा ज्ञान-विज्ञान में सभी राष्ट्रों में अग्रगण्य रहते हुए 'विश्वगुरु' और 'सोने की चिड़िया' के रूप में जाना जाता रहा।

कृषि हमारे देश की संस्कृति रही है, कृषि का मुख्य आधार गोवंश है। हमारे कृषि प्रधान देश की ७० प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सारा ढांचा कृषि और गोवंश पर निर्भर है। पारम्परिक रूप से गांवों में रहने वाले प्रायः सभी लोग खेती करते थे और गाय- बैल रखते थे, लोग अपने घर और आस-पास की भूमि पर गोबर तथा गोमूत्र का प्रयोग करते थे। खेती में गोबर गोमूत्र द्वारा निर्मित उत्तम और सस्ती खाद का प्रयोग करके स्वादिष्ट-पौष्टिक अन्न, फल, वनस्पति, पेड़-पौधों द्वारा अपने परिवार की ही नहीं, अपितु जीव-जन्तु, पशु-पक्षियों का भी भरण-पोषण करते थे। गोवंश के गोमूत्र द्वारा निर्मित 'कीटनाशक' जो बहुत सस्ता है, खेती में छिड़काव द्वारा प्रयोग करने से फसलों में कीट नहीं लगता तथा अन्न, फल, साग-सब्जियां शुद्ध रहती हैं। गाय के दूध, दही, मक्खन, तक्र और घी का उपयोंग भोजन में करने से अन्न की खपत में कमी होती है।

परमात्मा ने इस सृष्टि में चार-प्रकार के जीवों की उत्पति की है, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज। जन्म के साथ ही सभी जीवों के भरण-पोषण के साधन भी प्रकृति द्वारा उपलब्ध हैं, जैसे स्तनधारी जीवों की माताओं के स्तन में बच्चे के जन्म के साथ ही दुग्ध उत्पन्न होना। सभी जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, कीट-पंतग, वनस्पतियां पेड़-पौधे प्रकृति द्वारा निर्मित हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं, उनकी अनिवार्यता से सृष्टि में सामञ्जस्य बना रहता है, इनकी रक्षा प्रकृति के निर्माण में सहायक होगी, जो मानव-जीवन के लिए अति आवश्क है। अथर्ववेद में पृथ्वी को गाय के तुल्य माना गया है- 'ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती। अदितिः कामदुधा पप्राथाना। अर्थात् यह विस्तृत पृथ्वी हमारे लिऐ कामधेनु है।' पृथ्वी और गौमाता के समान भक्ति भी कामधेनु है, सेवा, प्रेम, सत्संगति, परोपकार आदि सभी सात्विक प्रवृत्तियों की पराकाष्ठा ही भक्ति है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

'श्रीरामानुज संकीर्तन कालिन्दी' नामक भजन काव्य ईश्वर भक्ति की सार्वभोमिक अभिव्यक्ति है। संत प्रवर डा० आचार्य श्री स्वामी पुरुषोत्तम जी महाराज के द्वारा श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा में अपने कलाकारों के साथ गाये हुए भजन जन-सामान्य को भाव विभोर करने वाले हैं। श्री गणेश, सरस्वती, हनुमान, सद्गुरुदेव, मंगलाचरण श्री राम स्तुति, श्रीकृष्ण स्तुति तथा प्रसंगानुसार गाये हुऐ भजनों में सन्त प्रवर महाराज श्री की मार्मिक भक्ति भावना दृष्टि गोचर होती है। 'श्रीरामानुज संकीर्तन कालिन्दी' भजन संग्रह के महत्व को देखकर ही मेरे द्वारा इसे प्रकाशित कराकर प्रभु प्रेमियों के हाथों में सौंपने का संकल्प किया गया है। इस अनूठे भजन संग्रह में आचार्य श्री ने श्री मद्भागवत के क्रमिक प्रसंगों पर स्कन्धानुसार भजनों का संकलन किया है। जो अपने आप में एक अनुपम सार्थक तथा प्रथम प्रयास है। ऐसा संकलन अभी तक किसी भी कथा व्यास के द्वारा नहीं किया गया है। इसलिये इस भजन संगह का महत्व विशेष है। गो सेवा और भक्तिमय जीवन के लिए मेरे प्रेरणा-स्रोत प्रातः स्मरणीय पूज्य पिताजी श्री राम स्वरूपजी अग्रवाल एवं परमाराध्या पूज्य माताजी श्रीमती कस्तूरी देवी जी की कृपा और आशिर्वाद से इस ग्रन्थ का प्रकाशन करके मुझे हर्षानुभूति हो रही है। मैं भक्ति प्रिया परम पावनी माँ शाकम्भरी तथा कुल देव श्याम बाबा से प्रार्थना करता हूँ कि 'श्री रामानुज संकीर्तन कालिन्दी' भजन संग्रह ग्रन्थ भक्ति रस में डूबे हुऐ भक्तों और सन्तों की संगति के साथ-साथ लोक जीवन का भी पथ प्रदर्शक बनें। साथ ही इस भजन संग्रह के संकलन कर्ता डा० आचार्य श्री स्वामी पुरुषोत्तम जी महाराज एवं गायक कलाकार श्री रामकृपाल अवस्थी श्री धाम वृन्दावन को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

मेरे पूज्य पिताजी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल 5 मंगलवार सम्वत् 1956 में हुआ था। तथा शतायु प्राप्त करके वे श्रावण शुक्ल पूर्णमासी सम्वत् 2056 को वैकुण्ठवासी हुए। मेरी माताजी का जन्म भाद्रपद कृष्ण 13 मंगलवार सम्वत् 1958 में हुआ था वे इस समय 99 वर्ष पूर्ण करके सौंवे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि वे सौ वर्ष पूर्ण करके दिव्य जीवी बनें और हमारे सम्पूर्ण परिवार के सदस्यों को आशिर्वाद तथा मार्ग दर्शन मिलता रहे।

विनीत

रामजीलाल अग्रवाल

15-16, बनारसी दास स्टेट,
तिमारपुर, दिल्ली-110054

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।।

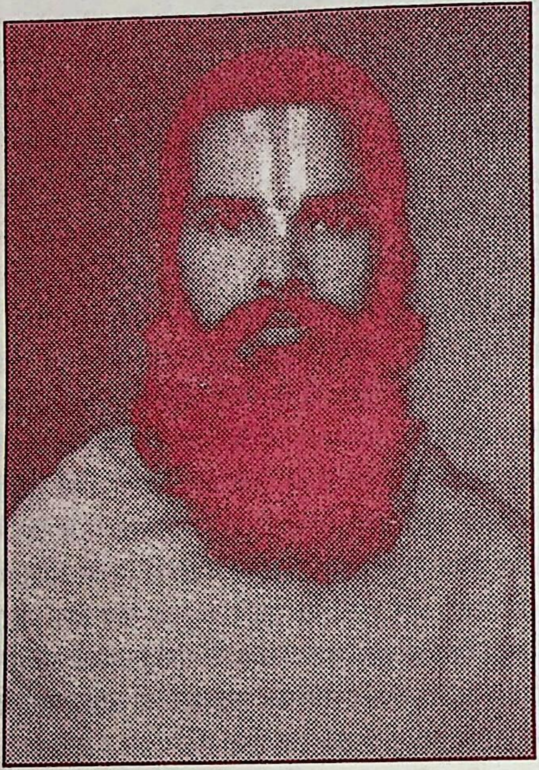

श्रीमज्जगद्गुरू रामानुजाचार्य
श्री मधुसूदन बैकुण्ठनाथ सेवाश्रम अयोध्या पीठाधीश्वर
श्री स्वामी श्यामनारायणाचार्य जी महाराज

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अनुक्रमणिका

क्रमांक	भजन	पृष्ठांक
1.	वैदिक शान्तिमन्त्राः	1
2.	शुद्धि करण मन्त्र	2
3.	सुभाषित श्लोक	3
4.	श्री मधुराष्टकम	4
5.	श्री गोविन्द दामोदर स्तोत्रम	5
6.	श्री दशावतार स्तोत्र	6
7.	आरती भगवत भगवान की	7
8.	सर्वरोग निवृत्यर्थं द्वादशदित्यनाम	9
9.	श्री सरस्वती वन्दना	10
10.	श्री सरस्वती स्तोत्रम्	11
11.	श्री हनुमत्स्तोत्रम्	12
12.	श्री गुरु स्तुति	13
13.	श्री व्यास वन्दना	14
14.	श्री कृष्ण स्तुति	15
15.	श्री राम चन्द्र कृपालु	16
16.	जय जय देव हरे	17
17.	श्री मद्भागवतमहात्म, सद्गुरुप्रार्थना, प्रभु हम भी	18
18.	वह शक्ति हमें दो दयानिधे, मिलती है साधुओ की	19
19.	कहाँ जा छिपे हो, सन्तन के संग, हे गोविन्द मुरारी	20
	श्री मद्भागवत प्रथम स्कन्ध के भजन	
20.	क्या कह रही है	21
21.	किसी के काम जो आये	-
22.	नन्दलाल साँवरिया मेरे	22
23.	कृष्ण कृष्ण में पुकारूँ	23
24.	हे नाथ	-
25.	आनन्द ही आनन्द	-
	द्वितीय स्कन्ध	
26.	में नहीं मेरा नहीं	24
27.	दान विहीन रहे	-
28.	अब सौंप दिया	-
	तृतीय सकन्ध	
29.	सबसे ऊँची प्रेम सगाई	25
30.	आज हरि आये	-
31.	कैसी प्रभु तूने काय नाथ वांधी	-
32.	हर देश मे तू	26
33.	न ये तेरा न ये मेरा	-
34.	संसार के लोगो से	-
35.	हर दम तू तैयार है	27
36.	क्या हाल कहूँ	-
	चतुर्थ स्कन्ध	
37.	भगवान के सच्चे भक्तों को	28
38.	दीन दयाल सुने	-

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पंचम स्कन्ध

39. राम जीरो नाव म्हने 29
40. कुछ लेना न देना मगन रहना -

षष्ठ स्कन्ध

41. सीताराम-सीताराम -
42. मेरे दाता 30
43. राम नाम के हीरे मोती -

सप्तम स्कन्ध

44. मिलता है सच्चा सुख 31
45. राम रस रात दिना बरसे -
46. न ये तेरा न ये मेरा -
47. श्री राम तुम्हारे चरणों में 32
48. ब्रज के नन्द लाल -
49. तेरे विना श्याम 33
50. दर्शन दो घनश्याम -
51. गजनिरखत फहरान बसन की 34
52. रहे मेरे मुख में -
53. धर कर वामन को अवतार 35
54. नाथ कैसे वलि को याचन आये -
55. जीवन में सुख दाई है 36
56. जरा आ शरण में राम -

नवम स्कन्ध

57. श्री सूर्यवंश वर्णन 37
58. जय जय सुरनायक -
59. भये प्रकट कृपाला 38
60. राम दशरथ के घर 39
61. बधैया वाजै हो -
62. हमारे राज राजेश्वर -
63. जनम लियो रघुरैया 40
64. हम पर चलाय दियो टोना -
65. राम वन से लौट कर आये -
66. आये बहुरि रघुरैया, अवध मे 41
67. बाजै बधैया -
68. हमारे राजा राम बनायें जायेंगे -

दशम स्कन्ध

69. वन्दना-कवित्त 42
70. छवि वर्णन -
71. अँगूठी में नगीना -
72. पहुँची 43
73. कोई कहे गोविन्द -
74. नन्द उत्सव -
75. वधाई कवित्त -
76. कृष्ण घर नन्द के 44
77. श्री कृष्ण जन्म वधाई 45
78. श्री कृष्ण अवतार -
79. व्रज में हो रही जय जय कार 46

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

80.	मैया-मैया कह के	-
81.	शिव आये यशोदा के द्वार	47
82.	नटवर नागर नन्दा	-
83.	जग मे सुन्दर है दो नाम	48
84.	बाजै बाजै री वधाई	-
85.	सभी मिल प्रेम से बोलो	-
86.	कौन सी ने मार	49
87.	जनम लिया गोपाला ने	-
88.	चलो देखि आवें घर नन्दलाला हुआ	50
89.	जियो श्याम लाला	-
90.	भज गोविन्दम्	-
91.	कृष्ण जिनका नाम है	51
92.	नन्दगाँव के घनश्याम है	-
93.	नाचे नन्दलाल	-
94.	तेरे लाला ने ब्रज रज खाई	52
95.	एक दिन ग्वालिन	-
96.	गारी मति दीजो	53
97.	छोटी-छोटी गइया	-
98.	अनूपम माधुरी जोड़ी	-
99.	राधा श्री वृष भानु दुलारी	54
100.	मोहन हमारे मधुवन मे आया न करो	-
101.	डोन्ट टच माई गगरी	-
102.	चुपके चुपके	55
103.	आज ठाढ़री विहारी	-
104.	आज मेरे अँगना में	-
105.	पकड़े गये कृष्ण भगवान	56
106.	तेरो याम बड़ा अलबेला	-
107.	बाजे वंशी नाचे मोर	-
108.	कूदे जमुना में कन्हैया	57
109.	काली दह पे खेलन	-
110.	मेरो कान्हा	58
111.	मीठी रस से भरी	-
112.	गिरिराज धरण	-
113.	गिरिराज के शरण में	59
114.	श्री गोवर्धन महाराज	-
115.	राधा कुण्ड	-
116.	में गोवर्धन को जाउँ	-
117.	नख पर धार लियो	60
118.	राधे राधे जपो	-
119.	बाँके विहारी की	61
120.	रास लीला	-
121.	सुनादे सुनादे	62
122.	मुरली धरा मनमोहना	-
123.	सब द्वारन को छाड़िकै आयो तेरे द्वार	63
124.	आज ठाढ़ोरी	-
125.	श्याम तेरे मिलने	64

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

126.	श्यामजू मेरी नैया	-
127.	दरवार में राधा रानी के	-
128.	मैंने रटना लगाई रे	65
129.	हे स्वामिनि	-
130.	मेरी आस यही है	-
131.	मैं तो आई श्री वृन्दावन	66
132.	मन जैयो मत छोड़	-
133.	मैं तो रटूंगी राधा नाम	67
134.	तेरे चरण कमल में	-
135.	मैंने मेंहदी रचाई रे	-
136.	वृन्दावन मे राधे राधे	68
137.	मेरा छोटा सा संसार	-
138.	एक दिन तो भोला भण्डारी	69
139.	बाँके विहारी लाल	-
140.	दूर नगरी	-
141.	तेरी पार करेंगे नैया	70
142.	मोहे आन मिलो	71
143.	नैया ले चल परली पार	-
144.	एसो रास रच्यो	72
145.	श्याम तेरी बंशी	-
146.	वो मोहन है तभी तो	73
147.	नीली छत के पीछे बैठा	74
148.	हे वृन्दावन के मधुर श्याम	-
149.	सांसो का ये खजाना	75
150.	मैं श्याम नाम का खजाना	-
151.	मुरली बजाने वाले	76
152.	मुरली बजा के मोहन	-
153.	तू है मोहन मेरा	77
154.	सान्तों का सहारा	-
155.	गोपाल सहारा तेरा	-
156.	जय जय राधा रमण हरि बोल	-
157.	चक्र सुदर्शन धारी	78
158.	ओ श्याम छोड़ वृज को	-
159.	राधे तेरे चरणों की	79
160.	दुनिया का वन कर देख लिया	-
161.	कामना नहीं है	-
162.	कन्हैया तुम्है	-
163.	वृज भूमि की महीमा	80
164.	वृज राज वृज विहारी	-
165.	श्री वृन्दावनधाम अपार	-
166.	अली मोय लागे वृन्दावन नीको	82
167.	अक्रूर आगमन मथुरा	-
168.	व्रज चन्द प्राण	-
169.	रुक जाओ मेरे घनश्याम	83
170.	एक पल तो दया की कर दो नजर	-
171.	ऊधौ मोहि ब्रज विसरत नहीं	84

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

172.	ऊधौ मैया को सुनैयो तेरो लाला	-
173.	उद्धव इतनो कहियो जाई	-
174.	कहा माधव ने उद्धव से	85
175.	आजा कहाँ है मेरे श्याम पियारे	-
176.	कन्हैया तुम्हे एक नजर देखना है	86
177.	सलोनी साँवरी सूरत	-
178.	मेरा गोपाल गिरधारी	-
179.	सूनी यमुना सूना मधुवन	87
180.	कन्हैया-कन्हैया पुकारा करेंगे	-
181.	दर्शन दो घनश्याम	-
182.	श्यामपिया	
183.	मन्दिर मे रहते हो भगवन्	-
184.	क्या भरोसा	-
185.	बड़ी देर भई नन्दलाला	89
186.	जरा सामने तो आओ	-
187.	आना सुन्दर श्याम	-
188.	अब किसी महफिल में	90
189.	तू सुमरिन कर राधे राधे	-
190.	छटा निज साँवरे मोहन	-
191.	सलोने श्याम सुन्दर की	91
192.	मुझे क्या काम दुनियाँ से	-
193.	पकड़ लो बाँह गिरधारी	-
194.	मथुरा जाके	92
195.	बाँके विहारी मुझको	-
196.	सुवह साम जिसको	-
197.	राधे रानी के चरणों मे	93
198.	कन्हैया रुलाते हो	-
199.	ये तो प्रेम की वात है	-
200.	जो शीश तली पर	94
201.	साम भयी घनश्याम	-
202.	श्री राधे गोपाल	95
203.	मेरे कनुआँ को मनुवाँ	-
204.	मिला दो श्याम	-
205.	श्याम को संदोशो	96
206.	ऊधौ जी मैंने सव	-
207.	ऊधौ जव टेढ़े दिन आवें	-
208.	ऊधौ मन न भये	97
209.	ऊधौ ज्ञान चरचा	-
210.	मीरा तैने नैना	-
211.	मैं तेरी हो गयी श्याम	-
212.	जो प्रेम गली में आये	98
213.	सन्देशो देवकी से कहियो	-
214.	श्री कृष्ण रुक्मिणि विवाह	-
215.	मांगलिक श्लोक	99
	श्री सुदामा चरित्र	
216.	नाथ जाओ चले	-
217.	चले श्याम सुन्दर से	-

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

218.	एक ही गुरु के पास	100
219.	तेरे दर को छोड़ कर	-
220.	दया के धाम हो	101
221.	जाओ मोहन के दरबार	-
222.	दीन वन्धु मेरे	-
223.	बड़ी निठुराई तैने	102
224.	सुदामा करि रह्यो	103
225.	करले नारायण से प्यार	-
226.	अरे द्वारपालो	104
227.	आओ कन्हैया	-
228.	प्रभु दर्शन	105
229.	तेरे पूजन को भगवान	106
230.	दशा मुझ दीन की भगवन	-
231.	भगवान मेरी नैया	107
232.	इतना तो करना स्वामी	-
233.	तेरी बन जायेगी	108
234.	कल कुण्डल कान्ति	-
235.	जब सौंप दिया	-
236.	राम कहो घनश्याम कहो	909
237.	श्री राम कहे सुखी	-
238.	उलझ मत दिल	110
239.	हम तो तेरी	-
240.	मननिर्मल भया	111
241.	डूबतों को बचा लेने वाले	-
242.	धुन	-
	एकादश एवं द्वादश स्कन्ध	
243.	मेरे भगवन् मैं कुरवां	114
244.	मधुवन की लताओं में	115
245.	हीरे जैसा जन्म लिया	-
246.	मुझे कैन पूछता था	116
247.	जिसको जीवन में	-
248.	मन की तंरग मार लो	117
249.	सुनेरी मैंने निरवल के वलराम	-
250.	वजा रामानुजी डंका	118
251.	इन्सान तुझे इस दुनियाँ से	-
252.	जिस दिल में प्रभु की याद नहीं	119
253.	मेरा भी धाम व्रज में	-
254.	श्याम गोरी नित्य किशोरी	120
255.	श्याम सुन्दर को	121
256.	मैं तो वरसाने को	-
257.	अरे मन चल वृन्दावन	122
258.	गोपाल सहारा तेरा है	-
259.	भली बनी छवि आपकी	123
260.	मेरे रसना से प्रभु तेरा नाम निकले	-
261.	रंग भरी वरसा करके	-
262.	जपो राम नाम सुखदाई	125

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

262.	सीताराम कहो, राधे श्याम कहो	-
263.	मुझे कैन पूछता था	-
264.	कर्मफल	-
265.	अपने दुःख में	126
266.	मधुवन की लताओं में	-
267.	जेहड़ा मन दिया वागां	-
268.	सुनो श्याम सुन्दर	-
269.	प्रीत न लगाई	127
270.	भजन श्याम सुन्दर का	-
271.	राधा बन गई जिलाधीश	-
272.	कुछ न विगड़ेगा तेरा	128
273.	सन्तन के संग लाग रे	-
274.	जीवन को अपना	-
275.	कोई कहियो रे प्रभु आवन की	129
276.	लेते जाओ रे	-
277.	लगन गुरु से	-
278.	जग असार मे सार	130
279.	प्रभु की यही पार्लिया मेन्ट	-
280.	जीवन को अपना	131
281.	एक तेरी दया का	-
282.	एक झोली मे फूल	-
283.	जो दिल से मेरा नाम	132
284.	कर दो प्रभो	-
285.	कभी कभी भगवान	133
286.	कभी राम बनके	-
287.	दरवार हजारों	134
288.	नन्हा सा फूल हूँ मैं	-
289.	प्रभु मेरे जीवन का	135
290.	मुझे गर्व न और	-
291.	मुझे प्रेम का पंथ	-
292.	मुझे आपना जीवन	136
293.	गज निरखत फहरान बसन की	-
294.	मै तो गोवर्धन को जाऊँ	-
295.	नख पर धार लियो	137
296.	हरि नाम बोलो	-
297.	मैं आया शरण तेरी	-
298.	दरवार में वंशी वाले	138
299.	दरवार हजारों देखें है	-
300.	तेरी मेहरवानी	139
301.	सबका दाता	-
302.	राम नाम के हीरे मोती	140
303.	मुझे रास आ गये	-
304.	जिस देश में जिस भेष में	141
305.	तेरी सूरत जो मन मे वसी	-
306.	कथा रस	-
307.	आदत भुरी सँभाल ले	142
308.	मेरे मन की वाँगा मोड़े	

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

309.	कभी राम बनके कभी श्याम बनके	-
310.	श्री कृष्ण रूप माधुरी	143
311.	क्षण भंगुर	146
312.	मेरे भोले बाबा	147
313.	भोले नाथ सुनो	-
314.	तेरी चौखट पे आना	-
315.	मैं आया शरण तेरी	148
316.	श्री रघुवीर जी की आरती	-
317.	आरती बाल कृष्ण की	-
318.	श्री गिरधर जी की आरती	149
319.	आरती श्री वामन भगवान की	-
320.	आरती श्री नृसिंह जी की	150
321.	आरती श्री रघुनाथ जी की	-
	परिशिष्ट	
322.	सरस्वती वन्दना	151
323.	गणेश वन्दना	-
324.	उधौ मोहे सन्त	-
325.	गुरु देव आपके	152
326.	कपिल मुनि मात	-
327.	भजो सुत सांचे	-
328.	ध्रुव प्रसंग	153
329.	गज प्रसंग	-
330.	मोहनी मूरत	-
331.	अम्वरीष प्रसंग	-
332.	है आँख वो	154
333.	श्री गंगा मया	-
334.	श्री राम चन्द्र रघुवर	-
335.	छठी प्रसंग	155
336.	आज इतनी देर	-
337.	प्यारे मोहन मुरलिया	-
338.	माँगा है मैने श्याम से	156
339.	मेरे वाँके विहारी लाल	-

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वैदिक शान्तिमन्त्राः

हरिः ऊँ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो
विपन्यवो जागृवाँ्सः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।।
पर्याप्त्याऽनन्तरायाय सर्वस्तोमोतिरात्र उत्तममहर्भवति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै
सर्वमेव तेनाप्नोति सर्वं जयति।।१।।

ऊँ शं नो मित्रः। शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु।
तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।२।।

ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विसावहै।।३।।

ऊँ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवाँ्सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।४।।

ऊँ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषाः विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।।५।।

ऊँ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं,
जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः सतात्।।६।।

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ्शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्ति
रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वँ् शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।७।।

ऊँ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।८।।

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।६।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।१०।।

।। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

।। सुशान्तिर्भवतु।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

(शुद्धिकरणमन्त्र)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यान्तरः शुचिः।।

(सूर्यजलप्रदानमन्त्र)

एहि सूर्य सहस्रांशो ! तेजोराशे ! जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

(तुलसी मन्त्र)

महाप्रसाद जननी, सर्व सौभाग्यवर्धिनी। आधिव्याधिहरा नित्यं, तुलसी त्वं नमोऽस्तु ते।।

(पीपलपूजामन्त्र)

मूलतो ब्रह्मरूपाय, मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय, पिप्पलाय नमो नमः।।

(गोग्रासमन्त्र)

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं, गावस्त्रैलोक्यमातरः।।

(मृत्युञ्जय-शिवपूजनमन्त्र)

ॐ-त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव वन्धनान्, मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

(प्रदक्षिणा करने का मन्त्र)

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणे पदे पदे।।

(भगवान् को भोग लगाने का मन्त्र)

त्वदीयं वस्तु गोविन्द! तुभ्यमेव समर्पये। गृहाण पुरुषो भूत्वा, प्रसीद परमेश्वर।।

(भोजन करने का मन्त्र)

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।१।।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम।।२।।

(पृथ्वी को प्रातः प्रणाम करने का मन्त्र)

समुद्रमेखले देवि!, पर्वत स्तनमण्डले। विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं, पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

(प्रातः काल स्वकरदर्शन मन्त्र)

कराग्रे वसते लक्ष्मीः, करमध्ये सरस्वती। करमूले च गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्।।

भूतप्रेतबाधानिवृत्त्यर्थ मन्त्र

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

श्री देवी वन्दना

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सुभाषित श्लोक

वर्हापीडाभिरामं मृगमदतिलकं कुण्डलाक्रान्त गण्डं।
कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठं स्मितसुभगमुखं स्वाधरेन्यस्तवेणुं।।
श्यामं शान्तं त्रिभगं रविकरवसनंभूषितं वैजयन्त्या।
वन्दे वृन्दावनस्थं युवतिशतवृतं ब्रह्म गोपालवेषम्।।१।।
यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैः आलक्षितो न सहसा पुरुषस्यतस्य।
सद्यो वशीकरण चूर्णमनन्तशक्तिं तं राधिका चरणरेणुमनुस्मरामि।।२।।
वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च। पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।३।।
तुलसीकाननं यत्र यत्र पद्मवनानि च। पुराणपठनं यत्र तत्र सन्निहितो हरिः।।४।।
तत्रैव गगां यमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदारकथा प्रसगः।।५।।
मूकं करोति वाचालं पंगुं लङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्।।६।।
भूतैर्महद्रिर्यइमाः पुरो विभुः निर्मायशेते यदमूषु पूरुषः।
भुङ्क्ते गुणान् षोडश षोडशात्मकः सोऽलंकृषीष्ट भगवान् वचांसि मे।।७।।
कृष्णप्रियं कलिमलघ्नमनन्तमीड्यम् वृन्दावनान्त परिशोभितमत्युदारम्।
कारुण्यधाम कमनीय किशोरमूर्तिम् गोवर्धनं गिरिवरं प्रणमामि नित्यम्।।८।।
राधा साध्यं साधनं यस्य राधा, मन्त्रो राधा मन्त्रदात्री च राधा।
सर्वं राधा जीवनं यस्य राधा, राधा-राधा वाचि नि॰ तस्य शैषम्।।९।।
भक्ति भक्त भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक। इनके पद वन्दन किये नाशत विघ्न अनेक।।१०।।
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार। वलबुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।११।।
लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं,. श्रीरामचंद्र शरणं प्रपद्ये।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।
राजीवनयन धरे धनु सायक। भक्त विपति भंजन सुखदायक।।
मंगलभवन अमंगलहारी। द्रवउ सो दशरथ अजिर विहारी।।
जनकसुता जगजननी जानकी। अतिशय प्रिय करुणानिधानकी।।
ताके जुगपदकमल मनावउ। जासु कृपा निरमल मति पावऊ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

महाबीर बिनवऊं हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना।।
प्रनवऊँ पवनकुमार, खलवन पावक ज्ञानघन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचापधर।।
कुंद इंदु सम हेह, उमा रमन करुणा अयन।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन।।
सीयराममय सब जग जानी। करऊँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।

।। श्रीमधुराष्टकम् ।।

अधरं मधुंर वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।
नयनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।
गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा बीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दुष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावों मधुरा यष्टिर्मधुरा सुष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।
इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। श्री गोविन्द-दामोदर स्तोत्रम् ।।

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।१।।
श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति।।२।।
विक्रेतु कामाखिल गोपकन्या मुरारिपादार्पित चित्तवृत्तिः।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति।।३।।
गृहे गृहे गोपवधूकदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्ययोगम्।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविंद दामोदर माधवेति।।४।।
सुखं शयाना निलये निजेऽपिनामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविंद दामोदर माधवेति।।५।।
जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्त भक्तार्ति विनाशनानि गोविंद दामोदर माधवेति।।६।।
सुखावसाने त्विदमेवसारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं गोविंद दामोदर माधवेति।।७।।
जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि गोविंद दामोदर माधवेति।।८।।
त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या गोविंद दामोदर माधवेति।।९।।
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविदं दामोदर माधवेति।।१०।।

गुरु देव तुम्हारी जय होवे, गुरु देव तुम्हारी जय होवे।
श्री राम तुम्हारी जय होवे, श्री कृष्ण तुम्हारी जय होवे।।
गोपाल तुम्हारी जय होवे, गोविन्द तुम्हारी जय होवे।
श्री गंगा जी की जय होवे, श्री यमुना जी की जय होवे।।
श्री राधाजी की ज़य होवे, वृजराज तुम्हारी जय होवे।
गुरु देव तुम्हारी जय होवे, गुरु देव तुम्हारी जय होवे।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री दशावतार स्तोत्र

प्रलय प्रयोधि जले धृतवानसि वेदम्, विहित वहित्र चरित्रमखेदम्।
केशव धृत मीन शरीर, जय जगदीश हरे।।१।।
क्षितिरिह विपुलतरे त्तिष्ठति वत पृष्ठे, धरणी-धारण किण-चक्र-गरिष्ठे।
केशव धृत कूर्म शरीर, जय जगदीश हरे।।२।।
वसति दशन-शिखरे धरणी तव लग्ना, शशिनि कलंक कलेव निमग्ना।
केशव धृत-शूकर रूप, जय जगदीश हरे।।३।।
तव कर कमल वरे नखमद्भुत-श्रृंगम्, दलित हिरण्यकशिपु-तनु-भृंगम्।
केशव धृत नरहरि रूप, जय जगदीश हरे।।४।।
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत-वामन, पद-नख-नीर-जनित-जन-पावन।
केशव धृत-वामन-रूप, जय जगदीश हरे।।५।।
क्षत्रिय-रुधिर-मये जगदपगत पापम्, स्नपयसि पयसि शमित भव-तापम्।
केशव धृत भृगुपति रूप, जय जगदीश हरे।।६।।
वितरसि दिक्षु रणे दिक्-पति कमनीयम्, दश-मुख मौलि-बलिं-रमणीयम्।
केशव धृत राम शरीर, जय जगदीशहरे।।७।।
वहसि वपुषि विशदे वसनम् जलदाभम् हल हति-भीति-मिलित-यमुनाभम्।
केशव धृत-हलधर रूप, जय जगदीश हरे।।८।।
निंदसि यज्ञ-विधेरहह श्रुति-जातम्, सदय हृदय दर्शित पशु घातम्।
केशव धृत बुद्ध शरीर, जय जगदीश हरे।।९।।
म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालम्, धूमकेतुमिव किमपि करालम।
केशव धृत कल्कि शरीर, जय जगदीशहरे।। १०।।
श्री जय देव कवेरिदमुदितमुदारम्, श्रृणु सुखदाम् सुभदाम् भवसारम्।
केशव धृत दश विध रूप, जय जगदीश हरे।।११।।

वेदानुद्धरते, जगन्निवहते, भूगोलमुद्बिभ्रते,
दैत्यं दारयते, बलिं छलयते, क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते, हलं कलयते, कारुण्यमातन्वते,
म्लेच्छान्मूर्छयते, दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आरती भागवत भगवान की

श्री भागवत भगवान की है आरती। पापियों को पाप से है तारती।।
यह अमर ग्रन्थ, यह मुक्ति पंथ, यह पंचम वेद निराला है।
नव ज्योति जगाने वाला है ।।
हरिनाम यही, हरिधाम यही, जग के मंगल की आरती।
पापियों को पाप से है तारती।। श्री भागवत........
यह शान्त गीत, पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाला है।
हरि दर्श कराने वाला है।
यह सुख करणी, यह दुःख हरणी, श्रीमधुसूदन की आरती।
पापियों को पाप से है तारती ।। श्री भागवत.......
यह मधुर बोल, जग पंथ खोल, सन्मार्ग बताने वाला है।
बिगड़ी को बनाने वाला है।।
श्री राम यही, घनश्याम यही, यह प्रभु महिमा की आरती।
पापियों को पाप से है तारती।।श्री भागवत......

।। कर्पूर आरती ।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।
गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थ जम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।
ॐ ब्रह्ममुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रशनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु।।

।। मन्त्र पुष्पांजलि ।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेव।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म हे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं वैराज्य पारमेष्ठ्यं राज्यं

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

महाराज्य माधिपत्यमयं समन्त पर्यायी स्यात्।
सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादा प रार्धात् पृथिव्यै
समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येषश्लोको ऽभिगीतो मरुतः।
परिवेष्टारो मरुतस्या वसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वंदेवाः सभासदः।।
ॐ सेविन्तका वकुल चम्पक पाटलाब्जै पुन्नाग जातिकर वीररसाल पुष्पैः।
विल्वप्रवाल तुलसीदल मञ्जरीभिस्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।

।। प्रदक्षिणा ।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणायां पदे पदे।।
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गणः। तेषां सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।

।। क्षमा प्रार्थना ।।

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापाऽऽत्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो हरिः।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दनः। यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं। पूजांचैव न जानामि प्रसीद परमेश्वरः।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

।। महामन्त्र ।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम, रामर राम हरे हरे।।

एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादिगमनं, हत्वा मृगं काञ्चनम्, वैदेहीहरणं जटायुमरणं, सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालिनिग्रहणं समुद्रतरणं, लंकापुरीदाहनम्, पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्।।

।। एक श्लोकी भागवतम् ।।

आदौ देवकीदेवगर्भजननं गोपीगृहेवर्धनम् मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्धनोद्धारणम्।
कंसोच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम् एतच्छीमद्भागवतपुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

।। एक श्लोकी महाभारतम् ।।

आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनम् द्यूते स्त्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालयभेदनम्।
लीलागोहरणं रणे विचरणं सन्ध्याक्रियावर्धनम् पश्चाद्भीष्मसुयोधनादिहननं चैतन्महाभारतम्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सर्वरोगनिवृत्यर्थं द्वादशादित्यनाम

आदित्यः प्रथमं नाम, द्वितीयन्तु दिवाकरः। तृतीयं भास्करः प्रोक्तं, चतुर्थन्तु प्रभाकरः।।१।।
पञ्चमन्तु सहस्त्रांशुः, षष्ठं चैव त्रिलोचनः। सप्तमं हरिदश्वश्चैवाष्टमं च विभावसु।।२।।
नवमं दिनकृत् प्रोक्तं, दशमं द्वादशात्मकः। एकादशं त्रयी प्रोक्तं, द्वादशं सूर्य एव च।।३।।
द्वादशादित्यनामानि, प्रातःकाले पठेन्नरः। दुःस्वप्ननाशनं चैव, सर्वदुःखं च नश्यति।।४।।
दद्रुकुष्ठ हरं चैव, दारिद्र्यं हरते तथा। सर्वतीर्थ प्रदञ्चैव, सर्वकाम प्रवर्धनम्।।५।।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, भक्त्या नित्यमिदं नरः। सौख्य मायुस्तथाऽऽरोग्यं, लभते मोक्षमेव च।।६।।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारे ममलेश्वरम।
परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्यां भीमशंकरम्। सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारुका बने।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं, त्र्यम्बकं गौतमीतटे। हिमालये तु केदारं, घुश्मेशं च शिवालये।।
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः। सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति।।

सर्वरूप हरि वन्दना

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो,
बौद्धाः बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः,
सोऽयं वो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।।

श्री गणपति वन्दना

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पार्षद्याः परश्शतम् । विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये।।
गजाननं भूतगणादि सेवितम्, कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमोस्ते।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गाइये गणपति

गाइये गणपति जग वन्दन, शंकर सुवन भवानी के नन्दन।।
सिद्धि सदन गजवदन विनायक, कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक।।
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता, विद्या वारिधि बुद्धि विधाता।।
माँगत तुलसि दास कर जोरे, बसहु राम सिय मानस मोरे।।

श्री सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम्।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम्।।

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदाऽस्मांक सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकांचविदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेस्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

नास्ति विद्या समं चक्षु र्नास्ति सत्य समं तपः।
नास्ति राग समं दुःखं नास्ति त्याग समं सुखम्

सङ्गः सर्वात्मना त्याज्यः सश्चेत् त्यक्तुं न सक्यते।
स सद्भिः सह कर्तव्यः सतां सङ्गो हि भेषजम्।।

कामः सर्वात्मना हेयो हातुं चेच्छक्यते न सः।
मुमुक्षां प्रति कर्तव्य सैव तस्यापि भेषजम्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

रविरुद्र-पितामह-विष्णुनुतं, हरिचन्दन-कुंकुम-पङ्क युतम्।
मुनिवृन्द-गणेन्द्र समानयुतं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।१।।
शशिशुद्ध-सुधा-हिम-धामयुतं, शरदम्बर-बिम्ब-समानकरम्।
बहुरत्न-मनोहर-कान्ति युतम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।२।।
कनकाब्ज-विभूषित-भूतिभवम्, भव-भाव-विभाषित-भिन्नपदम्।
प्रभुचित्त-समाहित-साधुपदम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।३।।
भवसागर-मज्जन-भीतिनुतं, प्रतिपादित-सन्तति कारमिदम्।
विमलादिक-शुद्धविशुद्धपदम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।४।।
मतिहीन-जनाश्रय-पादमिदम्, सकलागमभाषित भिन्न पदम्।
परिपूरित-विश्वमनेक-भवम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।५।।
परिपूर्णमनोरथ-धामनिधिम्, परमार्थ-विचार-विवेकविधिम्।
सुरयोषित-सेवित-पादतलम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।६।।
सुरमौलिमधि-द्युति-शुभ्रकरम्, विषयादि-महाभय-वर्गहरम्।।
निजकान्ति-विलेपित-चन्द्र-शिवम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।७।।
गुणनैक-कुल-स्थिति भीतिपदं, गुण गौरव-गर्वित-सत्यपदम्।
कमलोदर-कोमल-पादतलम्, तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।८।।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, जले वापि स्थले स्थितः।
पाठमामात्रात्भवेत्प्राज्ञो, ब्रह्मनिष्ठः पुनः पुनः।।६।।
इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं, ब्रह्मणा परिकीर्तितम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, तस्य कण्ठे सरस्वती।।१०।।

जय जय हे वीणा पाणी

जय जय जय हे वीणा पाणी, शिव कल्याणी मात भवानी।। जय
सप्त सुरों की तू महारानी, वेदों ने भी महिमा न जानी।। जय
आज सुरों के दीप जल दे, रोम रोम संगीत बहा दे।। जय
बोलत घुंघरू वाजे पायलियाँ, झूम रही है सारी नगरिया।। जय
जय जय जय हे वीणा पाणी, शिव कल्याणी मात भवानी।। जय

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री हनुमत्स्तोत्रम्

मर्कटेश महोत्साहः सर्व शोक विनाशनः।
शत्रून् संहर मा रक्ष, देहि मे विपुलांश्रियं।।१।।
वायुपुत्र महाबीरः भक्तानामभयंकरः।
सर्वेप्सित् प्रददासि त्वं नान्यत् तुल्योऽस्ति कश्चन।।२।।
श्रीमता रामचन्द्रेण सर्वेषां हितकारिणा।
स्थापितोऽसि महावीरः पृथिव्यां भक्तवत्सलः।।३।।
भक्तेभ्यः सिद्धिं दानाय चरितं स्तवनाय च।
रामायणस्य फलदः सिद्धिं कुरु मनोरथं।।४।।
वादिनः प्रशमं यान्तु विजयो मे सदा भवेत्।
अभीष्टार्थस्य सिध्यर्थं नष्टस्य पुनरागमः।।५।।
राज्यवश्यं प्रजावश्यं चक्रवर्तित्वमेव च।
नैरुज्यं च शरीरेषु स्त्रीपुत्रेषु च मे भवेत।।६।।
सर्वाणि कुशलानीह मम सन्तु पदे पदे।
उपरोक्त साढ़े ६ श्लोक सकल मनोरथ सिद्धि दाता हैं।।

श्लोक

मनोजवं मारुततुज्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृषानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि।।
उल्लङ्घ्यसिन्धो सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्।।

श्रीहनुमत् वन्दना

मंगल-मूरति मारुत-नंदन। सकल-अमंगल-मूज-निकंदन।।१।।
पवन-तनय संतन-हितकारी। हृदय विराजत अवध-विहारी।।२।।
मातु-पिता, गुरु गनपति, सारद। सिवा-समेत संभु, सुक-नारद।।३।।
चरन बंदि विनवौं सब काहू। देहु रामपद-नेह-निबाहू।।४।।
बंदौं राम-लखन-बैदेही। जे तुलसी के परम सनेही।।५।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गुरु स्तुति

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्त्तिम, द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं, तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतम्, भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरुं तं नमामि।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम्। मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरुकृपा।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्रीगुरुदेव-स्तोत्रम्

श्रीगुरुदेवं नौमि तमेवं, गतमदमानं रहितविकारम्।
नित्यं ज्ञेयं, नित्यं ध्येयं, नित्यं गेयं ज्ञानाधारम्।।१।।
ब्रह्मविधानं शीलनिधानं, धृतगुणमानं परमोदारम्।
निग्रहनिष्ठं बुद्धिवरिष्ठं, भावजविष्ठं सहितविचारम्।।२।।
अशरशरणं संशयहरणं, लोकाभरणं जगदाधारम्।
मंगलकरणं मंगलचरणं, मंगलभरणं मंगलसारम्।।३।।
अधदलकदनं कुसुमितवदनं, शोभासदनं निरहंकारम्।
ज्ञानासक्तं ध्यानारक्तं, सर्वविरक्तं शुद्धाचारम्।।४।।
अतिमृदुहासं वाणिविलासं, दिनमणिभासं बहुहितकारम्।
विनयावनतो परम विनीतो, नौमि सदाऽहं गुरुपदचारम्।।५।।

श्रीमद्भागवत मङ्गलाचरण

ॐ नमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दाय भक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय।।
विश्वसर्गविसर्गादिनवलक्षणलक्षितम्। श्री कृष्णाख्यं परं धाम जगद्धाम नमामितत्।।
नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्क मरुद्गणेभ्यः।।
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
श्रीलक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम्। अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्।।
यो नित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्मव्यामोहतस्तदितराणि तृणायमेने।
अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धो रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये।।
सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्त्पत्यादिहेतवे। तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्। सुग्रीवं वायुसूनुञ्च प्रणमामि पुनः पुनः।।
कान्तिः सिताऽऽमृशति निन्दितशारदेन्दु, यंत्रैकतो विलसितामसिताङ्गशोभाम्।
वृन्दावनेऽपि कृतयामुनगाङ्गसङ्ग, राधामुकुन्दयुगलं तदहं नमामि।।
अस्ति स्वस्तरुणीकराग्रविगलतकल्पप्रसूनाप्लुतं, वस्तुप्रस्तुतवेणुनादलहरीनिर्वाणनिर्व्याकुलम्।
स्रस्तस्त्रस्तनिवद्धनीविविलसद्गोपीसहस्रावृतं, हस्तन्यस्तनतापवर्गमखिलोदारंकिशोराकृतिः।।
यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं, द्वैपायनोविरहकातर आजुहाव।
पुत्रेतितन्मयतया तरवोऽभिनेदुः, सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि।।
योऽन्तः प्रविश्य ममवाचमिमां प्रसुप्तां, संजीवयत्यखिल शक्तिधरः स्वधाम्ना।
अन्यांश्चं हस्तचरणश्रवणत्वगादीन्, प्राणान्नमो भगवते पुरुषायतुभ्यं।।
अखिलभुवनजन्मस्थेमभङ्गादिलीले, विनतविविधभूतव्रातरक्षैकदीक्षे।
श्रुति शिरसि विदीप्ते ब्रह्मणि श्रीनिवासे, भवतु मम परस्मिन् सेमुषी भक्तिरूपा।।
वासनात् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्। सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेवनमोऽस्तुते।।
नमोऽस्तुते व्यास विशालवुद्धे फुल्लारविन्दायत पत्रनेत्रम्।
येन त्वया भारत तैल पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।
वंशीविभूषितकरान् नवनीरदाभात्, पीताम्वरादरुणविम्वफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्, कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने।।
कृष्ण त्वदीय पदपंकज पंजरान्ते, अद्यैव मे विशतु मानस राजहंस।
प्राण प्रयाण समये कफवात-पित्तैः, कण्ठावरोधन विधौ स्मरणं कुतस्ते।।
कृष्णं नारायणं वन्दे कृष्णं वन्दे व्रजस्त्रियम। कृष्ण द्वैपायनं वन्दे कृष्णं वन्दे पृथासुतम्।।

श्री व्यास वन्दना

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे। नमो वै ब्रह्मविधये वासिष्ठाय नमो नमः।।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विवाहुरपरो हरिः। अभाललोचनः शंभुर्भगवान् वादरायणः।
नमोऽस्तु ते व्यास विशालवुद्धे फुल्लारविन्दायत पत्रनेत्रम्।
येन त्वया भारत तैल पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।

श्री शुकदेव वन्दना

योगीन्द्राय नमस्तस्मै शुकाय ब्रह्मरूपिणे। संसारसर्पदष्टं यो विष्णुरातममूमुचत्।।
व्यासं वशिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्। पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्।
यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं, द्वैपायनोविरहकातर आजुहाव।
पुत्रेतितन्मयतया तरवोऽभिनेदुः, सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीकृष्ण स्तुति

श्रीकृष्णचन्द्र कृपाल भज मन, नन्दनन्दनसुन्दरम्।
अशरणशरण भवभयहरण, आनन्दघन राधावरम्।।१।।
शिरमोरमुकुट विचित्रमणिमय, मकरकुण्डलधारिणम्।
मुखचन्द्रद्युति नखचन्द्रद्युति पुष्पितनिकुञ्जविहारिणम्।।२।।
मुसुकानि मुनिमनमोहिनी, चितवनिचपल वपुनटवरम्।
वनमाललिलित कपोलमृदु, अधरनमधुर मुरलीधरम्।।३।।
वृषभानुनन्दिनि वामदिशि, शोभितसुमन सिंहासनम्।
ललितादिसखिजन सेवहीं, करि चँवर छत्र उपासनम्।।४।।
इति वदति कवि "जयरामदेव" महेशहृदयानन्दनम्।
दीजै दरश प्रियप्राणधन मम, विरह कंशनिकन्दनम्।।५।।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण एवं श्रीरामचरितमानस मङ्गलाचरण

श्रीरामः शरणं समस्तजगतां रामं विना का गतिः, रामेण प्रतिहन्यते कलिमलं रामाय कार्यं नमः। रामात्त्रस्यति
कालभीमभुजगो रामस्य सर्वं वसे, रामे भक्तिरखण्डिता भवतु मे राम त्वमेवाश्रयः।।
कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानाम्, पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपद प्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्राम स्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानाम्, बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये राम नाम।।
आपदामपहर्तारं दातारं सुखसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम्। पाणौमहासायकचारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।
नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्क मरुद्गणेभ्यः।।
रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्। सुग्रीवं वायुसूनुञ्च प्रणमामि पुनः पुनः।।
श्रीलक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम्। अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्।।
यो नित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्मब्यामोहतस्तदितराणि तृणायमेने।
अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धो रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये।।
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।
वन्दे विदेहतनयापदपुण्डरीकं, कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम्।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं, सन्मानशालिपरिपीतपरागपुञ्जम्।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उल्लङ्घ्यसिन्धो सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्।।
तत्रैव गंङ्गा यमुना च वेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतो दार कथा प्रसङ्गः।।
राजिव नयन धरें धनु सायक। भगत विपति भंजन सुखदायक।
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी।।
जनक सुता जगजननि जानकी। अतिशय प्रिय करुणानिधान की।
ताके जुगपद कमल मनावउं। जासु कृपा निरमल मति पावउं।।
महाबीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना।।
सियाराममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।
प्रनवउँ पवनकुमार, खलवन पावक ज्ञान धन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शर चाप धर।।
कुन्द इन्दु सम देह, उमा रमन करुना अयन।।
जाहि दीन पर नेह, करउँ कृपा मर्दन मयन।।
तुलसी कृत रामायण कथा करौं अनुसार।
आय सुआसन लीजिये सुमिरौं पवन कुमार।।

श्लोक

वाञ्छा कल्पतरूभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

श्री राम चन्द्र कृपालु

श्रीरामचन्द्र, कृपालु भज मन, हरण भव भय दारुणम्।
नव कंज लोचन, कंज मुख, कर-कंज पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित, अमित छवि, नवनील नीरद सुंदरम्।
पट पीत मानहु, तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम्।।१।।
भज दीन बन्धु, दिनेश दानव, दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंद, कंद कौशल, चंद दशरथ नंदनम्।।
सिर मुकुट कुंडल, तिलक चारु, उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम्।।
इति बदति 'तुलसीदास' शंकर शेष-मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जय जय देव हरे

श्रितकमलामुखमण्डल धृतकुण्डल ए ! कलितललितवनमाल, जय जय देव हरे !।।१।।

दिनमणिमण्डल मण्डन भवखण्डन ए ! मुनिजनमानसहंस, जय जय देव हरे !।।२।।

कालियविषधरगंजनजंनरंजन ए ! यदुकुलनलिनदिनेश, जय जय देव हरे !।।३।।

मधु-मुर-नरक-विनाशन गरुड़ासन ए ! सुरकुलकेलिनिदान, जय जय देव हरे ! ।।४।।

अमलकमलदललोचनभवमोचन हे ! त्रिभुवन भवन निधान, जय जय देव हरे !।।५।।

जनकसुताकृतभूषण, जितदूषण हे ! समरशमितदशकण्ठ, जय जय देव हरे ! ।।६।।

अभिनवजलधरसुन्दर, धृतमन्दिर है ! श्रीमुखचन्द्रचकोर, जय जय देव हरे !।।७।।

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय हे ! कुरु कुशलं प्रणतेषु, जय जय देव हरे !।।८।।

श्री जयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ! मडग्मुज्ज्वलगीत, जय जय देव हरे ! ।।९।।

"धुनें"

१ गोविन्द गोविन्द गाइये रे, भजो राधे गोपाल कृष्ण गाइये रे।
मुरली मनोहर गाइये रे, बोलो नंद के लाल प्यारे गाइये रे।
गिरधारी गिरधारी गाइये रे, माई मीरा के नाथ प्रभु गाइये रे।।

२ जय जय श्रीकृष्णचन्द्र नन्द के दुलारे, नन्द के दुलारे बाबा नन्द के दुलारे।
नन्द के दुलारे यशोदा के प्यारे, नन्द के दुलारे संतन रखवारे।। जय जय..

३ राम कृष्ण हरि मुकुन्द मुरारि, पांडुरंग पांडुरंग पांडुरंग हरि।

४ राधा राधा कृष्ण राधा, राधा राधा कृष्ण राधा।

५ गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो, राधा रमन हरि गोविन्द बोलो।

६ मेरे सिर पर हाथ रखों राधे रानी, चरण कमल के पास रखो राधे रानी।
भव सागर से पार कर दो राधे रानी, वृन्दावन का बास दे दो राधे रानी।।

७ भजो गोविन्द गोपाल गिरधारी, भजो मुकुन्द माधव मुरारी।
गिरधारी हो वनवारी, गिरधारी हो वेणुधारी।। भजो गोविन्द...

८ केशव माधवा हे देवा मधु सूदन

९ गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है, श्रीबाँके विहारी नन्दलाल मेरो है।।

१० हमारो धन राधा श्रीराधा श्रीराधा, परम धन राधा राधा राधा राधा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सद्गुरु से प्रार्थना

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूँ अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिये।।
खा रहा गोते हूँ मैं, भवसिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न इस संसार में।।१।।
मुझमें है जब तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है।।२।।
पाप बोझे से लदी नैया भंवर में आ रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ, जल्द डूबी जा रही।।३।।
सब जगह मंजिल भटक कर ली शरण अब आपकी।
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं।।४।।
आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
पार करना या न करना दोनो मर्जी आपकी।।५।।

सद्गुरु प्रार्थना

गुरु देव दया करके मुझको अपना लेना। मै शरण पड़ा तेरी चरणो में जगह देना।।
करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखला जायो। सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगा जाओ।।
मेरी नाव भंवर डोले, इसे पार लगा देना। गुरु देव दया.....
तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो। इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माला जपूँ तेरी, नहीं दिल से भुला देना।। गुरु देव दया......
पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ। घरवार छोड़कर मैं, जीवन से खेला हूँ।
दुख का मारा हूँ मैं, मेरे दुखड़े मिटा देना।। गुरु देव दया......
मैं सबका सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेला हूँ। नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूँ।
तेरे दर का पुजारी हूँ मेरे दोष मिटा देना।। गुरु देव दया......

प्रभु हम भी शरणागत

प्रभु हम भी शरणागत हैं, स्वीकार करो तो जानें।
अब हमें पतित से पावन, सरकार करो तो जानें।।
प्रेमीजन तुमको पाते, तुम भक्तिभाव वश आते।
हम कुटिल हृदय के कलुषित, निस्तार करो तो जानें।।
ज्ञानी तुममें तन्मय हैं, ध्यानी भी तुममें लय हैं।
हम अज्ञानी चंचलचित्त, उपचार करो तो जानें।।
क्या मुख ले विनय सुनायें, हम कैसे तुमको भाये।
अगणित अपराध किये हैं, उद्धार करो तो जानें।।
जीवन नैया जर्जर है, क्षण-क्षण बिनाश का डर है।
ऐसे भी एक 'पथिक' को, अब पार करो तो जानें।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वह शक्ति हमें दो दयानिधे

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर-सेवा पर-उपकार से हम, निज जीवन सफल बना जावें।।

हम दीन-दुःखी निबलों विकलों के, सेवक बन संताप रहें।
जो हैं पथ में भूले भटके, उनको तारें, खुद तर जावें।।

निज आन-मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे, अभिमान हरें।
जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।।

छल-कपट द्वेष अन्याय दम्भ, अभिमान से निश दिन दूर रहें।
जीवन हो शान्त सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा-रस बरसावें।।

श्रीमद्भागवत माहात्म्य प्रसंग में आये हुऐ भजन

श्रीमन्नारायण

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण। लक्ष्मीनारायण लक्ष्मीनारायण।
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्।

मिलती है साधुओं की

मिलती है साधुओ की संगत कभी कभी। चढ़ती है मन पे नाम की रंगत कभी कभी।। टेक।।
बन्दे को रहना चाहिए बुराई से दूर ही, ले डूबती है पल में कुसंगत कभी कभी।
इज्जत को पाके भूलना ना तुझको चाहिए, देकर के हीनता ओ इज्जत कभी कभी।।
कुछ अमर ज्ञान सोच ले परलोक के लिए, मिलती है जिन्दगी में फुरसत कभी कभी।।

सन्तन के संग

सन्तन के संग लाग रेऽऽऽ तेरी अच्छी बनेगी।
सन्तन के संग पूर्ण कमाई। होय तेरो बड़ भाग रे।।१।। तेरी०
मोह निशा में बहु तक सोयो। जाग सके तो जाग रे ।।२।। तेरी०
सुत वित नारि ईषणा तीनी। त्याग सके तो त्याग रे।।३।। तेरी०
सदगुरु कहें परमपद लइहौ। राम भजन में लाग रे।।४।। तेरी०

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कहाँ जा छिपे हो

कहाँ जा छिपे हो प्यारे कन्हैया, यहाँ लाज मेरी लुटी जा रही है।
दुःशासन के हाथों तेरी द्रौपदी की, सभा बीच सारी खिंची जा रही है।। टेक।।
जिन्होंने कभी मेरे तन को ना देखा, वो देखेंगे नंगा बदन आज मेरा।
जुआँ आज पाँचों पति मेरे हारे, महलों की रानी लुटी जा रही है।।
गुरु द्रोण बोलो, पितामह जी बोलो, तुमसे तुम्हारी वधू पूँछती है।
मुझे नग्न करवा रहे हो सभा में, तुम्हारी जुबाँ क्यों घिसी जा रही है।।
खींचा चीर जब दुःशासन भी हारा, समझी थी भगवन् इशारा तुम्हारा।
साड़ी के हर तार में तुम छिपे हो, इसी से यह साड़ी बढ़ी जा रही है।।

हे गोविन्द मुरारी

हे गोविन्द मुरारी, हे गोविन्द मुरारी।
युग-युग से प्यासे हैं नयना, दर्शन दो बनवारी।।टेक।।
हे मनमोहन कृष्ण कन्हैया, जग नैया के तुम ही खेवैया।
सबके तुम ही एक सहारा, आजा कुंज बिहारी।।
मधुर-मधुर अब मुरली सुना दे, तन-मन की सब तपन बुझा दे।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मिटा दे, हर ले विपदा भारी।।
दीन बन्धु तुम सबके दाता, जीव-जीव से तेरा नाता।
हम सब आये शरण तिहारी, तेरी महिमा भारी, हे गोविन्द मुरारी।।

श्री कृष्णा गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।

पा पकरे प्रभु जी मिले, पा पकरे सुख सुख होय।
पा पकरे मुक्ति मिले, पा पकरे सब कोय।।

आजा नन्द लाल तरस रहे नैना। तेरे दरस बिन मिले नहिं चैना।।
आजा मेरे श्याम तरस रहे नैना। तेरे दरस बिन मिले नहिं चैना।।
मेरो प्यारो नन्दलाल किशोरी राधे। मेरी श्यामा राधे मेरी प्यारी राधे।
किशोरी राधे हे किशोरी राधे। मेरी श्यामा राधे मेरी प्यारी राधे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री मद्भागवत प्रथम स्कन्ध के भजन

क्या कह रही है

क्या कह रही है सन्तों की वाणी, सुन गौर से तू ऐ भोले प्राणी।। टेक।।
पल-पल करके उमर तेरी जाती, कई यत्नों से वापिस न आती।
वापस है मुश्किल दुबारा ये आनी।। सुन गौर से।।
नर तन पाके भजन न कमाया, कौड़ियों के बदले लाल गँवाया।
कैसे सहोगे ये बड़ी हानी।। सुन गौर से।।
उन्होंने हमेशा सफलता है पायी, सन्तों की बाणी मन में बसायी।
होगी सब उनकी दूर परेशानी।।सुन गौर से।।
गर अब न चेतयो तो होगी बड़ी मुशिकल, क्यों कि बहुत दूर है तेरी मन्जिल।
साँसों की तूने कदर न जानी।। सुन गौर से।।

किसी के काम जो आए

किसी के काम जो आए, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं।।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में ना घबराये, उसे इन्सान कहते हैं।।१।।
ये दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हसँ के जीता है, कोई जीता है रो रोकर।
जो गिर कर फिर संभल जाए, उसे इन्सान कहते हैं।।२।।
अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताये, उसे इन्सान कहते हैं।।३।।
अकेले ही जो खा-खाकर, सदा गुजरान करते हैं।।
यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
'पथिक' जो बाँट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है, श्री बाँके बिहारी नन्दलाल मेरो है

नन्दलाल सँवरिया मेरे

नन्दलाल सँवरिया मेरें, मेरा कोई न सहारा बिन तेरे।। टेक।।
तुम भक्तन के हितकारी, मैं आया शरण तिहारी।
काटो जनम मरण के फेरे, मेरा कोई न सहारा बिन तेरे।।१।।

मेरी डोले भँवर में नइया, प्रभु बन जावो आप खेवैया।
मेरे तुम ही सांझ-सबेरे, मेरा कोई न सहारा बिन तेरे।।२।।

तुम युग युग अन्तरयामी, अज्ञान भरे हम प्रानी।
किये दिल के दूर अँधेरे, मेरा कोई न सहारा बिन तेरे ।।३।।

हम अधम जीव अभिमानी, महिमा तुम्हरी नहिं जानी
किये जग में पाप घनेरे, मेरा कोई न सहारा बिन तेरे।।४।।

कृष्ण कृष्ण मैं पुकारूँ

कृष्ण कृष्ण मैं पुकारूँ, तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया है, गोविन्द राधे श्याम ने।। टेक।।

मुरली वाले अपनी मुरली, फिर सुना जा आन के।
तेरी चर्चा हम करेंगे, तेरे दर के सामने।।१।।
खाम्भे से प्रह्लाद को, आन बचाया आपने।
द्रौपदी की लाज राखी, कौरव दल के सामने।।२।।

एक यही इच्छा मेरी, पा सकूँ श्री श्याम को।
इस लिये धूनी रमाई, तेरे दर के सामने।।३।।

कृष्णा दासी जन्म जन्म की, दरश दिखा जा आन के।
शरण में तेरे पड़े हैं, तेरे दर के सामने।।४।।

राम कृष्ण हरि मुकुन्द मुरारी। पांडुरंग पांडुरंग पांडुरंग हरि।
राम कृष्ण हरी जय जय राम कृष्ण हरि।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आपा हरिगुण गावा

चालो रे, भाइडा आपा हरिगुण गावा। कलियुग में सतयुग लावा।। आपा...।टेक।।
रुठे भाई-बन्धु चाहे, रुठे जग सारो, एक नहीं रूठे भाया प्रभुजी हमारे।
जाकी दयासू भव तिर जावा।। आपा...।।१।।
आड़ोसी पड़ोसीने भी संग लेता चालोजी, बैरी भी होवे तो भाया गले से लगालो जी।
हिलमिल चालो घणो सुख पावा।। आपा...।।२।।
निंदड़ली फिरेली आड़ी, करेली बिगाड़ो। सुख सारा हेला मारे, पाछा ये पधारों।
पाछा फिर्‌यासू घणा पछतावा।।आपा।।३।।
गली तो गली में रामधुन लग जावे, देखा फेरु कईया, सतयुग नहीं आवे।
इस जगत में ना फिर आवा।। आपा...।।४।।

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे, त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे।

हे नाथ

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये।
ये मन न जाने क्या-क्या कराये, कुछ बन न पाया मेरे बनाये।।
संसार में ही आसक्त रहकर, दिनरात अपने मतलब की कहकर।
सुख के लिये लाखों दुख सहकर, ये दिन अभी तक यूँ ही बिताये।।
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ, अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ, संसार का कुछ भय रह न जाये।।
वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ, अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ।
नर तन है साधन भवसिन्धु तर लूँ, ऐसा समय फिर आये न आये।।
हे प्रभु हमें निरभिमानी बना दो, दारिद्र्य हर लो दानी बना दो।
आनन्दमय विज्ञानी बना दो, मैं हूँ 'पथिक' यह आशा लगाये।।

आनन्द ही आनन्द

आनन्द ही आनन्द बरस रह्यो, बलिहारी ऐसे सद्‌गुरु की।।
बड़े भाग्य हमारे आज हुये, शुभ दर्शन ऐसे सद्‌गरु के।।
पावन कीन्हीं भारतभूमि, बलिहारी ऐसे सद्‌गुरु कीं।।१।।
व्याख्यान छटा जिमि इन्द्र घटा, बरसत वाणी अमृत धारा।
यह मधुरी मधुरी अजब ध्वनि, बलिहारी ऐसे सद्‌गुरु की।।२।।
क्या रूप अनुपम पायो है, सोहे जिमि तारा बिच चन्दा।
सूरत मूरत मोहन कारी, बलहारी ऐसे सद्‌गुरु की।।३।।
करुणामय हंसों का कहना, मरुधर में मेरा रहना है।
गुरु चरणों में चित खो देना, बलिहारी ऐसे सद्‌गुरु की।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

द्वितीय स्कन्ध

मै नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं यह, तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह सब किसी का है दिया।। टेक।।
देनेवाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
मेरा है यह लेनेवाला, कह उठा अभिमान से।
मैं मेरा यह कहनेवाला, मन किसी का है दिया।।१।। मैं नहीं।।
जो मिला है वो हमेशा, पास रह सकता नही।
कब बिछुड जाए ये कोई, राज कह सकता नहीं।
जिंदगानी का खिला, मधुबन किसी का है दिया।।२।। मैं नहीं।।
जग की सेवा खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिए।
जिंदगी का राज है यह, जानकर जी लजिए।
साधना की राहपर, साधन किसी का है दिया।।३।। मैं नहीं।।

दान विहीन रहे

दान विहीन रहे कर ये, कान सुनी नहिं, श्याम कहानी।
लोचन संत लखे नहिं ताहि, तीर्थन पैर गये न गुमानी।।
पापके वित्तसे पेट भरो, नित शीष झुको न, रह्यो अभिमानी।
रे-रे जम्बुक त्याग अरे, अति निन्दित नीच, रह्यो ये प्राणी।।

अव सौंप दिया

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भरका, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
जो जग में रहूँतो ऐसे रहूँ, ज्यो जल में कमल का फूल रहे।
मेरे गुण और दोष समर्पित हो, भगवान तुम्हारे हाथों में।।
यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूँ
इस पूजक की एक-एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।
जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, निराकार तुम्हारे हाथों में।।
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तृतीय स्कन्ध

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।। टेक।।
दुर्योधन को मेवा त्याग्यों, साग बिदुर घर खाई। सबसे. ऊँची प्रेम सगाई।।
झूठे फल शबरी के खाये, प्रेम विवस रघुराई। सबसे ऊँची प्रेम सगाई।।
प्रेम के बस अर्जुन रथ हाँक्यों, भूल गए यदुराई। सबसे ऊँची प्रेम सगाई।।
ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई। सबसे ऊँची प्रेम सगाई।।
"सूर" क्रूर इस लायक नाहीं केहि लग करे बढ़ाई।। सबसे ऊँची प्रेम सगाई।।

आज हरि आये

आज हरि आये विदुर घर पाहुना।।
विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देखे साँरग पानी।
फूली नहीं समानी चिन्ता, प्रभु को कहा जिमावना ।। आज०।।
बड़े प्रेम से केला लाई, गिरी-गिरी सब देत गिराई,
छिल्का देत श्याम मुख माहीं, लागै परम सुहावना ।। आज०।।
इतने माहि विदुर जी आये, खारे खोटे बचन सुनाये,
छिल्का प्रभु को छील खवाये, कहाँ गवाई भावना ।। आज०।।
केला लिए बिदुर कर माही, गिरी देत गिरिवर मुख माहीं,
कहें कृष्ण जी सुनो विदुर जी, वैसो स्वाद ना आवना ।। आज०।।
वासे कूसे रूखे सूखे, हम तो विदुर जी भाव के भूखे।
प्रेम सखी धनि-धनि विदुरानी, जीवन सुफल बनावना।। आज०।।
दोहाः- चार मिले चौंसठ खिले, बीस रहे कर जोड़।
हरि जन सो जन मिले, विहँसे सात करोड़।।

कैसी प्रभु तूने कायनाथ बांधी

कैसी प्रभु तूने कायनात बांधी, एक दिन के पीछे एक रात बांधी साथ-साथ बांधी।।
कभी थकते नहीं हैं ये घोड़े, तूने सूरज के रथ में जो जोड़े।
रजनी ब्याहने चला चांद दूल्हा बना, साथ चन्द्रमा के तारों की बारात बांधी।।
कैसी खूबी से बांधे ये मौसम, वर्षा सर्दी हेमन्त और ग्रीष्म।
ये बहार का शमा और ये पतझड़ खिजां, हवा बादलों के बीच बरसात बांधी..
पक्षी जलचर व जन्तु चौपाये, तूने सबके हैं जोड़े बनाये।
नाग और नागनी राग और रागनी, साथ स्त्री और पुरुष की भी जात बांधी..
तू ही सबका पिता तू ही मात है, जो समझ में न आये तू वो बात है।
तेरी क्या बात है सौ की एक बात है, तूने हर बात में है कोई बात बांधी...
नत्था सिंह हैं अनन्त तेरी माया, जग के कण-कण में तू है समाया।
जग से बाहर नहीं फिर भी जाहिर नहीं, अपने दामन में ऐसी करामात बांधी..

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हर देश में तू

हर देश में तू हर वेश में तू, तेरे नाम अनेक तू एक ही है।।
तेरी रंगभूमि यह विश्व भरा, हर खेल में मेले में तू ही तू है।टेक।।
सागर से उठा बादल बनकर, बादल से फूटा जल होकर।।
कहीं नहर बना नदियाँ गहरी, तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।१।।
मिटी से अणु-परमाणु बना, इस दिव्य जगत का रूप लिया।।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना, सौंदर्य तेरा तू एक ही है।।२।।
यह दृश्य दिखाया है जिसने, वह है गुरुदव की पूर्ण दया।।
तुकाराम कहे और तो कोई नही, बस तू और मैं सब एक ही है।।३।।

न ये तेरा न ये मेरा

न ये तेरा न ये मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का।। टेक।।
हम सब खेल खिलौने उसके, खेल रहा करतार रे।
उसकी ज्योति सब में चमके, सब में उसका प्यार रे।।
मन मन्दिर में दर्शन कर ले, उन प्राणों के प्राण का।। न ये तेरा।।
तीरथ जाए मन मन्दिर जाए, अगणित देव मनाए रे।
दीन रूप में राम सामने, देख के नैन फिराए रे।।
मन की आंखें खुल जायें तो, क्या करना है ज्ञान का।। न ये तेरा।।
कौन है ऊँचा कौन है नीचा, सब है एक समान रे।
प्रेम की जोत जगा हिरदय में, सब में प्रभु पहचान रे।।
सरल हृदय को 'शरण' में राखे, हरि भोले नादान रे।। न ये तेरा।।

संसार के लोगो से

संसार के लोगों से, आशा ना किया करना।
जब कोई ना हो अपना, सियाराम कहा करना।। टेक।।
जीवन के समुन्दर में, तूफान भी आते हैं।
जो उनको भजते हैं, प्रभु आप बचाते हैं।
वे आप ही आयेंगे, तुम याद किया करना ।। जब कोई०।।
मत भूल अरे बन्दे, यह देश बेगाना है।
इस दुनियाँ में आकर, वापस भी जाना है।
माया के चक्कर से, दिन-रात बचा करना ।। जब कोई०।।
यह सोच अरे बन्दे, प्रभु तुझसे दूर नहीं,
जब कष्ट हों भक्तों पर, प्रभु को मंजूर नहीं,
भगवान को आता है, भक्तों पे दया करना ।। जब कोई०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हरदम तू तैयार है

हरदम तू तैयार है, पाप कमाने के लिए।
कुछ तो समय निकाल, हरि गुण गाने के लिए ।। हरदम०।।
जब तक तेल दिया में बाती, जगमग-जगमग हो रहा।
मुक गया तेल निबट गई बाती, ले चल ले चल हो रहा।
चार जने मिल जाते हैं, ले जाने के लिए ।। कुछ०।।
गर्भवास में कौल किया था नाम जपूँगा मैं तेरा।
इस झूठी दुनिया में आकर, नाम भूल गया तू मेरा।
ऋषि मुनी तब आते हैं, समझाने के लिए ।। कुछ०।।
हाड़ जले जैसे सूखी लकड़ी, केस जले जैसे घास रे।
कंचन जैसी काया जल गई कोई ना आया पास रे।
अपने-पराये होते हैं दिखलाने के लिए ।। कुछ०।।

क्या हाल कहूँ

क्या हाल कहूँ अपने घर का, सुख तो है लेकिन चैन नहीं।। टेक।।
घर में बहुयें बच्चे हैं, नौकर भी अच्छे-अच्छे हैं।
मौजों के भरे समुन्दर में, सुख तो है लेकिन चैन नहीं।।
भोजन भी अच्छे मिलते हैं, बिजली के पंखे चलते हैं।
टी. वी. फ्रिज और थरमस में, सुख तो है लेकिन चैन नहीं।।
है नशा चढ़ा बढ़ते मन का, इतने पर मान बड़प्पन का।
इस माया वाले दफतर में, सुख तो है लेकिन चैन नहीं।।
मिलने साले नित आते हैं, ऊपर से सुयश सुनाते हैं।
उन मित्रों के मिलने पर भी, सुख तो है लेकिन चैन नहीं।।
जब नहीं सबर सन्तोष हुआ, तब खोज रहे भगवान कहाँ।
बिना सद्गुरु नहिं ज्ञान मिलै, सुख तो है लेकिन चैन नहीं।।

दयालु रमद स्पर्शः उपकारी जितेन्द्रियः ।
एतैश्च पुण्य स्तम्भैश्च चतुर्भि र्धायते मही।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चतुर्थ स्कन्ध

माता अनुसुइया ने डार दियो पालना, झूल रहे तीनों देव बनकर के लालना।। टेक।।
मारे खुशी के मइया फूली न समाती है, गोदी में लेती कभी पालना सुलाती है।
आज उसके भाग्य की कौन करै सराहना।। माता अनुसुइया ने।।
स्वर्ग लोक छोड़ मृत्यु लोक में सिधारे हैं, ऋषियों की कुटिया में रहने को पधारे हैं।
पूर्ण कीन्हीं भक्तन की तीनों देव कामना।। माता अनुसुइया ने।।
आज मेरे घर आये देने को बड़ाई हैं, भोले भगवान आज सब चतुराई हैं।।
पतिव्रता देवियों से आज पड़ा सामना।। माता अनुसुइया ने।।

भगवान के सच्चे भक्तो को

भगवान के सच्चे भक्तों को, पग पग पै सहारा मिलता है।
जिस ओर बढ़े जिस ओर चलें, उस ओर सहारा मिलता है।।
जीवन में अगर तूफान उठे, लहरों में नैया फँस जाये।
यदि राम नाम का सम्बल हो, तो सहज किनारा मिलता है।।
जब धन जन बल ना साथी हो, दुश्मन सारा संसार बने।
जब सब द्वारे हो जायें बन्द, तब प्रभू का द्वारा खुलता है।।
प्रहलाद सरिस तुम निश्चल हो, शबरी की तरह गर व्याकुल हो।
हो ध्रुव सा दृढ़ निश्चय वाला, तब कृष्ण प्यारा मिलता है।।

दीन दयाल सुने

दीन दयाल सुने जब ते, तब ते जिय में कछु ऐसी बसी है।
तेरो कहा एक जाऊँ कहाँ, प्रभू तेरी ही नाम की फेंट कसी है।
तेरो ही आसरौ एक जो मोय, नहीं प्रभू सौ कोई दूजौ यसी है।
ऐ हो मुरारि पुकार कहूँ, यामें मेरी हंसी नहीं, तेरी हंसी है।

जय जय श्यामाऽऽ जय जय श्याऽऽम, जय जय श्रीऽऽ वृन्दावन धाऽऽम।
जय जय राधेऽऽ जय जय श्याऽऽम, जय जय श्रीऽऽ वृन्दावन धाऽऽम।
पावन राऽऽधा सुन्दर श्याऽऽम, राधेऽऽ राधेऽऽ राधेऽऽ मंगलनाम।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पंचम स्कन्ध

रामजीरो नाव म्हने

रामजीरो नाव म्हने, मीठो घणो लागे रे।।टेर।।
रामजीरा मूँग चावल, रामजीरी बाजरी। रामजीरो घरको धंधो, रामजीरी हाजरी।
रामजीरी परसादीसु, पाप सारा भागे रे।।१।।
भाई-बंधु टाबर टोली, रामजीरा छोकरा। माय-बाप, दादा-दादी, रामजीरा डोकरा।
सगळा मिलकर रेवा म्हे तो, रामजीरा सागेरे।।२।।
रामजीरा हेली नोहरा, रामजीरा झूँपडा। रामजीरा खेतामाही, रामजीरा रुँखडा।
रामजी है पाछे म्हारा, रामजी है आगे रे।।३।।
रामजीरी घरकी कुंजी, रामजी लगावणिया। रामजीरो लेणो देणो, रामजी चुकावणिया।
शरणागतरी सारी चिंता, रामजीने लागे रे।।४।।
रामजीरी लीला गावा, रामजीरी कीरती। बोले चाले दीखे सोही, रामजीरी मूरती।
रामजीरा संत आया, भाग म्हारा जाग्या रे।

कुछ लेना न देना मगन रहना

कुछ देना न लेना मगन रहना।
पाँच तत्व का बना पींजरा, तांमे बोले है मेरी मयना।।
गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिया से मिले रहना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सद्गुरु के चरणों में लिपट रहना।।

सीताराम, सीताराम

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये। जाही विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में। तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिये। जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये।।

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा। होगा वही प्यारे जो श्रीराम जी को भायेगा।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये। जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये।।

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के। महलों में राखे चाहे झोंपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये। जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये।।

आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे। नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे।
साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये। काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये।।
सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये। जाही विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

षष्ठ स्कन्ध

मेरे दाता

मेरे दाता के दरबार में है, सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।
क्या साधु क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी।
बड़े-बड़े वो जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता।। मेरे।।
नही चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
उसकी लेनदेन की बन्दे, रीति बड़ी है बांकी।
पुण्य का बेड़ा पार करे वो, पाप की नाव डुबाता।। मेरे।।
बड़े-बड़े कानून प्रभु के, बड़ी-बड़ी मर्यादा।
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, किसी को कौड़ी ज्यादा।
इसीलिये तो इस दुनियाँ का, नगर सेठ कहलाता।। मेरे।।
करता वही हिसाब सभी का, एक आसन पे डटके।
उसका फैसला कभी न बदले, लाख कोई सर पटके।
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता है।। मेरे।।
उजली करनी कर ले बन्दे, कर्म न करियों काला।
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
उसकी तेज नजर से बन्दे, कोई नहीं बच पाता।। मेरे।।

राम नाम के हीरे मोती

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली-गली।।
लूट लो जिसका जी चाहे, मैं शोर मचाऊं गली-गली।
जिस जिसने ये हीरे लूटे, वो तो मालामाल हुए।
धन दौलत के जो बने दीवाने, एक दिन वो कंगाल हुए।।
राम कृष्ण और गौतम के, इतिहास सुनाऊँ गली-गली।। राम नाम के।।
दौलत के दीवाने सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा।
धन यौवन और रूप खजाना, यहीं धरा रह जायेगा।।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।। राम नाम के।।
मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी, एक दिन तुझे भुलाएंगे।
जिनको तू अपना कहता है, अग्नि पर तुझे सुलाएंगे।।
जगत सराय दो दिन की है, आखिर होगी चला चली।। राम नाम के।।
जिनको अपना कहकर बन्दे, तू इतना इतराता है।
छोड़ेंगे ये सब बिपत्ति में, कोई साथ न जाता है।।
दो दिन का यह चमन खिला है, मुरझायेंगी कली कली।। राम नाम के।।
झूठें धन्धे छोड़ दे बन्दे, जप ले हरि के नाम को।
क्यों करता है तेरी मेरी, छोड़ दे झूठे काम को।।
तुझे समय यह फिर न मिलेगा, पछताऐगा तली तली।। राम नाम के।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सप्तम स्कन्ध

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है, पल-पल, छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
यदि बैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अधेंरा हो।
पर चित न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे अग्नि मे मुझे जलना हो, चाहे काटों पर भी चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों मे।।
मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।।

राम रस रात दिना बरसे

राम रस रात दिना बरसे, रे मन चातक क्यों तरसे।। टेक।।
बूँद-बूँद से कृपा हरी की, बरसे अम्बर से।
क्यों तू खड़ा ओट में पगले, भीगन के डर से।।राम रस।।
काम क्रोध अरु लोभ मोह का, छत्र हटा सर से।
प्रेम वारि में भीज वावरे, भीतर बाहर से।। राम रस।।
क्यों तू डोलत फिरत अभागे, माँगत घर-घर से।
मन-मन्दिर में राम बिठा कर, क्यों ना चरण परसे।।राम रस।।

न ये तेरा न ये मेरा

न ये तेरा न ये मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का।।
हम सब खेल खिलौने उसके, खेल रहा करतार रे।
उसकी जयोति सब में चमके, सब में उसका प्यार रे।
मन मन्दिर में दर्शन कर ले, उन प्राणों के प्राण का।। न ये तेरा।।
तीरथ जाए मन्दिर जाए, अनगिन देव मनाए रे।
दीन रूप में राम सामने, देख के नैन फिराए रे।।
मन की आंखें खुल जायें तो, क्या करना है ज्ञान का ।। न ये तेरा।।
कौन है ऊँच, कौन है नीचा, सब हैं एक समान रे।
प्रेम की जोत जगा हृदय में, सब में प्रभु पहचान रे।।
सरल हृदय को 'शरण' में राखें, हरि भोले नादान रे।। न ये तेरा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री राम तुम्हारे चरणों में

श्री राम तुम्हारे चरणों में, जब प्यार किसी का हो जाये।
दो चार की फिर तो बात ही क्या, संसार उसी का हो जाये।।
ध्रुव प्रह्लाद तो बालक थे, परमेश्वर को भी प्रकट किये।
दुनियाँ का होकर क्या रहना, एक बार उसी का हो जाये।।१।।
माया के दीवानों शिक्षा लो, तुम प्रेम दिवानी मीरा से।
करे प्रेम जो मोहन प्यारे, से बेड़ा पार उसी का हो जाये।।२।।
रावण ने राम से बैर किया, अब तक भी जलाया जाता है।
बन भक्त विभीषण शरण गहे, घर द्वार उसी का हो जाये।।३।।

श्लोक

क्वेदं वपुः क्व च वयः सुकुमारमेतत् क्वेमाः प्रमत्तकृत दारुणयातनास्ते।
नालोकितं विषमेतदभूतपूर्वं क्षन्तव्यमङ्ग यदि मे समये विलम्बः।।

बोले प्रभु प्यारे प्रिय कोमल तिहारे अङ्ग असुर ने मारे मम नाम एक गाने में,
गिरि ते गिराये पुनि जल में डुबाये हाय अग्नि में जलाये कमी राखी न सतानेमें।
उर से लगाये लपटाये कहैं बार-बार करुणा सरूप बने करुण दिखाने मे,
मंजुलमुखारविन्द चूमि-चूमि कहैं प्रभु क्षमा करो पुत्र मुझे देर भई आने में।।

।। ब्रज के नन्दलाला।।

ब्रज के नन्दलाला, राधा जी के सांवरिया सब दुख दूर हुये, जब तेरा नाम लिया।। टेक।।
मीरा पुकारे तुझे, गिरधर गोपाला। ढल गया अमृत में, विष का भरा प्याला।
कौन मिटाये उसे, जिसे तूने राख लिया।। सब दुख दूर हुये।।
जब तेरे गोकुल पे, आई विपदा भारी। एक इशारे पे, टारी विपदा सारी।
मुड़गया गोवर्धन, जिसे तूने मोड़ दिया।। सब दुख दूर हुये।।
नैनों में श्याम बसे, मन में बनवारी। सुध विसराय गई, धुन मुरली की प्यारी।
मेरे मन मन्दिर में, रास रचावो रसिया।। सब दुख दूर हुये।।
देख रहे हो तुम, मेरे दुख सारे। अब दर्शन दे दो, नैनों के तारे।
अधर पे मुरली है, कांधे पे काम्बलिया।। सब दुख दूर हुये।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तेरे बिना श्याम

तेरे बिना श्याम हमारा नहीं कोई रे। हमारा नहीं कोई रे सहारा नहीं कोई रे।। टेक।।
जब से मैंने तुमको पाया, तूने मुझको गले से लगाया। तेरे जैसा मान बढ़ाया नहीं कोई रे।।
तू मुझको प्राणों से प्यारा, मैने सब कुछ तुझपर वारा। तेरे जैसा लाड़ लड़ाया नहीं कोई रे।।
तेरी सूरत लागे प्यारी, तू लीलानन्द लीला धारी। तेरे जैसा साथ निभाया नहीं कोई रे।।
घर घर तेरा नाम जपाऊँ। तेरी महिमा सबको सुनाऊँ। तेरे जैसा भाव दिखाया नहीं कोई रे।।

अष्टम स्कन्ध

हे गोविन्द हे गोपाल

हे गोविन्द हे गोपाल अब तो जीवन हारे, हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे.....
नीर पीवन हेतु गयो सिंधु के किनारे, सिंधु बीच बसत ग्राह चरन गाहि पछारे।। हे गोविन्द.
चार प्रहर युद्ध भयो लइ गयो मझधारे, नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारे।। हे गोविन्द.
द्वारिका में शब्द गयो शोर भयो भारे, शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ लई सिधारे।। हे गोविन्द.
'सुर' कहे श्याम सुनो शरण हों तिहारे, अबकी बार पार करो नन्द के दुलारे।। हे गोविन्द..

दर्शन दो घनश्याम

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अखियाँ प्यासी रे
मन मंदिर की ज्योत जगा दो घट-घट वासी रे।। दर्शन दो
द्वार दया का जब तू खोले पञ्चम स्वर में गूगाँ बोले
अंधा देखे लंगडा चल कर पहुँचे काशी रे।
युग बीते नहीं आई मिलन की, पूरणमासी रे।। दर्शन दो
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ
आँख मिचौली छोड़ो अब तो, ब्रज के वासी रे।। दर्शन दो
द्वार खड़ा कब से मतवाला, माँगे तुमसे हार निराला
"नरसी" की यह विनती सुन लो हे दुःख नाशी रे।। दर्शन दो

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गज निरखत फहरान बसनकी

गज निरखात फहरान बसन की।। टेक।।
ललकि लग्यो मुख कमल बिलोकन, भूलि गयो सुधि ग्राह ग्रसन की।।
मन रथ पर आवत दरसावत, भुज भूषित ज्यों सिर परसन की।।
कुण्डल कच थहरात बदन पर, दामिनि सी मृदु मन्द हँसन की।।
बनमाला लहकत उर झलकत, पीताम्बर कटि फेंट कसन की।।
यह छबि बरनि सकै कवि केहि विधि, पहुँचत नहिं बुधि सहस रसन की।।
कमल उखारि उठाय सूँड सों, भेंटि कियो जिमि भाव असन की।
प्रेम सखी गज छीनि ग्राह सों, तहँ पठयो जहँ डर ना खसन की।।

।। रहे मेरे मुख में।।

रहे मेरे मुख में सदा तेरा नाम, ओ राधा के श्याम ओ मीरा के श्याम।। टेक।।
कोई दुनिया की ताकत जुदा ना करे, मिले जो मुझे राधा राधा कहे।
मुझे तो न मरने न जीने से काम, ओ राधा के श्याम ओ मीरा के श्याम।। रहे मेरे।।
नजरों ने तेरी दिलासा दिया, मुझे अपना तूने बना ही लिया।
कहें तुमको सब ही यशोदा के लाल, ओ राधा के श्याम ओ मीरा के श्याम।। रहे मेरे।।
चाहे मुझको कोई दीवाना कहे, दीवाना कहे मस्ताना कहे।
मुझे तो है प्यारा प्रभु तेरा नाम, ओ राधा के श्याम ओ मीरा के श्याम।। रहे मेरे।।
चरणों में मुझको बिठालो प्रभु, अपने में मुझको मिलालो प्रभु।
रटूँ तेरा नाम सुबह और शाम, ओ राधा के श्याम ओ मीरा के श्याम।। रहे मेरे।।

श्लोक

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातक सुरा, धनवन्तरिश्चन्द्रमा,
धेनुः कामदुहा सुरेश्वरगजो, रम्भाश्च देवाङ्गना।
अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोऽमृतं चाम्बुधे,
रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिन, कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।

दोहा :- श्री मणि रम्भा वारुणी, अमिय शंख गजराज।
कल्पद्रुम शशि धेनु धनु धनवन्तरि विष वाज।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

धर कर वामन को अवतार

धर कर वामन को अवतार, प्रभुजी लीला विस्तारी।। टेक।।
भादों शुक्ल द्वादशी के दिन, श्रवण नखात सुखकारी।
कश्यप अदिति मातु पितु के गृह, प्रगट भये ब्रह्मचारी।।१।।
दण्ड कमण्डलु हाथ लिये हैं, ऊर्ध्वपुण्ड्र भारी।
पहर खड़ाऊँ राजा बलि के, जाकर बने भिखारी।।२।।
हीरा मोती कछु नहीं लीन्हों, वरनी नहीं कुमारी।
तीन पाँव धरणी के माँगे, देखो अचरज भारी।।३।।
राजा बलि ने दियो दान जब, गुरु ने हाय पुकारी।
तीन पाँव से तीन लोक को, नाप लिये असुरारी।।४।।
भयो त्रिविक्रम रूप आपको, बलि लिये चरण पखारी।
वलि की पीठ नापकर स्वामी, जग से लिये उबारी।।५।।
सुर मुनि जय जयकार करत हैं, मुदित भये त्रिपुरारी।
जन लक्ष्मण हर्षित गुण गावे, तन मन धन सब वारी।।६।।

नाथ कैसे बलि को याचन आये

नाथ कैसे बलि को याचन आये, जाको पार न कोई पाये।। टेक।।
वामन बनके कृष्ण पधारे, बलि राजा के द्वारे।
भेष ब्रह्मचारी का बनाये, उर में लक्ष्मी धारे।।१।।
नाम सुना है बलि का हमने, जो माँगे सो पावे।
मनमें है छोटी अभिलाषा, जो पूरण करवावे।।२।।
बलिराजा करते है प्रार्थना, हाथ जोड़ शिर नाये।
श्रीमुख से फरमावो स्वामी, दोऊँ मन हरषाये।।३।।
वामन बोले सुनिये राजन्, त्रय पद भूमि पाऊँ।
देवो राजा प्रभु की रसोई, भोग लगाकर जाऊँ।।४।।
वलि बोले हँसकर के ब्राह्मण, माँगन तुम ना जानो।
तीन पैर भूमि क्या माँगी, मुझको अति ही लजानो।।५।।
शुक्राचार्य जान गये प्रभु को, यह ब्राह्मण नहीं प्यारे।
तीन लोक के नाथ यही हैं, कहते वेद पुकारे।।६।।
करि संकल्प कहें बलि राजा, लीजै वचन तुम्हारे।
रूप त्रिविक्रम धार प्रभु ने, नाप लियो जग सारे।।७।।
श्री वैष्णव को दोस गात जस, चरण कमल चित थारे।
आश्रित कारज सार प्रभु जी, बन गये पहरेवारे।।८।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जीवन में सुख दाई है

जीवन में सुखदाई है एक सहारा राम का, एक सहारा राम का रामभक्त हनुमान का।
राम नाम बिनु मूरख बन्दे जीवन है किस काम का।। टेक।।
द्रुपद सुता की भी सुध ली गई, गौतम नारी अहिल्या तर गई।
जहर का प्याला मीरा पी गई, लेकर तेरे नाम का।। जीवन में।।
हिरनाकुश ने पुत्र सताया, अग्नि का एक खम्ब बनाया।
खम्ब फाड़ प्रह्लाद बचाया, किया अन्त सुल्तान का।। जीवन में।।
धन्ना था एक जाट निराला, सीधा सादा भोला भाला।
पत्थर में से प्रगटे नन्द लाला, हुआ दर्शन घनश्याम का।। जीवन में।।
भिलनी ने भी तपस्या कीन्ही, बेरो के बदले भक्ति लीन्ही।
सुबह शाम जब रट ये कीन्ही, होगा दर्शन कब राम का।। जीवन में।।
कमल प्रभु है दास तुम्हारा, तेरा ही है हमें सहारा।
एक बार प्रभु हमें करा दो, दर्शन अपने धाम का।। जीवन में।।

जरा आ शरण मे राम

जरा आ शरणं मे राम की मेरा राम करुण निधान है।
घट-घट मे है हरि रम रहा, वो तो जगत का भगवान है।।
भक्ति में उसकी तू हो मगन, उसके पाने की तू लगा लगन।
तेरे पाप सब कट जायेंगे, मेरा राम कृपा निधान है।। जरा आ।।
पल-पल मे तू उसको याद कर, उसके आगे सब फरियाद कर।
तेरे पाप सब धुल जायेगें, हरि नाम ऐसा महान है।। जरा आ।।
लिया आसरा जिसके नाम का, वो तो बन गया श्री राम का।
जिस नाम से पत्थर तरे, फिर तेरा तरना आसान है।। जरा आ।।
भक्ति मे उसकी तो हो मगन, उसके पाने की तू लगा लगन।
तेरे पाप सब धुल जायेंगे, मेरा राम दया निधान है।। जरा आ।।
कर सेवा दुनियाँदारो की, निर्बल दुखी बेसहारो की।
जब बेर खाये थे राम ने, जिसे जाने सारा जहाँन है।। जरा आ।।
प्रभु दासी कब से पुकारती, तेरे चरणों में अर्ज गुजारती।
मुझे भूल न जानां ऐ प्रभु, तेरी दासी बड़ी अनजान है।। जरा आ।।
मेरा राम सर्व शक्ति मान है, मेरा राम सुखों की खान है।
जरा आ शरण मे राम की मेरा राम करुण निधान है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नवम स्कन्ध

श्रीसूर्यवंश वर्णन

सीता राम राम राम सीता राम राम राम, राजा राम राम राम राजा राम राम राम।।
जय सीता राम जय सीता राम, जय सीता राम जय सीता राम।।
जय राधे श्याम जय राधे श्याम, जय राधे श्याम जय राधे श्याम।।
सीता राम जय सीता राम, सीता राम जय सीता राम।।
राधे श्याम जय राधे श्याम, राधे श्याम जय राधे श्याम।।

जय जय सुरनायक

जय जय सुरनायक, जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी, जय असुरारी, सिन्धु सुता प्रिय कंता।।
पालन सुरधरनी, अद्भुत करनी, मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला, दीन दयाला, करउँ अनुग्रह सोई।।

जय जय अविनासी, सब घट वासी, व्यापक परमानन्दा।
अविगत गोतीतं, चरित पुनीतं, माया रहित मुकुन्दा।।
जेहि लागि विरागी, अति अनुरागी, विगत मोह मुनिवृन्दा।
निसिवासर ध्यावहिं, गुनगन गावहिं, जयति सच्चिदानन्दा।।

जेहि लागि विरागी, अति अनुरागी, विगत मोह मुनिवृन्दा।
सो करउ अधारी, चिंत हमारी, जानिय भगति न पूजा।
जो भव भय भंजन, मुनि मन रंजन, गंजन विपति बरूथा।
मन वच क्रम बानी, छाँड़ि सयानी, सरन सकल सुरजूथा।।

सारद श्रुति सेषा, रिषय असेषा, जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे, वेद पुकारे, द्रवऊँ सो श्री भगवाना।।
भव वारिधि मंदर, सब विधि सुन्दर, गुन मन्दिर सुख पुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर, परम भयातुर, नमत नाथ पद कंजा।।

दोहाः- जानि सभय सुर भूमि सुनि, वचन समेत सनेह।
गगन गिरा गम्भीर भई, हरन सोक सन्देह।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भए प्रकट कृपाला

भए प्रकट कृपाला, दीन दयाला, कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी, अद्भुत रूप निहारी।।
लोचन अभिरामा, तन धन श्यामा, निज आयुध भुजचारी।
भूषण वनमाला, नयन विशाला, शोभा सिंधु खरारी।।१।।
कह दुई कर जोरी, स्तुति तोरी, केहि बिधि करौं अनन्ता।
माया गुन ग्याना, तीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता।।
करुणा सुख सागर, सब गुन आगर, जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयउ प्रकट श्रीकंता।।२।।
ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम, प्रति बेद कहैं।
मम उरसो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै।।
उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहैं।
कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहैं।।३।।
माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसु लीला, अतिप्रिय सीला, यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, होई बालक सुर भूपा।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहिं भव कूपा।।४।।

दोहा :- विप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुण गो पार।।

१ जय जय श्री राम चन्द्र अवध के दुलारे।
अवध के दुलारे कौशल्या के प्यारे।
कौशल्या के प्यारे दशरथ के प्यारे।।
जय जय श्री राम चन्द्र अवध के दुलारे।।

२. अवध मे आनन्द भयो जय रघुवर लाल की।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राम दशरथ के घर

राम दशरथ के घर जनमें, घराना होतो ऐसा हो,।
लोक दर्शनको चल आये, सुहाना होतो ऐसा हो।।
यज्ञकें काम करनेको, मुनीश्वर लें गये बनमें,
उड़ाये शीश दैत्यन के, निशाना होतो ऐसा हो।।१।।
धनुषको जाय कर तोड़ा, जनक की राजधानी में,
भूप सब मनमें शरमाये, लजाना होतो ऐसा हो।।२।।
पिता की मानके आज्ञा, राम बनको चले जबही,
न छोड़ा संग सीताने, जनाना होतो ऐसा हो।।३।।
सिया को ले गया रावण, बनाकर भेष जोगी का,
कराया नाश सब अपना, दिवाना होतो ऐसा हो।।४।।
प्रीत सुग्रीव से करके, गिराया बाण से बाली,
दिलाई नार फिर उसकी, दिलावर होतो ऐसा हो।।५।।
गये हनुमान लंकामें, खबर लेने को सीता की,
जला करके नगर आये, सियाना होतो ऐसा हो।।६।।
बांध सेतु समुन्दरमे, उतारा पार सेनाको,
मिटाया वंश रावण का, हराना होतो ऐसा हो।।७।।
राज्य देकर विभीषणको, अयोध्या लौटकर आये,
वो ब्रह्मानंद बल अपना, दिखाना होतो ऐसा हो।।८।।

बधैया बाजे हो

बधैया बाजे हो आँगने में, बधैया बाजे।।
चन्द्रमुखी मृगनयनी अवध की, तोरत तान हो रागने में।। बधैया।।
प्रेम भरी प्रमदागन नाचै, नूपुर बाँधे हो पायने में।। बधैया।।
न्यौछावर श्री रामलला की, नहिं कोऊ लाजत है माँगने में ।। बधैया।।
सिया अली यह कौतक देखत, बीती रजनी हो जागने में।। बधैया।।

हमारे राज राजेश्वर

हमारे राज राजेश्वर, बधाई है बधाई है।। मिला है आज शुभ अवसर, बधाई है बधाई है।
खुली हैं सादियाने हैं, मुबारक है, मुबारक है। दुआएँ हो रहीं घर-घर, बधाई है बधाई है।
नजर नूरे नजर आँये, अवधवासी नजर आये। हजारों दिल न्यौछावर है बधाई है बधाई है।
रहें आनन्द ये चारों, जियें सौं चन्द ये चारों। ये चारों फल हैं जलवागर, बधाई है बधाई है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जनम लियो रघुरैया

जनम लियो रघुरैया, अवधपुर बाजै बधैया।।
धन्य अवधपुर, धन्य राजा दशरथ, धन्य कौशिल्या मैया।। अवधपुर बाजै बधैया।।
गहि-गहि दुंदुभि, चहुँ दिश बाजत, आये है नृत्य करैया।। अवधपुर बाजै बधैया।।
सुमन वृष्टि आकाश ते होई, नृत्य करे सुर रैया।। अवधपुर बाजै बधैया।।
राम गुलाम के रसिक शिरोमणि, बार-बार बलिजैया।। अवधपुर बाजै बधैया।।

हम पर चलाय दियो टोना

हम पै चलाय दियो टोंना, किशोर गौर साँवरो सलोना।। टेक।।
राम लखन को जनकपुर में देखा, ज्यों नीलम अरू सोना।। किशोर०।।
राम लखन को फुल बगिया मे देखा, हाँथन लिये फूल दोना।। किशोर०।।
राम जी को देख मैंने घूँघट पट कीन्हा, खुला रहा एक कोना।। किशोर०।।
मृदु मुस्काय राम मेरी ओर देखे, हो गया जो कुछ होना।। किशोर०।।

राम वन से लौट कर आये

राम बन से लौटकर आये, आज अवध में आनन्द छाये।।
सीता, लक्ष्मण, राम, तीनों शोभा के धाम, दर्शन करि लोग सिहाये।। आज०।।
कोई नाचे कोई गावै, नर नारी अति ही हर्षाये, सबने प्रभु के गुण गाये।। आज०।।
छाई खुशियाँ अपार, मानो दीवाली त्यौहार, घर-घर में दीप जलाये।। आज०।।
कोई चरण पखारे, कोई आरती उतारे, कोई मीठे-मीठे भोग लगाये।। आज०।।

परिपूरण पाप के कारण से, भगवन्त कथा न रूचे जिनको।
तिन एक कुनारि बुलाई लई, नचवावत है दिनको दिनको।।
मृदंग कहे धिक् है धिक् है, मंजीरा कहे किन को किन को।
तब हाथ उठाय के नारि भये, इनको इनको इनको इनको।।

दीन मलीन अधीन है अंग, विहंग पर्‍यो छिति खिन्न दुखारी।
राघव दीन दयालु कृपालु, को देखि दुखी करुण भई भारी।।
गिद्ध को गोद मे राखि कृपानिधि, नयन सरोजन मे भरि बारी।।
वारहि बार सुधारत पंख, जटायु की धूरि जटान सो झारी।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आये बहुरि रघुरैया, अवध में बाजे बधैया।।

चौदह बरस बाद लौटे सिया संग, राम लखन दोऊ भैया।। अवध०।।
उतरे प्रभु पुष्पक विमान ते, सँग सखा समुदैया।। अवध०।।
बानर भालू सहित रघुनन्दन, लागे गुरुजी के पैंया।। अवध०।।
भूमि से उठाय प्रभु भेंटे भरत को, प्रेम मगन देखवैया।। अवध०।।
लगि सिय पग धनि भरत जटल सिर, युगल ताज तजवैया।। अवध०।।
सुनि आगमन मातु सबधाई, ज्यों बछड़ा हित गैया।। अवध०।।
माता कौशल्या आदि आरती उतारें, पुनि-पुनि लेत बलैया।। अवध०।।
हिय में विचारे कैसे रावण को मारे, सुठि सुकुमार मेरे छैया।। आवध०।।
यथायोग्य मिलि भेटे सबहि प्रभु, हरषे लोग लुगैया।। अवध०।।
'नारायण' प्रभु भक्ति पाय यश, गावत तुलसी गोसइयाँ।। अवध०।।

हमारे राम राजा बनाये जायेंगे।

हमारे राम राजा बनाये जायेंगे।
सारी सज गई अयाध्या नगरी, बंदनवार लगाये जायेंगे।। हमारे०।।
सारे अवध की सखियाँ आई, मंगल गवाये जायेंगे।। हमारे०।।
स्वर्ग लोक से देवता आये, फूल बरसाये जायेंगे।। हमारे०।।
मातु कौशल्या करन आरती, दीपक जलाये जायेंगे।। हमारे०।।

श्रीचन्द्रवंश वर्णन

श्री कृष्ण गोविन्द मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।।
केशवा माधवा हे देवा मधुसूदना

जय राधा माधव जय कुंज विहारी।
जय गोपी जन बल्लभ जय गिरिवर धारी।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दशम स्कन्ध

प्रिय राधे प्रिय राधे राधे राधे प्रिया प्रिया
केशवा माधवा हे देवा मधुसूदना

बन्दना-कवित्त

बन्दौ द्वारकेश द्वै बेर, तीन ताप हारी, चारि बेर बन्दौ कर चक्र के धरैया कों।
पाण्डव सखा को पांच बेर, षट बेर श्याम सात बेर बन्दो सात बैल के नथैया कों।।
आठ पटरानी पति आठ बेर बन्दो, नौ बेर बन्दो नवनीत के चुरैया कों।
बन्दन करत दस बेर दस रूप धारी, बेर-बेर बन्दौ बाबा नन्द के कन्हैया कों।।१।।

एक बेर आदि ब्रह्म अच्युत अविनाशी की, द्वै बेर दानव दलैया जन रखैया की।
तीन बेर बोलो जय बामन त्रिविक्रम की, चारि बेर शंख, चक्र पद्म, गद धरैया की।।
पांचैं पुरुषोत्तम, छटें क्षिति भक्ष, सातें श्याम, आठें अवधेश, नौवें नन्द के कन्हैया की।
दस बेर दश रूप धारी श्री विहारी जू की, बेर- बेर बोलौ जय बांसुरी बजैया की।।२।।

छबि बर्णन

बांकी चितौनी सों नैंकु चितै, जन रंजन कौ मन रंजन कीन्हौ।
गर्व कुरंग कौ भंग भयौ, अरु मीनन मान विभंजन कीन्हौ।।
कंजन की गिनती को करै, जब खंजन कौ मद गंजन कीन्हौ।
धन्य री राधिके नैन तेरे जो निरंजन 'श्याम' कौ अंजन कीन्हौ।।

अँगूठी में नगीना

उत बनमाल इत भृकुटी विशाल सोहै, माथे पै मुकुट इत बेंदी भाल दीना है।
उतमें पीताम्बर इत चूनरी अनूप रंग, उत श्याम रंग इतै गौर रंग भीना है।।
उतसों बजामें कान्ह बाँसुरी अनूप राग, इतसों बजत पग नूपुर-रव, झीना है।
जोरी है अनूठी लगैं उपमा सब झूँठी, राधा सोने की अँगूठी कृष्ण नीलम नगीना है।

काजर सों कामिन की शोभा अधिकात जैसें, गरल महेश गरे गौरव प्रवीना है।
कारी निशि चंद्र सों कमल मधुकर सों फवै, कोयल कल कंठ बिना किनहूँ न चीना है।।
मलयागिरी की कारे सर्पन ते शोभा होय, मिश्री की चमक बॉस फाँस के अधीना है।
गुनीजन बखान्यौ मेल कांच और कंचन, राधा सोने की अँगूठी कृष्ण नीलम नगीना है।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पहुँची

रखी थी ताक में पहुँची, कोई कमबख्त आ पहुंची,
पहन पहुंचे में वह पहुंची, खुदा जाने किधर पहुंची।
खबर अब तक नहीं पहुंची, कि वह पहुंची, किधर पहुंची,
अगर पहुंची तो यह पहुंची, कि वह पहुंची नहीं पहुंची।।

कोई कहे गोविन्द

कोई कहे गोविन्द, कोई गोपाला, मैं तो कहुँ साँवरिया बाँसुरिया वाला।।
राधा ने श्याम कहा मीरा ने गिरधर, कृष्णा ने कृष्ण कहा, कुब्जा ने नटवर।
ग्वालों ने तुमको पुकारा कहके ग्वाला।। मैं तो कहुँ...
मैया तो कहती है, तुमको कन्हैया, घनश्याम कहते है, बलराम भैया।
"सूरजी" के आंखों के तुम हो उजाला।। मैं तो कहुँ ...
भीष्म जी के बनवारी अर्जुन के मोहन, छलिया ही कहकर पुकारे दुर्योधन।
कंशा तो कहता था जलकर के काला।। मैं तो कहुँ...
अच्युत युधिष्ठिर के ऊधौ के माधव, भक्तों के भगवान् संतों के केशव।
हम तो सभी भजते हैं कहकर कृपाला।। मैं तो कहुँ...

नन्द उत्सव

नन्द के आनन्द भयो जय कन्हैया लालकी, हाथी दीन्हे घोड़ा दीन्हीं और पालकी।
कंठा दीन्हे कडुला दीन्हे दीन्हीं मुक्ता मालकी, कड़े दिये छड़े दिये गऊ व्याई हाल की।।
ज्वानन को हाथी घोड़ा बूढ़ेन को पालकी, सुरमा दीन्हों महावर दीन्हों दीनी बिन्दी भालकी।
नन्द के आनन्द भयो जय कन्हैया लालकी, ज्वानन को लड्डू पेड़ा बूढेन को ल्हापसी।।

बधाई कवित्त (ग्वाल कवि)

शंख चक्र गदा पद्म मथुरा में जन्म लियो, देवकी को दरश दियो देखौ छवि बाल की।।
ब्रज वासिन मन चाह नाना विधि पूरी भई, रूप की अमन्द राशि खुली परी ख्याल की।।
ग्वाल कवि श्रुतिन कौ छन्द सौ सुच्छन्द भयो, मोहन मिलन्द भयो सूरत रसाल की।।
वृजमें वृजचन्द भयो जसोदा कें फरचन्द भयो, नन्द के आनन्द भयो जय कन्हैयालाल की।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जय जय श्री कृष्ण चन्द्र नन्द के दुलारे, नन्द के दुलारे बाबा नन्द के दुलारे।
नन्द के दुलारे यशोदा के प्यारे, जय जय श्री कृष्ण चन्द्र नन्द के दुलारे।
नन्द के दुलारे गोपियों के प्यारे, जय जय श्री कृष्ण चन्द्र नन्द के दुलारे।
जय जय श्री कृष्ण चन्द्र नन्द के दुलारे, नन्द के दुलारे बाबा नन्द के दुलारे।

गोपाला गोपाला देवकी नन्दन गोपाला, देवकी नन्दन गोपाला यशोदा नन्दन गोपाला।
गोपाला गोपाला गोकुल नन्दन गोपाला, गोकुल नन्दन गोपाला मुरली मनोहर नन्दलाला।
गोपाला गोपाला यशुमति नन्दन गोपाला, यशुममि नन्दन गोपाला देवकी नन्दन गोपाला।
गोपाला गोपाला देवकी नन्दन गोपाला, देवकी नन्दन गोपाला यशोदा नन्दन गोपाला।

कृष्ण घर नन्द के

कृष्ण घर नन्द के जनमें, घराणा हो तो ऐसा हो,
लोक दरसन को चल आए सुहाना हो तो ऐसा हो
करे सब प्रेम से दरसन, दुलारा हो तो ऐसा हो।टेर।।
बकासुर को मसल डाला, पूतना जान से मारी,
कंसको केस से खींचा, खिलारा हो तो ऐसा हो।।१।।
कूद पानी के अन्दर से, नाग को नाथ कर लाए,
चरण फणफण पे धर करके, नचारा हो तो ऐसा हो।।२।।
तीर जमुना के, जाकर के, बजाई बंसरी मोहन,
चली घर छोड़ वृजनारी, पियारा हो तो ऐसा हो।।३।।
रचाई रास कुंजन में, मनोहर रूप बन करके,
देव दर्शन को चल आए, दिदारा हो तो ऐसा हो।।४।।
गए जब छोड़ गोकुल को, नही फिर लौट के आए,
सखीं रोतीं रहीं बनमें, किनारा हो तो ऐसा हो।।५।।
पुरी द्वारिका जाकर, महल सोने का बनवाए
हजारों रानियाँ ब्याही, पसारा हो तो ऐसा हो।।६।।
कुरू पांडव लड़े रण में, जीत अर्जुन की करवाई,
बचाई लाज द्रौपदी की, सहारा हो तो एसा हो।।७।।
उतारा भार भूमि का, सिधाये धामको अपने,
वो ब्रह्मानंद दुनिया से, न्यारा हो तो एसा हो।।८।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री कृष्ण जन्म बधाई

आज नन्द द्वारे बधैया बाजे।
कौन लुटावे अन, धन सोना, कौन लुटावे धेनु गैया।
बाबा लुटावे अन, धन, सोना, मैया लुटाये धेनु गैया।।
आँगन में सखि शौहर गावें, द्वारे बजे शहनैया।
चलो सखि नैन सुफल कर आयें, प्रकटे कुँवर कन्हैया।।
चढ़े विमान सुमन सुर बरसै, देत है नन्द दुहैया।
दूध दहिकी कीच मची है, नन्द बाबा अँगनैया।।
मुदित आशीष देत सब गुरुजन, चिरजीवो दोउ भैया।

श्री कृष्णावतार.....।

भए प्रकट कृपाला, दीनदयाला, यशुमति के हितकारी।
हर्षित महतारी, रूप निहारी, मोहन मदन मुरारी।।
कंसासुर जाना, अति भय माना, पूतना बेगि पठाई।
सो मन मुसुकाई, हर्षित धाई, गई जहाँ जदुराई।।
तेहि जाई उठाई, हृदय लगाई, पयोधर मुख में दीन्हें।
तब कृष्ण कन्हाई, मन मुसकाई, प्राण तासु हर लीन्हे।।
जब इन्द्र रिसाये, मेघ बुलाये, बशीकरण बृजसारी।
गौवन हितकारी, मुनि मन हारी, नख पर गिरिवर धारी।।
कंसासुर मारे, अति हंकारे, वत्सासुर संहारे।
वक्रासुर आयो, बहुत डरायों, ताकर बदन बिदारे।।
अति दीन जानी, प्रभु चक्र पाणी, ताहि दीन निज लोका।
ब्रह्मासुर राई, अति सुख पाई, मगन हुए गये शोका।।
यह छन्द अनुपा, है रस रूपा, जो नर याकू गावै।
तेहि सम नहिं कोई, त्रिभुवन माँही, मन वांछित फल पावै।।

दोहा :- नन्द याशोदा तप कियों, मोहन सो मन लाय।
तासो हरि तिन्ह सुख दियों, बाल भाव दिखलाय।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

व्रज मे हो रही जय जय कार

व्रज में हो रही जय जय कार, नन्द घर लाला जायो है
यूथ के यूथ नन्द घर आवैं, ग्वाल बाल सब हिलमिल गावैं
ब्रह्मा नन्द समान आज, सुख सबने पायो है।। ब्रज....
मांगलीक सब वस्तु ले ली, गावै गीत सभी अलबेली
नन्द द्वार और मारग में, दधि कीच मचायों है।। ब्रज....
ब्रज चौरासी कोस में भईया, सब कहे धन्य यसोदा मईया
अस्सी साल की आयू में, सुत ऐसो जायो है।। ब्रज....
शिव ब्रह्मा सनकादिक आये, सिद्ध मुनी सब देव सिहाये
धर ग्वालन को रूप सबन ने, मंगल गायो है।। ब्रज....
नन्द यशोदा भाग्य बड़ाई, सबही देने लगे बधाई
ऐसो अद्भुत सुत तो काहू, और न पायो है।। ब्रज....

मैया-मैया कह के

मैया-मैया कह के श्याम, काऊ दिन मौसों बोलैगौ।। टेक।।
जब मेरो बड़ो होयगौ छौना, लै दऊँगी याय चन्द्र खिलौना।
रुनक-झुनक पग पैंजनी बाजे, अंगना में डोलैगो।। मैया-मैया।।
मोर मुकुट कुण्डल पहराऊँ, गल वैजयन्ती माल धराऊँ।
पीत झंगुलिया पहर संग, ग्वालिन के खेलैगो।। मैया-मैया।।
आवेगी जब ब्रज की नारी, होरी खेलेगौ तिन संग बनवारी।
पकड़-पकड़ कै गूजरियन नै, रंग में बोरैगो।मैया-मैया।।
बेला भर-भर दूध पिवाऊँ, माखन मिश्री खूब चटाऊँ।
उठूँगी सिदौसी करैगौ कलेवा, गईयन खोलैगौ।मैया-मैया।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

शिव आये यशोदो के द्वार

शिव आये यशोदा के द्वार, मैया मोहे दर्शन करा।
मेरा सोया हुआ है कुमार, ले बाबा भिक्षा ओ जाव।। टेक।।
कैलाश पर्वत से आया हूँ माता, घर तेरे जन्मा है भाग्यविधाता।
होगी कृपा माँ अपार।। मैया मोहे दर्शन करा।।
मुश्किल से बाबा ये दिन है आया, बीती उमरिया में लालन को पाया।
आँगन में छाई बहार।। ले बाबा भिक्षा ओ जाव।।
जिसको तू बेटा समझी है माता, वो है सारे जग का भाग्य विधाता।
मेरा है प्राण अधार।। मैया मोहे दर्शन करा।।
तेरे गले में सर्पो की माला, देखके डर जाये मेरा लाला।
बातें करो न बेकार। ले बाबा भिक्षा ओ जाव।।
डरता है जिससे ब्रह्माण्ड सारा, मैं क्या समझूँ बालक तुम्हारा।
पइया पड़ूँ माँ तुम्हार।। मैया मोहे दर्शन करा।।
डरती हुई माता अन्दर को आयी, गोदी में अपने लालन को लायी।
दर्शन दिया है कराय।। मैया मोह दर्शन करा।।
शिव जी को देख कृष्ण लगे मुस्कुराने, दोनों की महिमा को कोई क्या जाने।
आनन्द है छाया अपार। मैया मोहे दर्शन करा।।

नटवर नागर नन्दा

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।।टेर।।
तू ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकुन्दा।।१।।
सब देवन मे कृष्ण बड़े हैं, ज्यूँ तारों बिच चन्दा।।२।।
सब सखियनमें राधाजी बड़ी हैं, ज्यूँ नदियों बिच गंगा।।३।।
ध्रुव तारे, प्रहलाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता।।४।।
कालीदह में नाग ज्यो नाथो, फण-फण निरत करन्ता।।५।।
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा।।६।।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम का फन्दा।।७।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जग मे सुन्दर हैं दो नाम

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।टेर।।
एक हृदय मे प्रेम बढ़ावै, एक ताप सन्ताप मिटावै।
दोनों सुख के सागर हैं, दोनों है पूरण काम।।१।।
माखन ब्रज में एक चुरावै, एक बेर भिलनी के खावै।
प्रेम भाव के भरे अनोखे, दोनों के हैं काम।।२।।
एक कंस पापी संहारे, एक दुष्ट रावण को मारे।
दोनों दीन के दुःख हरता हैं, दोनों हैं बलके धाम।।३।।
एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग बिराजे।
चाहे सीताराम कहो, चाहे राधेश्याम।।४।।
दोनों हैं घट-घट के बासी, दोनों हैं आनन्द प्रकासी।
राम श्याम के दिव्य भजन ते, मिलता है विश्राम।।५।।

बाजै-बाजै री बधाई

बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना।टेक।।
बडो अनोखे लाला जायो, श्याम रंग सब कौ मन भायौ।
ब्रजवासिन कौ मन हुलसायौ, उमग-उमग सब चले नन्द घर बाँधे बँधना।।१।।
नन्द भवन ऐसो सजवायौ, बैकुण्ठहु कौ दियौ लजायौ।
सब लोकन तें घनौ सुहायौ, टोल-टोल गोपी उठि धाई गावैं मँगना।।२।।
ब्राह्मण अपने बेद पढत हैं, नन्द बाबा जू दान करत हैं।
पाग पिछौरा ग्वाल लेत हैं, गोपिन को दिये लहँगा फरिया, रतन जटित कँगना।।३।।
नाच नाच के प्रेम दिखायो, नन्द भवन में धूम मचायौ।
देय असीस सबन मन भायौ, अरी जसोदा रानी तेरो जीवै ललना।।४।।
बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना।।

सभी मिल प्रेम से बोलो...।

सभी मिल प्रेम से बोलो, बधाई है बधाई है।
हृदय आनन्द भर बोलो, बधाई है बधाई है।।
सुनी ये बात ब्रज-घर-घर, यशोदा लाल जायो है।
मगन सब गोपिका धाई, बधाई है बधाई है।।
लुटावें रत्न, मणि, माला, मगन है नन्द जी मन में।
है प्रमुदित रोहिणी माई, बधाई है बधाई है।।
घड़ी शुभ आज मंगल की, बधाई है बधाई है।
मचो आनन्द गोकुल में, बधाई है बधाई है।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कौन सी ने मार

कौन सी ने मार दीयौ री टोना। मेरो मचलो श्याम-सलौना।।
भूल गयी मै दीयो ना याके, माथे बीच डिठोना।
रोय-रोय रुदन करे मेरो बारो, तोर दियो है खिलौना।।
दूध न पीवे दही न खावे, लेय न माखन लौना।
नहावे न धोवे याने सुधि बिसराई, आँख न खोले छौना।।
पहले ही समझायों लाल इन, सखियन संग नचौना।
बुरी नजर है इन गोपिन की, बरजे ते मान्यो ना ।।
ललिता और विशाखा बोली, यशुमति बात सुनैना।
राई-नोन उतारों लाला की घर मधु धरी उठैना।।
राई- नोन उतारे लाल की, यशुमति बिलम्ब करो ना।
नैना खुल गये नारायण, खिल-खिला उठो सलौना।।

जनम लिया गोपाला ने

जनम लिया गोपाला ने, नन्द लाला ने।
गोकुल में आनन्द छाया है, नाच किया ब्रजबाला ने।। नन्द।।
जेल के ताले टूट गये हैं, बन्धन सारे छूट गये हैं।
कृष्ण को अपने सिर पै उठाये, वासुदेव जी गोकुल जाये।।
गमन किया गोपाला ने, नन्द लाला ले।।१।।
हर्ष से यमुना उमड़ी जाये, वासुदेव मन में घबराये।
कृष्ण के चरण छुए यमुना ने, प्यार से फिर वो घटती जाये।।
खेल अजब रच डाला हैं, नन्द लाला ने।।२।।
यशोदा माँ की गोद में लाला, कृष्ण कन्हैया भोला भाला।
घर घर दीप जले गोकुल में, सब का प्यारा मुरली वाला।।
मुख चूमा ब्रज बाला ने, नन्द लाला ने।।३।।
माखन दधि और मधु चटा दो, मोहन को पलने में लिटा दो।
लग जाये ना इसे नजरिया, माथे काजल बड़ा लगा दो।
प्यार दिया गोपाला ने, नन्द लाला ने।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। चलो देखि आवें घर नन्द लाला हुआ।।

चलो देखि आवैं नन्द घर लाला हुआ। यदुवंश के कुल का उजाला हुआ।।
सखी ब्रज के सब बाल, हो के दिल मे खुशहाल।
बैंया गरदन में डाल, नाचे दे दे के ताल।
आज नन्द का नसीबा, उजियाला हुआ।। चलो देखि आवें।।
सभी हिलमिल के ग्वाल, करे जय जय गोपाल।
बाजे शंख और घड़ियाल, जन्म लीन्हों नन्दलाल।
झुले अंगना में पलना, जहाँ डाला हुआ।। चलो देखि आवें।।
आज ब्रज में महाराज, करने भक्तों के काज ।
जुड़ा सारा समाज, करो दर्शन सब आज।
सुख नयनों को, पँहुचाने, वाला हुआ।। चलो देखि आवें।।
देखो गोकुल की ओर, सावन भादो का शोर।
बोले पंछी बनमोर, मानो बदरी की घोर।
बूँदे आनन्द की बरसाने, वाला हुआ।। चलो दिखि आवें।।

।। जियो श्याम लाला।।

जियो श्याम लाला, जियों श्याम लाला। पीली तेरी पगड़ी रंग काला।। जियो।।
मथुरा में आये नन्द लाला। गोपियों से पड़ गया अब पाला।। जीयो।।
मत रो कान्हा ऊँवां ऊँवां। समझावै सुनन्दा भुवा।। जियो।।
खीर जलेबी पूड़ी लड्डू पुआ। जसुमति घर आनन्द हुआ।। जियो।।
चरमर चरमर करे पलना। ब्रजवासी गाये जियो ललना।। जियो।।

भज गोविन्दम्

भज गोविन्दं बालमुकुन्दं, परमानन्दं हरे हरे। भज गोविन्दं बालमुकुन्दं, परमानन्दं हरे हरे।।
बालमुकुन्दं हरे हरे, बालमुकुन्दं हरे हरे। परमानन्दं हरे हरे, परमानन्दं हरे हरे।।
भज गोविन्दं बालमुकुन्दं, परमानन्दं हरे हरे। भज गोविन्दं बालमुकुन्दं, परमानन्दं हरे हरे।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कृष्ण-जिनका नाम है

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है।
ऐसे श्री-भगवान को, बारम्बार प्रणाम है।।१।।
यशोदा जिनकी मैया है, नन्दजी बपैया है।
ऐसे श्री गोपाल को, बारम्बार प्रणाम है।।२।।
राधा जिनकी छाया है, अद्‌भुत जिनकी माया है।
ऐसे श्री घनश्याम को, बारम्वार प्रणाम है।।३।।
लूटलूट दधिमाखन खायो, ग्वाल बाल संग धेनु चरायो।
ऐसे लीलाधाम को, बारम्बार प्रणाम है।।४।।
द्रुपद-सुता को लाज बचायो, ग्राहसे गजको फंद छुड़ायो।
ऐसे कृपानिधान को, बारम्बार प्रणाम है।।५।।

नंदगांव के घनश्याम है

नंदगांव के घनश्याम हैं, कृष्ण कन्हैया नाम है।
बरसाने की कुंवर लाडिली, श्री राधा के प्राण हैं।।१।।
राधे श्याम राधे श्याम, राधे श्याम राधे श्याम।
गोकुल के घनश्याम हैं, श्री गोपाल नाम है।।२।।
माखन चाखन गौ चरावन, रस बरसावन काम है।
श्याम श्याम श्याम श्याम, श्याम श्याम श्याम श्याम।।३।।
रासरचैया श्याम हैं, रास बिहारी नाम है।
रासेश्वरी लाडिली के संग, रास करत श्री धाम हैं।।४।।
घनश्याम घनश्याम, घनश्याम घनश्याम।।

नाचे नन्दलाल

नाचे नन्दलाल, नचावे हरिकी मैया नाचे०।।
मथुरामें हरि जन्म लियो है, गोकुलमें पग धरो री कन्हैया।।
झनुक-झुनक पग नूपुर बाजे ठुमुक-ठुमुक पग धरो री कन्हैया।।
धोती न बाँधे जामो न पहिरे, पीताम्वरको बड़ो री पहरैया।।
टोपी न ओढ़ें लाला फेटा न बाँधे, मोर-मुकुटको बड़ो री ओढ़ैया।।
शाला न ओढ़े दुशाला न ओढ़े, काली कमरियाको बड़ो री ओढ़ैया।।
दूध न भावे याने दही न भावे, माखन मिसरीको बड़ो री खवैया।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तेरे लाला ने ब्रज रज खाई

तेरे लालाने ब्रज-रज खाई, यशोदा सुन माई।।टेर।।
अद्भुत खेल सखन सँग खेलो, छोटो-सो माटीको ढेलो।
तुरत श्यामने मुखमें मेलो, याने गटक-गटक गटकाई।।१।।
दूध दहीको कबहुँ न नाटी, क्यों लाला तैने खाई माटी।
यशोदा समझा रही ले साँटी, याने नेक दया नहीं आई।।२।।
मुखके माँहि आँगुली मेली, निकल पड़ी माटीकी ढेली।
भीर भई सखियनकी भेली, याने देखे लोग लुगाई।।३।।
मोहनको मुखड़ो फरवायो, तीन लोक वा में दरशायो।
तव विश्वास यशोदहिं आयों, यो तो पूरण ब्रह्म कन्हाई।।४।।
ऐसो रस नहीं है माखनमें, मेवा मिसरी नहीं दाखनमें।।
जो रस है ब्रज-रज चाखनमें, याने मुक्तिकी मुक्ति कराई।।५।।
या रजको सुन नर मुनि तरसैं, बड़भागी जन नित उठ परसैं।
जाकी लगन लगी रहे हरिसे, यह तो घासीराम कह गाई।।६।।

एक दिन ग्वालिन

दोहा :- बृज गोपिन के गोष्ठ में, चरचा नन्द कुमार।
पकर नचावन को सदा, करें उपाय विचार।।

एक दिन ग्वालिन सब जुरनिया, पकड़े श्याम को।
सब सखियन मिल सलाह किये, पर श्याम हाथ नहीं आवै।।
ऐसो करो उपाय सखी, वो चोरी करतो पावै, फिरतो यशोदा पे ले जनिया।। पकड़े...
यशोदा पे ले जाय सखी, या पे लगवायेगी संटी।
एक सखि तब बोल उठी, छींके ते बाधो घंटी, चोरी करते में बजनिया।। पकड़े...
बोले स्याम घंटी से सुन तू, मेरी कहन मत टरियो।
जबतक मैं माखन नहीं खाऊँ, तबतक तू मत बजियो, माखन लेने लगे सांवरिया।। पकड़े।।
माखन चोर हात में धर लियो, मन में है रहे राजी।
जैसे मुख में माखन लियो, तैसे ही घंटी बाजी, पकड़े गोपिन ने सांवरिया।। पकड़े...
सुनरी घंटी नाय करी मैंने, तू तो नेक डरैना।
घण्टी बोली सुनहु स्याम जी, बिन घंटी भोग लगैना, मैं तो मर्यादा रखनिया।। पकड़े

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गारी मति दीजो

गारी मति दीजो मो गरीबनी को जायो है।। टेक।।
तेरो जो बिगार कियो सो तो मो सों कहो बीर, मैं तो काहू बातनको नहीं तरसायों है।
दधि की मटुकिया कुठरिया पे आन धरी, तोल तोल लीजो बीर जेतो जाको खायो है।
"सूरदास" प्रभु प्यारे, नेक हू न हूजे न्यारे, कान्हारो सपूत बड़े भाग्यन ते पायो है।।

छोटी-छोटी गइया

छोटी-छोटी गइयाँ, छोटे-छोटे ग्वाल-२, छोटो सौ मेरो मदन गोपाल-२
आगे-आगे गइयाँ, पीछे-पीछे ग्वाल-२, बीच मे मेरो मदन गोपाल-२
काली-काली गइयाँ, गोरे-गोरे ग्वाल-२, श्याम वरन मोरो मदन गोपाल-२
घास खाए गइयाँ, दूध पीवे ग्वाल-२, माखन खावे मोरो मदन गोपाल-२
छोटी-छोटी लकुटी, छोटे-छोटे हाथ-२, बंसी बजावे मेरो मदन गोपाल-२
छोटी-छोटी सखिया, मधुवन बाग-२, रास रचावे मेरो मदन गोपाल-२
छोटी- छोटी गइयाँ, छोटे-छोटे ग्वाल-२ छोटो सौ मोरो मदन गोपाल

अनूपम-माधुरी जोड़ी

अनूपम-माधुरी जोड़ी, हमारे श्याम श्यामा की।
रसीली मदभरी अँखियाँ, हमारे श्याम श्यामा की।।
मुकुट और चन्द्रिका माथे, अधर पर पान की लाली।
अहो कैसी बनी छवि है, हमारे श्याम श्यामा की।।१।।
कटीली भौंह अदा बाँकी, सुघर सूरत मधुर बतियाँ।
लचक गरदन की मन बसिया, हमारे श्याम श्यामा की।।२।।
परस्पर मिल के जब विहरें, वो वृन्दावन की कुञ्जों में।
नहीं बरनत बने शोभा, हमारे श्याम श्यामा की।।३।।
नहीं कुछ लालसा धन की, नहीं निर्वाण की इच्छा।
सभी भक्तों को दर्शन हो, हमारे श्याम श्यामा की।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राधा श्री वृषभानु दुलारी

राधा श्रीवृषभानु दुलारी, प्यारी बंसी दीज्यो मोय।टेर।।
या बंसी बिन चैन न पाऊँ, बंसी के बल गाय चराऊँ।
या के बल गिरिराज उठाऊँ, बंसी की धुन तीन लोक में, सुरनर नाग समोय।।१।।
कैसी बंसी श्याम तुम्हारी, हमने नेक ना नैन निहारी।
तुम छलिया हम भोरी भारी, झूठो नाम लगावो रे लाला, बन में खोई होय।।२।।
तुमने बंसी लई हमारी, तुम सब सुघड़ चतुर व्रज नारी।
कैसे जानूँ भोरी भारी, तनिक दही के कारण वाँ दिन, गारी दीनी मोय।।३।।
चोरी करे खाय सो गारी, यहाँ को चेरी बसै तुम्हारी।
आँख दिखावो पीरी-कारी, आधी रात भगे मथुरा ते, लाज न आवे तोय।।४।।
भगतन के हित यह देह हमारी, तुम का जानो जाति गँवारी।
बंसी तीन लोक ते न्यारी, सुर नर मुनि व्रह्मादिक जाँको पार न पायो कोय।।५।।

।। मोहन हमारे मधुबन में आया ना करो।।

मोहन हमारे मधुबन में, आया ना करो। जादू भरी ये बन्सरी, बजाया ना करो।।
सूरत तुम्हारी देख के, सलोनी साँवरी, सुनके तुम्हारी बाँसुरी, मैं हो गई बावरी।
इस बाँसुरी की टेर को, सुनाया ना करो।।१।। मोहन हमारे।।
सर पै मुकुट गल माल, कटि में काछनी सोहे। कानों में कुण्डल झूमते मनको मेरे मोहे।
सौ चन्द्रमा का रूप ले लुभाया ना करो।।२।। मोहन हमारे।।
अपनी याशोदा मैया की सौगन्ध है तुझको। माखन चुराने वाले, चित चुराया ना करो।।
जादू भरी ये बन्सरी बजाया ना करो।।३।।

डोन्ट टच माई गगरी

डोन्ट टच माई गगरी मोहन रसिया। मोहन रसिया, मेरे मन बसिया।
डोन्ट टच माई गगरी मोहन रसिया।टेर।।
आई एम कमिंग श्याम, पनिया भरन को।
यू आर कमिंग, आंनद रसिया।।१।। डोन्ट टच।।
व्हाट डु यू वान्ट, मुझे काहे को सताते हो।
व्हाई डेली व्हाई, मेरे पीछे क्यों आते हो।।२।। डोन्ट टच।।
आई एम डाटर ऑफ, दि वृज बरसाना।
यू आर द सन ऑफ, गोकुल रसिया।।३।। डोन्ट टच।।
आई एम गिव्हींग यू, दूध और लोनी।
यू आर ड्रिकिंग, आनंद रसिया।।४।। डोन्ट टच।।
द सन इज सिटिंग डाउन, द मून इज राइजिंग अप
गो टू योर होम, देखे सारी सखीया।।५।। डोन्ट टच।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

चुपके चुपके

चुपके चुपके आये श्याम, लेके ग्वाल बाल हैं। ऐसो है यशोदा मैया, तेरो नंदलाल है।
ग्वालन को संग लेके, घर में जो आ गये, माखन को खाय कर, छीको गिराय गये।
अंगूठा दिखावे चाले, टेढ़ी मेढ़ी चाल है।।१।।
मातारी यशोदा तेरो श्याम बड़ो रारी है, डगर चलत मोरी, चुनरी उतारी है।
धमकी दिखावे करे, आँख लाल लाल है।।२।।
बछड़ों को छोड़ मेरी, गैया पिलाय दियो, माखन को खाय कछु, बंदरन को खिलाय दियो।
रोज रोज देखो मेरो, घर को यही हाल है।।३।।

आज ठाढ़ोरी बिहारी

आज ठाढ़ौरी बिहारी, जमुना तट पै। मत जैयो री अकेली कोई पनघट पै।
मुकुट लटक भृकुटिन की मटक। मन गयो है अटक याके पीरे पट पै।।१।।
गुरु जन त्रास, कैसे बसें वृजवास। मन बन गयो दास, घुँघरारी लट पै।।२।।
नन्द जूकौ छौना, देख धीरज रह्योना। वीर एसौ कछु टौनां, नागर नट पै।।३।।
तजी कुल लोकलाज, गोपी गई भाज-भाज। श्याम रसिया कै रास, आज बंशीबट पै।।४।।

आज मेरे अँगना में

आज मेरे अँगना में, आओ नन्दलाल। आओ नन्दलाल आओ गोपाल।
दरशन की प्यासी, गुजरिया श्याम।। टेक।।
अँगना में आओ, मेरे माखन कू खाओ।
झूँठी साँची बतिया, सुनाओ नन्दलाल, सुनाओ गोपाल।। दरशन की।।१।।
कोरी कोरी मटकीन, में धौरी धौरी गायन कौ।
न्यारौ ही जमाय राख्यों, दही नन्दलाल, दही गोपाल।। दरशन की०।।२।।
अंग पै झँगुलिया, शीश पै लटुरिया।
दूध के दतुलिया, दिखावों नन्दलाल, दिखाओ गोपाल।। दरशन की०।।३।।
रैन नही सोवै, उठ भोर ही बिलोवे दूध।
गावै रिझावै, तोही को नन्दलाल, तोही को गोपाल।। दरशन की०।।४।।
खाओ बृजरानी को, माखन नित प्रति।
आज मो गरीबनी कौ खाओ नन्दलाल, खाओ गोपाल।। दरखन की०।।५।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पकड़े गये कृष्ण भगवान

राधा बन गई जिलाधीश और ललिता पुलिस कप्तान।
पकड़े गये कृष्ण भगवान पकड़े गये कृष्ण भगवान।। टेक।
एक सखी के घर में जाके, माखन खाने लगे चुरा के।
जाग पड़ी वो चतुर गुजरिया, पकड़े लिए दोऊ कान।।१।।
पकड़ लिए जब कृष्ण मुरारी, खुशी हुई सब बृज की नारी।
सब सखियों ने घेर लिया है, बिगड़ रही है शान।।२।।
नन्द बाबा की ड्योढ़ी पे आके, पेश किये मुलजिम को लाके।
कहे विशाखा इस मुलजिम ने बड़ा किया नुकसान।।३।।
कहे मनसुखा सुन मेरे बाबा इन सखियों का झूँठा दावा।
ऊँचा छींका हाथ न आये, हम बालक नादान।।४।।
नन्द लाल छींको मंगवायो, बीच अदालत में टंगवायो।
ऊँचो छींको हाथ न आयो, बरी हुए भगवान।।
धन-धन है प्रभु तेरी माया, तेरा भेद है किसने पाया।
ऐसी कृपा करो मेरे भगवन्, रहे चरणों में ध्यान।।

तेरा श्याम बड़ा अलबेला

तेरा श्याम बड़ा अलबेला, मेरी मटकी को मार गयो ढेला।। टेक।।
कभी गंगा किनारे, कभी जमुना किनारे। कभी वंशी बजावे अकेला, मेरी।।
कभी गउओं के संग, कभी ग्वालों के संग, कभी रास रचावे अकेला, मेरी।।
कभी सूरज के संग कभी चन्दा के संग, कभी तारों के संग अकेला, मेरी।।
कभी गोपियों के संग, कभी रुक्मिणि के संग, कभी राधा के संग अकेला, मेरी।।
कभी सन्तों के संग, कभी भगतों के संग, कभी मस्ती में खेले अकेला, मेरी।।

बाजे वंशी नाचे मोर

बाजे बंशी नाचे मोर, नटवर नागर नन्द किशोर।
राधा वल्लभ जय गोपाल, गोपी वल्लभ श्री नन्दलाल।
राधा वल्लभ जय गोपाल, गोपी वल्लभ दीनदयाल।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कालीदह लीला

कूदे जमुना में कन्हैया

कूदे जमुना में कन्हैया लेके मुरली।। टेर।।
कूद पड़े जल में बनवारी, ग्वाले रोये सारे।
कुछ तो ग्वाले घर को भागे, जसुदा जाय पुकारे।
जल में कूदो तेरो छईया, ले के मुरली।।१।।
रोवत रोवत जसुदा मईया, जमुना तट पर आई।
मुझे छोड़ कर कहाँ चले हो, छोटे कृष्ण कन्हाई।
ठाढ़ी रोवे तेरी मईया, ले के मुरली।।२।।
कृष्ण गए पाताल लोक, वहाँ नागिन बैठी पाई।
सोया नाग जगादे नागिन, बोले कृष्ण कन्हाई।
गेंद दे दे री नागिनिया, ले के मुरली।।३।।
इतनी सुनकर झट नागिन ने, नाग को दियो जगाय।
लगी फुंकार बदन भयो कारो, लिपट शीश पै जाय।
काले पड़ गए कृष्ण कन्हैया, ले के मुरली।।४।।
थोड़ा थोड़ा करके प्रभु ने, अपना बदन पसारा।
चरण पकड़ कर नागिन बोली, छोड़ो पति हमारा।
भक्त कहते नाग नथैया, ले के मुरली।।५।।

कालीदह पे खेलन

कालीदह पे खेलन आयो री मेरो वारो सो कन्हैया।।
ग्वाल बाल सब सखा सँग लै, याने गेंद को खेल रचायो री।। मेरो०।
काहे की पट गेंद बनाई, काहे को डण्डा लायो री।। मेरो०।।
रेशम की पट गेंद बनाई, चन्दन को डण्डा लायो री।। मेरो०।।
मारी गेंद, गेंद गई दह पे, वो तो गेंद के सँगहि धायो री।। मेरो०।।
सोवै नाग, नागिनी जागे, तू बालक क्यों आयो री।। मेरो०।।

वेणु गीत

प्रिय राधे प्रिय राधे, राधे राधे प्रिया प्रिया

प्रिय श्याम प्रिय श्यामा, श्यामा श्यामा प्रिया प्रिया

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मेरो कान्हा

मेरो कान्हा गुलाब का फूल,किशोरी मेरी कुसम कली।
कान्हा मेरो नन्द जूँ को छोना, श्री राधे बृषभानु-लली,
किशोरी मेरी कुसुम कली।। मेरो...
कान्हा मांगे माखन लौना, राधा भावे मिसरी की डली,
किशोरी मेरी कुसुम कली।। मेरो...
कान्हा खेलें नन्द जी के अंगना, राधे खेलें रंगीली-गली,
किशोरी मेरी कुसुम कली।। मेरो...
ब्रज निधि दर्शन की प्यासी, वोतो भटकत गली गली,
किशोरी मेरी कुसुम कली।। मेरो...

मीठे रस से भरी रे

मीठे रस से भरी रे राधा रानी लागे महा रानी लागे।
मने कारो कारो जमुनाजी रो पाणी लागे।।टेक।।
जमुनाजी तो कारी कारी, राधा गोरी गोरी, वृन्दावन में धूम मचावे बरसाने की छोरी।
ब्रज धाम राधाजू की रजधानी लागे रजधानी लागे।। मने कारो कारो.......
कान्हा नित मुरली मे टेरे, सुमिरै बारंबार, कोटिन्हि रूप धरे मन मोहन, तउ न पावे पार।
रूप रंग की छबीली पटरानी लागे पटरानी लागे।। मने कारो कारो......
ना भावे म्हाने माखनमिसरी, ना कोई और मिठाई,म्हारी जीभड़ीया ने भावे राधानाम मलाई।
वृषभानु की लली तो गुड़धानी लागे गुड़धानी लागे।। मने कारो कारो......
राधा राधा नाम रटत हैं जे नर आठों याम, तिनकी बाधा दूर करत है राधा राधा नाम।
राधा नाम से सफल जिदंगानी लागे जिदंगानी लागे।। मने कारो कारो......

गिरिराज धरण

गिरिराज धरण, प्रभु तुम्हरी शरण। गिरिराज धरण, प्रभु तुम्हरी शरण।
प्रभु तुम्हरी शरण, प्रभु तुम्हरी शरण। प्रभु तुम्हरी शरण, प्रभु तुम्हरी शरण।
गिरिराज धरण, प्रभु तुम्हरी शरण। गिरिराज धरण, प्रभु तुम्हरी शरण।
प्रभु तुम्हरी शरण, प्रभु तुम्हरी शरण। प्रभु तुम्हरी शरण, प्रभु तुम्हरी शरण।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गिरिराज के शरण में

बस एक बार आजा गिरिराज की शरण में। सर्वस्व करदे अर्पण गिरिराज की शरण में।।
जीवन की डोर सौंप दे उनके ही हाथ में। फिर भया न कोई होगा गिरिराज के शरण में।।
तू एक बार आजा...................। श्रद्धा से सिर झुकाकर...................।।
विश्वास अटल रखना.................। निर्मल हृदय रहेगा.........................।।
बस एक बार आजा गिरिराज की शरण में। सर्वस्व करदे अर्पण गिरिराज की शरण में।।

श्री गोवर्धन महाराज

श्री गोवर्धन महाराज, महाराज, तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो।

दान घाटी से प्रारम्भ

तेरे कानन कुण्डल सोह रह्यो, तेरी भृकुटि बनी विशाल, विशाल। तेरे...

पूछरी को लौठा

तेरे गले में कण्ठा सोनेको, तेरी झाँकी बनी विशाल, विशाल।। तेरे...

जतीपुरा मुखारविन्द

तोपे पान चढ़े तोपे फूल चढ़े, और चढ़े दूध की धार, हो धार।। तेरे...

राधा कुण्ड

तेरी सात कोसकी परिकम्मा, चकलेश्वर है विश्राम, विश्राम।। तेरे...
प्रभु सात कोश में रूप तेरो, संकट दूर करो मेरो।।
तुम भक्तन के सिरताज, सिरताज।। तेरे...

मैं गोवर्धन को जाउँ

मैं गोवर्धन को जाउँ मेरी बीर, नाय माने मेरो मनुवा।
सात कोसकी दै परिक्रमा, मानसी गंगा नहाऊँ मेरी बीर।।
सात सेर की करी कढ़ैया, मैं पेड़ पेड़ पै खाउँ मेरी बीर।
चकलेंश्वर के दर्शन करके, संतन नोत जिमाऊँ मेरी बीर।।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, हरि चरणन चित लाऊ मेरी बीर।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नख पर धार लियो

नख पर धार लियो गिरिराज नाम गिरिधारी पायो है।। टेक।।
सुरपति पूजा भेंट इष्ट गिरिराज पुजायो है।
सवा लाख मन सामग्री को भोग लगायों है।। नख।।
खबर भई जब स्वर्गलोक में इन्द्र रिसायो है।
सात रात दिन परलय को मेह बरसायो है।। नख।।
सब ब्रज इकट्ठा होय आप गिरिराज उठायो है।
पड़ी न ब्रज पर बूँद इन्द्र मन में घबड़ायो है।। नख।।
सुरभी गायं कर्ण घोड़ा ऐरावत लायो है।
चरणन में गिरि पड्यो क्षमा अपराध करायों है।। नख।।
धन्य धन्य ब्रजराज इन्द्र का मान घटायो है।
घासीराम ब्रजवासी ने गाय सुनायों है ।। नख।।

राधे राधे जपो

राधे-राधे जपो चले आएँगे बिहारी। आएंगे बिहारी, चले आएँगे बिहारी।।
राधा मेरी चंदा चकोर है विहारी। राधे-राधे, राधे राधे रटो चले आएँगे बिहारी।।
राधा रानी मिसरी तो स्वाद है बिहारी। राधे-राधे, राधे राधे रटो चले आएँगे बिहारी।।
राधा मेरी गंगा तो धार है विहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएँगे बिहारी।।
राधा रानी तन है तो प्राण है बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएँगें विहारी।।
राधा रानी सागर तरंग है बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएँगें बिहारी।।
राधा रानी मोहनी तो मोहन है बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएँगे बिहारी।।
राधा मेरी गोरी तो सांवले बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएँगे विहारी।।
राधा रानी भोली-भाली, चंचल बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएंगे बिहारी।।
राध रानी नथनी तो कंगन बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएंगे बिहारी।।
राधा रानी मुरली तो तान है बिहारी। राधे-राधे, राधे-राधे रटो चले आएंगे बिहारी।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बाँके बिहारी की

बाँके बिहारी की बाँकी मरोर, चित्त लीन्हा है चोर-२
बाँका मुँकुट, बाँके कुण्डल विशाल, गलहार हीरों का मोतीन की माल।
बांको ही पटका को लटका है छोर, चित्त लीन्हा है चोर-२।।
मुंदरी जड़ाऊँ जवांहरात की, वाँकी लकुटियाँ सजी हाथ की।
बाँके पीताम्बर की झलके किनोर, चित्त लीन्हा है चोर-२।।
कमलों से कोमल है वाके चरन-२, है श्याम सुन्दर ! मनोहर वरण-२।
भक्तों की प्रीत जैसे चंदा चकोर, चित्त लीन्हा है चोर-२।।
वाँकी है झांकी और वाँकी अदा-२, भक्तों के कारज संवारे सदा-२।
मो जैसे दीनों की सुनते निहोर, चित्त लीन्हा हे चोर-२।।
बाँके बिहारी की बाँकी मरौर चित्त लीन्हा है चोर-२।

रास लीला

प्रिय राधे प्रिय राधे राधे राधे प्रिया प्रिया
केशवा माधवा हे देवा मधुसूदना

सुन बरसाने वारी, गुलाम तेरो बनवारी।
तेरी पायलिया पे बाजे वांसुरिया छम-छम नाचे बिहारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
वृन्दावन के राजा होकर, छाछ पे नाचे मुरारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
बड़े-बड़े देवता द्वार पे ठाठे, तेरे द्वार गिरधारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
वृन्दावन की कुञ्ज गली में, रास रच्यो गिरधारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
गोरी कलाई में हरी-हरी चुड़ियां, पहनावत गिरधारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
बड़े-बड़े नयनों में झीना-झीना सुरमा, घायल कृष्ण मुरारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
रुठत राधे तोय मनावे, पांव पकड़ गिरधारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
राधे-राधे रटे बंसी में, नाचे अघ के हारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।
सारे जग में चर्चा होवे, राधा लगत हैं प्यारी।। गुलाम तेरो बनवारी।।

राधा नाचे कृष्ण नाचे, नाचे गोपीजन। मन मेरो बन गयो सखी री सुन्दर वृन्दावन।।

अङ्गनामङ्गनामन्तरा माधवो, माधवं माधवञ्चाऽन्तरेणाङ्गना।
इथमाकल्पिते मण्डले मध्यगः संजगौ वेणुना देवकी नन्दनः।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। सुनादे सुनादे ।।

सुनादे सुनादे सुनादे कृष्ण, बंशी की तान सुनादे कृष्णा।।
श्याम तेरी बंशी पे वारी वारी जाऊँ रे। नन्द जी के लाला तोहे विनती सुनाऊँ रे।।
पिलादे पिलादे पिलादे कृष्णा, तेरी गउँओं का दूध पिलादे कृष्णा।।
बांके बिहारी तेरी छबि मन भाई रे, दाऊ जी के भैया काहे सुध बिसराई रे।
खिलादे खिलादे खिलादे कृष्णा, तेरी माखन मिसरी खिलादे कृष्णा।।
प्रीतड़ी निभाजा छलिया साँवरे कन्हाई हो, आजा मेरे श्याम तोहे नन्द की दुहाई हो।
बजादे बजादे बजादे कृष्णा, मीठी-मीठी मुरली बजा दे कृष्णा।।
राधे कृष्णा ऽऽऽ राधे ऽऽ कृष्णा, राधे कृष्णा ऽऽऽ राधे ऽऽ कृष्णा।
वृन्दावन में रहना तो राधे कृष्ण कहना, माधव मुकुट है तो राधा प्यारी गहना।
बुलाले बुलाले बुलाले कृष्णा, वृन्दावन धाम दिखादे कृष्णा।।

।। मुरलीधरा मनमोहना ।।

मुरलीधरा मनमोहना, हे नन्दनन्दना श्री राधे माधवा।
कजरारी तेरी अँखियों में, बिजली सा जादू टोना है।
तेरे तो हसन औरों को मरन, ज्यों प्रान हाथ से खोना है।।
क्या खूबी हुस्ने बयान करूँ, तू सुन्दर श्याम सलौना है।
श्यामा सखि प्राणाधन जीवन, तू ब्रज का एक खिलौना है।। श्यामा।। मुरली।।

अभी आओ न आओ परन्तु प्रभु, तुम्हे आना ही होगा कभी न कभी।
यदि हो भक्त वत्सल प्रभु साँवरे, तुम्हे मुस्काना ही होगा, कभी न कभी।।
दया निधि रूप अनूप तेरा, दिखलाना ही होगा कभी न कभी।
भरा उलझनों से ये अन्तर मेरा, तुम्हें सुलझाना ही होगा कभी न कभी।। मुरली।।

वृन्दावन धाम नीको, ब्रज को विश्राम नीको, श्यामा अरु श्यामा नीको, मन्दिर आनन्द को।
कालीदह न्हान नीको, यमुना को नीर नीको, रेणुका को खान नीको, स्वाद नीको कन्द को।।
राधा कृष्ण कुण्ड नीको, संतन को संग नीको, गौर श्याम रग नौको, अंग युग चन्द्र को।
नील पीत पट नीको, वंशी वट तट नीको, ललित किशोरी नीको, नट नीको नन्द को।।

माथे पे मुकुट देख, चन्द्रिका की चटक देख, छबि की लटक देख, रूप रस पीजिये।
लोचन विशाल देख, गले गुंज माल देख, अधर रसाल देख, चित्त चोप कीजिये।।
कुण्डल हलन देख, अलके बलन देख, पलके चलन देख, सर्वस्व दीजिये।
पीताम्बर छोर देख, मुरली की घोर देख, साँवरे की ओर देख, देखबो ही कीजिये।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। सब द्वारन को छाड़िकै आयो तेरे द्वार।।

दोहा :- सब द्वारन को छाड़िकै, आयौ तेरे द्वार।
अहो बृषभानु की लाड़ली, मेरी ओर निहार।। ओ श्यामा मेरी।।
मोहिनी मूरत श्याम की, मो मन रही समाय।
ज्यूँ मेंहन्दी के पात में, लाली लखी न जाय।। ओ श्यामा लाली।।
गोरे मुख पै तिल बन्यौ, ताहीं करू प्रणाम।।
मानो चन्द्र बिछाय कै, पौढ़ै शालीग्राम।। बिरज मैं पौढ़े।।
कर लकुटी मुरली गहें, घुँघर वारे केश।
यह वानक मो हिय बसौ, श्याम मनोहर वेष। बिरज में श्याम मनोहर।।
राधे जूँ मेरी लाड़ली, मेरी ओर तू देख।
मैं तोही राखूँ नैन में, काजर की सी रेख।। ओ श्यामा काजर।।
मनमोहन मेरे मोहना, पलक झाँप तोहे लेऊँ।
ना मैं देखँ और को, ना तोहे देखन देऊँ।। मोहना ना तोहे।।

चम्पा तोहिमे तीन गुण, रूप रंग और बास।
ऐसौ अवगुण कौन है, भ्रमर न आवै पास।। कन्हैया भ्रमर न आवे।।
चम्पवरण तू राधिका, भ्रमर कृष्ण कौ दास।
ऐही मर्यादा जानिके, भ्रमर ना आवे पास।। किशोरी भ्रमर न आवै।।
वृषभानु की लाड़ली, तू उगती सी भोर।
तुझ बिन मुरली ना बजे, नाच सकै ना मोर।। श्री राधे नाच सकै।।
ओ बाबा के लाड़ले, नटवर नन्द किशोर।।
बेगि दरस दे दीजियो, मेरे चित्त के चोर।। ओ कान्हा मेरे चित्त के।।

आज ठाढ़ो री

आज ठाढ़ो री बिहारी यमुना तट पे, मत जइयों री अकेली कोई पनघट पे। टेर।।
मुकुट लटक भृकुटी की मटक, मन र्‍योरी अटक कटि पीरी पट पे।।२।।
नन्द जु को छोना लखि धीरज रह्यो ना, वीर ऐसो कछु टोना नटवर नट पे।।२।।
गुरुजन त्रास कैसे बसै वृजवास, मन बन गयो दास घुँघरारी लट पे।।३।।
छुटी कुल लाज गोपी आयी भाज भाज, रास रसिया को रास आज वंशीवट पे।।४।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्याम तेरे मिलने

श्याम तेरे मिलने का, सतसंग ही बहाना है।
तुम्ही मेरे माता-पिता, तुम्ही मेरे बन्धु सखा।
दुनिया वाले क्या जाने, मेरा दिल तो दिवाना है।। श्याम...
वृन्दावन की गलियों में, श्याम श्याम गाऊँ मैं।
राधे राधे गाऊँ मैं, श्याम श्याम गाऊँ मैं।
जब भी तुम बुलाओगे, मुझे दौड़े चले आना है।। श्याम...
मथुरा में ढूँढ़ा तुझे, गोकुल में पाया है।
वृन्दावन की गलियों में, मेरे श्याम का ठिकाना है।। श्याम...
सूरज में ढूँढ़ा तुझे, चंदा में पाया है।
तारों की झिलमिल में, मेरे श्याम का ठिकाना है।। श्याम...
ग्वालों में ढूँढ़ा तुझे, गोपियों में पाया है।
राधाजी के हृदय में, मेरे श्याम का ठिकाना है।। श्याम...
जंगलों में ढूँढ़ा तुझे, मन्दिरों में पाया है
भक्तों के हृदय में, मेरे श्याम का ठिकाना है।। श्याम...

श्यामाजू मेरी नैया

श्यामाजू मेरी नैया उस पार लगा देना, अबतक तो निभाई है आगे भी निभा देना।टेक।।
दलबल के साथ माया घेरे जो मुझे आकर, तुम देखती न रहना मुझे आके बचा लेना।।
सम्भव है झञ्झटों में मैं तुमको भूल जाऊँ, मेरी श्यामा कहीं तुम भी मुझको न भुला देना।।
बनकर के मोर श्यामा वनवनमें नाचा करेंगे, तुम श्यामरूप बनकर उस वनमें डटा करना।।
बनकर के पपीहा हम पी पी रटा करेंगे, तुम स्वाति बूँद बनकर प्यासों पे दया करना।।

दरबार में राधारानी के

दरबार में राधारानी के, दुख दर्द मिटाए जाते हैं।
दुनियाँ के सताए लोग जहाँ, सीने से लगाये जाते हैं।। टेक।।
संसार नहीं है रहने को, जहाँ दुःख ही दुःख है सहने को।
भर-भर के प्यालें अमृत के जहाँ रोज पिलाये जाते हैं।।१।। दरबार में।।
पल पल में आस निरास भई, छिन छिन घटती पल पल बढ़ती।
दुनिया जिनको ठुकरा देती, वे गोद बिठाए जाते है।।२।। दरबार में।।
जो राधा राधा कहते हैं, वो प्रिया शरण में रहते हैं।
करती है कृपा वृषभानु सुता, वो महल बुलाए जाते है।।३।। दरवार में।।
वो कृपामयी कहलाती हैं, रसिकों के मन को भाती है।
दुनियाँ में जो बदनाम हुए, पलकों पे बिठाए जाते है।। दरबार में।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मैंने रटना लगाई रे

मैंने रटना लगाई रे राधा नाम की।। टेक।।
मेरी पलको मे राधा मेरी अलकों में राधा। मैंने माँग भराई रे राधा नाम की।। मैंने०
मेरे नैनों में राधा मेरे बैनों मे राधा। मैंनें वेनीं गुथाई रे राधा नाम की।। मैंने०
मेरी दुलरी में राधा मेरी चुनरी में राधा। मैंने नथनी सजाई रे राधा नाम की। मैंने०
मेरे चलने में राधा मेरे हलने में राधा। कटि किंकणी बजाई रे राधा नाम की। मैंने०
मेरे दांये बांये राधा मेरे आगे पीछे राधा। रोम रोम रस छाई रे राधा नाम की। मैंने०
मेरे अंग अंग राधा मेरे संग संग राधा। "गोपाल" वंशी बजाई रे राधा नाम की। मैंने०

हे स्वामिनि

हे स्वामिनि मम अभिलाष यही, प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करूँ।
बिठला के तुम्हें मन मन्दिर में, तेरी सेवा का सुख पाया करूँ।।
ब्रज के जिस पथ पर हे श्यामा, प्रियतम के संग विचरती हो।
उस पावन पथ को हे श्यामा, पलकों से नित्य बुहारा करूँ।।
जिन चरणों का नित ध्यान धरैं, तेरे प्रीतम और प्यारी सखियाँ।
उन चरणों को इन नैनों की, गगरी के जल से पखारा करूँ।।
माया के चिन्तन में श्यामा, अब जीवन यूँ ही गुजरता है।
फिर भी इस जीवन को श्यामा, यादों में तेरी बिताया करूँ।।
दासी की अब अभिलाष यही, चरणों की तेरी सेवा मिले।
हे प्यारी तेरी इस प्रीति पे, तन मन और प्राण भी वारा करूँ।।

मेरी आस यही है

मेरी आस यही है श्री राधे, तेरे महलन में मेरा वास रहे।
श्रीचरण कमल में रह पाऊँ, हरदम सेवा की प्यास रहे।।
मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी सेवा ही मेरा काम रहे।
मुझे और किसी की चाह नहीं, हरदम सेवा की प्यास रहे।। मेरी आस।।
मैं दासी बनूँ किशोरी तेरी, चरणों में लगन रहें श्यामा मेरी।
दे देना जगह अपने चरणों में, प्रिया आपकी सेवा मेरे पास रहे।। मेरी आस।।
निशदिन तेरी सेवा पाती रहूँ, कुञ्जन में सोहनी लगाती रहूँ।
जब रास रचाओ मेरी प्यारी, सखियों में मेरा निवास रहे।। मेरी आस।।
तुम कर दो कृपा अब श्रीराधा, कट जायेगी मेरी सब बाधा।
सब ओर से मन को हटा लेना तेरे चरणों में मेरा ध्यान रहे।। मेरी आस।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मैं तो आई श्रीवृन्दावन

मैं तो आई श्रीवृन्दावन धाम, किशोरी तेरे चरणों में।
किशोरी तेरे चरणों में, श्यामा जू तेरे चरणों में।।
ब्रज वृन्दावन की महारानी, मुक्ति यहाँ पर भर रही पानी।
तेरे द्वारे पड़े चारो धाम, किशोरी तेरे चरणों में।।१।।
कृपा दृष्टि की कोर करो राधे, दीन जनन की और ढरो राधे।
मेरी विनती है आठों याम, किशोरी तेरे चरणों में।।२।।
बाँके ठाकुर की ठकुरानी, वृन्दावन जिनकी रजधानी।
तेरे चरण पलोटे श्याम, किशोरी तेरे चरणों में।।३।।
करो कृपा ना कीजै देरी, सखी लघु चरनंन की चेरी।
तेरे चरणों में है विश्राम, किशोरी तेरे चरणों में।।४।।
मुझे बना लो अपनी दासी, चाहत नित ही महल खवासी।।
मुझे न जग सो काम, किशोरी तेरे चरणों में।।५।। मैंतो आई।।

मन जैयो मत छोड़

मन जैयो मत छोड़ राधारानी के चरण।
वृजरानी के चरण, सुखदानी के चरण।
बाँके ठाकुर की, बाँकी ठकुरानी के चरण।।
वृषभानु की किशोरी, सुनी गैया हू ते भोरी।
प्रीति जानि के हूँ थोरी, तोहि राखेंगी शरण।।१।।
जाकूँ श्याम उर हेर, राधे राधे राधे टेर।
बाँसुरी में बेर-बेर, करें नाम से रमण।।२।।
भक्त प्रेमिन बखानी, जाको महिमा रसखानी।
मिले भीख मनमानी, करे प्यार से वरण।।३।।
ऐरे मन मतवारे, छोड़ दुनियाँ के द्वारे।
राधा नाम के सहारे सौंप जीवन मरण।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मैं तो रटूँगी राधा नाम

मैं तो रटूँगी राधा नाम, ब्रज की गलियन में।
रहूँ खोई खोई आठों याम, ब्रज की गलियन में।।
इत उत डोलूँ कह कह राधा, मिट जाये जीवन की बाधा।
और मिल जाये घनश्याम, ब्रज की गलियन में।।१।।
उलझ उलझ ब्रज-करीलन में, सेवा कुञ्ज में या निधिवन में।
हो जाय जीवन की शाम, ब्रज की गलियन में।।२।।
अब तो चाह यही सखि मन की, धूलि मिल मोहि हरिचरणन की।
और निकले तन सों प्रण, ब्रज की गलियन में।।३।।
कहीं मिल जायें घनश्याम, ब्रज की गलियन में।
मैं तो रटूँगी राधा नाम, ब्रज की गलियन में।।४।।

तेरे चरण कमल में

तेरे चरण कमल में श्याम, लिपट जाऊँ रजबन के
निशि दिन तेरा दर्शन पाऊँ, हरष-हरष के हरिगुण गाऊँ।
मेरी नस-नस बस जा श्याम, बरस जावो रस बन के।।१।। तेरे चरण...
छिन-छिन तेरा सुमिरन होवे, सब कुछ तुमको अर्पण होवे।
मैं तो हो गई तेरी श्याम, मुरलिया की धुन सुन के।।२।। तेरे चरण...
अहंकार तजे मन मेरा, श्यामहि श्याम रटे मन मेरा।
हरि निश दिन आठों याम रुके न मन के मन के।।३।। तेरे चरण...
श्याम सुन्दर से लगन यह लागी, प्रीत पुरानी दिल में जागी।
मैं तो आ गई तेरे धाम, सुने है हरि पतितन के।।४।। तेरे चरण...

मैंने मेंहदी रचाई रे...।

मैंने मेंहदी रचाई रे, कृष्ण तेरे नाम की। मैंने बिंदिया सजाई रे, कृष्ण तेरे नाम की।।
मेरी चूड़ियों पै कृष्ण, मेरी चुनरी पै कृष्ण, मैंने नथनी गढ़ाई रे, कृष्ण तेरे नाम की।।
मेरे नयनों में गोकुल वृन्दावन, मेरे प्राणों में मोहन मनभावन।।
मेरे ओठों पै कृष्ण, मेरे हृदय में कृष्ण, मैंने ज्योति जगाई रे, कृष्ण तेरे नाम की।।
अब छाया है कृष्ण, मेरे अंग अंग में, मेरा तन मन रंगा है रे, कृष्ण तेरे नाम की।।
मेरा प्रियतम है कृष्ण, मेरा जीवन है कृष्ण, मैने माला बनाई रे, कृष्ण तेरे नाम की।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वृन्दावन में राधे-राधे

वृन्दावन में राधे-राधे।।
किशोरवन, सेवाकुंज में राधे-राधे। दान गली, मान गली में राधे-राधे।
कुंजगली, गली गिरारे में राधे-राधे। द्वार मंदिरन, सब कुंजन में राधे-राधे।
हाट-बाट, घाट-कुंज में राधे-राधे। जमुना तट, वंशी वट पै राधे-राधे।
गोपेश्वर, पानी घाट पै राधे-राधे। श्याम कुटी, भजन कुटी पै राधे-राधे।
रमणरेती, वन विहार में राधे-राधे। गउ घाट, कालीदह पै राधे-राधे।
सूर घाट, चीर घाट पै राधे-राधे। विहार घाट, युगल घाट पै राधे-राधे।
केशी घाट, धीर समीरे पै राधे-राधे। मथुराजी, जनम भूमि में राधे-राधे।
द्वारिकाधीश, विश्रामघाट पै राधे-राधे। रंगेश्वर, भूतेश्वर पै राधे-राधे।
श्रीमधुवन, वहुलावन में राधे-राधे। गोवर्धन, मानसी गंगा में राधे-राधे।
राधाकुंड, ललिताकुंड पै राधे-राधे। कृष्णकुंड, कुसुमसरोवर में राधे-राधे।
चन्द्रसरोवर, श्याम ढाक में राधे-राधे। जतीपुरा में, पुछरि लौठा मे राधे-राधे।
विमल कुंड, कामेश्वर में राधे-राधे। मेहराने, चिकसौली में राधे-राधे।
मोर कुटी, गली रंगीली में राधे-राधे। पीरी पोखर, भानोखर में राधे-राधे।
ऊँचे गाँव, कमई करहला में राधे-राधे। प्रेम सरोवर, नंद गांव में राधे-राधे।
कोकिल वन, भांडीर बन में राधे-राधे। मांट गांव, मानसरोवर में राधे-राधे।
बलदाउ, महावन में राधे-राधे। ब्रह्माण्ड घाट, श्रीगोकुल में राधे-राधे।
रावल गांवं, वारह वन में राधे-राधे। वन-उपवन, वृक्ष लतन में राधे-राधे।
डार-डार, पात-पात पै राधे-राधे। फूल-फूल, पंच- तत्व में राधे-राधे।
ब्रज-कण-कण, ब्रजमंडल में राधे-राधे। सब मिल बोलो, प्रेम से बोलो राधे-राधे।
प्रेमी बोलो, रास प्रिया अलि राधे-राधे। वृन्दावन में राधे राधे।।

मेरा छोटा सा संसार

मेरा छोटा सा संसार, हरि आ जाओ इक बार।
मेरी नैया पार लगाजाओ, मेरी बिगड़ी आके बना जाओ।
मेरा बेड़ा पार लगाजाओ, मेरी बिगड़ी आके बना जाओ।।
लाखों को दर्श दिखाया है, प्रभु मुझको क्यों तरसाया है।
यै कैसी तुम्हारी माया है, नित बहती है असुंअन धार।।१।।
जब याद तुम्हारी आती है, तन मन की सुध बिसराती है।
रह-रह के मुझे तड़फाती है, तन मन धन दूँ सब वार।।२।।
मुझको बिछुड़े युग बीत गये, क्यों रूठ पभु मेरे मीत गये।
मैं हार गया तुम जीत गये, अब दर्शन दो साकार।।३।।
हरि आ जाओ इक बार, हरि आ जाओ इक बार।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

इक दिन वो भोला भण्डारी

इक दिन वो भोला भण्डारी, बन के ब्रज की नारी, गोकुल में आ गये।
पार्वतीजी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी गोकुल में आ गये।
पार्वती से बोले, मैं भी चलूंगा तेरे संग में।
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूंगा तेरे साथ में।
रास रचेगी, ब्रज में भारी, हमें दिखाना प्यारी।। गोकुल.....
ऐ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ तुम्हे रास में।
मोहन के विना वहां, कोई पुरुष न होवे रास में।
हंसी करेगी, ब्रज की नारी, मानो बात हमारी।। गोकुल.....
ऐसा बना दे मुझको, कोई न जाने इस राज को।
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना ब्रज राज को।
लगा के बिंदिया, पहन के सारी, चाल चले मतवारी।। गोकुल.....
हंस के सती ने कहा, बलिहारी जाऊँ इस रूप में।
एक दिन तुम्हारे लिये, आये थे मुरारी इस रूप में।
नारी रूप बनाया हरि ने, आज तुम्हारी बारी।। गोकुल.....
देखा जब श्याम ने, समझ गये सब राज रे।
ऐसी बजाई वंशी, सुधवुध भूले भोला नाथ रे।
सिर से खिसक गई जब सारी, मुसकाये बनवारी।। गोकुल.....
ऐ मेरे भोले शम्भु, गोपेश्वर हुआ तेरा नाम रे।
ऐ मेरे भोले शम्भु, वृन्दावन तेरा धाम रे।
''हरिशरण'' की सुन लो बिनती, राखो लाज हमारी।। गोकुल...

बाँके बिहारी लाल

बाँके बिहारी लाल तेरी जय होवे, बाँके बिहारी लाल तेरी जय होवे।
तेरी जय होवे, तेरी जय होवे, तेरी जय होवे, तेरी जय होवे।
बाँके बिहारी लाल तेरी जय होवे, भक्तन के रखपाल तेरी जय होवे।।
चार वेद तेरा जस गावें, नेति-नेति सदा पुकारें। फिर भी न पावे पार, तेरी जय होवे।। बाँके।।
दुख संकट के तुम रखवारे, भक्तन की आंखों के तारे। दूर करो अन्धकार, तेरी जय होवे। बाँके।।
हम दुखियारे द्वार तिहारे, बैन विना यह विनय पुकारे। कर भवसागर से पार, तेरी जय होवे। बाँके।।
हम पागल हैं दुनिया वाले, स्वार्थ के हैं सब मतवाले। अव तो आकर थाम, तेरी जय होवे। बाँके।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दूर नगरी

दूर नगरी, बड़ी दूर नगरी-२

कैसे आऊँ मैं कन्हाई तेरी गोकुल नगरी, बड़ी दूर नगरी।
रात को आऊँ कान्हा डर मोहे लागे, दिन को आऊँ तो देखे सारी नगरी।।
दूर नगरी, बड़ी दूर नगरी-२

सखी संग जाऊँ कान्हा शर्म मोहे लागे, अकेली आऊँ तो भूल जाऊँ डगरी।।
दूर नगरी, बड़ी दूर नगरी-२

धीरे-धीरे चलूँ तो कमर मेरी लचके, झटपट चलूँ तो छलकाए गगरी।।
दूर नगरी, बड़ी दूर नगरी-२

मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, तुम्हरे दरस बिन मैं तो हो गई बावरी।।

दूर नगरी, बड़ी दूर नगरी-२

तेरी पार करेंगे नैया

तेरी पार करेगे नैया भज मन कृष्ण कन्हैया।
अर्जुन के रथ हाँकन वारे, यशोदाजी के प्राण पियारे, ये तो मनहर मुरलीबजैया।।
गोपिन के संग रासरचायो, कामदेव याने मार भगायो।। ये तो नाचत ताता थैया।।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, गज की टेर सुनी मेरे नटवर, ये तो गजके फन्द छुड़ैया।।
द्रुपद सुता दुष्टों ने घेरी, आए नाथ करीना देरी, ये तो भक्तन दुःख हरैया।।
विप्र सुदामा तन्दुल लाए, प्रेम सहित हरि भोग लगाये, कहकर भैया भैया।।
"मीरा" के प्रभु गिरधरनागर, "सूर" श्याम मेरे नटवरनागर, ये तो घट घट वास करैया।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मोहे आन मिलो

मोहे आन मिलो धनश्याम, बहुत दिन बीत गये।
राह तकत ये हारी अखियाँ, फिर भी आस लगायें अखियाँ।
अब आई जीवन शाम, बहुत दिन बीत गये।।
राधा की अँखियन के तारे, मनहर मोहन नन्द दुलारे।
मन में बसो मेरे श्याम, बहुत दिन बीत गये।।
ओ चित्तचोर मुरलिया बजादे, तन-मन की सब सुध बिसरादे।
भक्तन के सुखधाम, बहुत दिन बीत गये।।
नरसी की थी हुण्डी तारी, मुझ को केवल आस तिहारी।
मीरा के गिरधर श्याम, बहुत दिन बीत गये।।
गणिका गीद्ध अजामिल तारे, पल में कितने अधम उबारे।
तेरा भव भयहारी नाम, बहुत दिन बीत गये।।
तू दाता है मैं हूँ भिखारी, इष्ट देव तूँ मैं हूँ पुजारी।
मेरे विकल भये हैं प्राण, बहुत दिन बीत गये।।

नैया ले चल परली पार

नैया ले चल परली पार, खिवैया ले चल परली पार।
जहाँ विराजे राधा रानी, अलबेली सरकार।। नैया ले चल
गुण अवगुण सब तेरे अर्पण, पाप पुण्य सब तेरे अर्पण,
बुद्धि सहित मन तेरे अर्पण, यह जीवन भी तेरे अर्पण।
मैं तेरे चरणों की दासी, मेरे प्राण अधार।। नैया ले चल।।
तेरी आस लगा बैठी हूँ, लज्जा शील गवाँ बैठी हूँ।
अपना आप लुटा बैठी हूँ, आँखें खूब पका बैठी हूँ।
साँवरिया मैं तेरी रागनी, तू मेरा मल्हार।। नैया ले चल।।
जग की कुछ परवाह नहीं है, तेरे बिना कोई चाह नहीं है,
कोई सूझती राह नहीं है, प्रीतम बिन कोई चाह नहीं हैं।
मेरे प्रीतम मेरे माँझी, कर दो बेड़ा पार।। नैया ले चल।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आनन्द घन जहाँ बरस रहा है, पत्ता-पत्ता-हर्ष रहा है,
पी पी कह कोई कर्ष रहा है, दास बेचारा तरस रहा है।
बहुत हुई अब हार गई मैं, क्यों छोड़ो मँझधार।। नैया ले चल।।

ऐसो रास रच्यो

ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार।
घुंघरू खूब छमाछम बाजैं, बजने बिछूवा बहुतै बाजैं,
रवा कौंधनी केहू बाजैं, अँग अँग मे गहना बाजैं, चुरियन की झनकार।
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार।।१।।
बाजे भाँति भाँति के बाजैं, झाँझ पखावज दुन्दुभि बाजैं।
सांरगी औ महुवर बाजैं, बंसी बाजे मधुर-मधुर बाजै बीना के तार।
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार।।२।।
राधा मोहन दै गलबैयाँ, नाचैं संग-संग लै फिरकैंयाँ।
व्यार चलै शीतल सुख दैंया, जामा पटुका लहँगा फरिया, करैं सनन सनकार।
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार।।३।।

श्याम तेरी बंशी

श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे। बजे धीरे-धीरे जमुना के नीरे।। श्याम...
इत मथुरा उत गोकुल नगरी। बीच में यमुना बहे धीरे-धीरे।। श्याम...
इत मधु मंगल उत श्रीदामा। बीच में कान्हा चले धीरे-धीरे।। श्याम...
इतमें ललिता उतमें विशाखा। बीच में राधा चले धीरे-धीरे।। श्याम...
कदम की डारी पर झूला परो है। राधा और मोहन झूले धीरे-धीरे।। श्याम...
हम सब आये तेरी शरण में। हमको भी दर्शन मिले धीरे-धीरे।। श्याम...

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वो मोहन हैं तभी तो...

वो मोहन हैं तभी तो, मुस्कुराकर लूट लेते हैं।
टेढ़ी टेढ़ी सी चितवन में, फंसाकर लूट लेते हैं।। टेक।।
वे मरने चाहने वालों को, यूँ ही बहाल करते हैं।
कभी मजबूर करते हैं, कभी कंगाल करते हैं।। १।।
न जाने अपने भक्तों का, ये क्या क्या हाल करते हैं।
वे खुश होते हैं तो, मुस्कुराकर लूट लेते हैं।। २।।
करे जब मेहरबानी तो, गदाई बख्श देते हैं।
अगर नाराज हों तो, बादशाही बख्श देते हैं।। ३।।
मुहब्बत की नजर से, शहंशाही बख्श देते हैं।
अगर अपना बनाना हो, तो सब कुछ लूट लेते हैं।। ४।।
किसी को श्याम ने जलवा, दिखाकर खूब लूटा हैं।
किसी को तान वंशी की, सुना कर खूब लूटा हैं।। ५।।
वो एक तीर से दो दो, शिकार करते हैं।
अदायें नाज से पागल, बनाकर लूट लेते हैं।। ६।।
मेरी न मानो तो दिल, लगाकर देख लो सखियों।
जो हो तकदीर तेज, आजमा कर देख लो सखियों।। ७।।
कलेजे पर जरा सा तीर, खाकर देख लो सखियों।
जो दिल इसको पसंद आये, उसी को लूट लेते हैं।। ८।।
वो मोहन हैं तभी तो, मुस्कुराकर लूट लेते हैं।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नीली छतके पीछे बैठा

नीली छतके पीछे बैठा, जानें कौन मदारी।।
जैसे जैसे नाँच नचाये, नाचे दुनियाँ सारी।।
निराकार कोई कहता है, कोई कुछ कुछ रूप बताये।
कोई कहे वो वेश बदलकर, धरती पर आजाये।।
कोई कहे वो है अनदेखा, ना पहचाना जाये।
वो अनजानी एक पहेली, ना सुलझाई जाये।। १।।
कहते हैं उसकी आखों, हैं सूरज, चाँद, सितारे।
कब-कब हम करते हैं क्या-क्या, पल-पल हमें निहारे।।
मछली को क्या लेना इससे, वो सागर के धारे।
उस शक्ति की भक्ति करले, ओ बन्दे मतवारे।।२।।
सुनते हैं उसने हैं बनाये, धरती गगन समन्दर।
पल-पल सबको नाँच नचाये, है कोई छिपा कलन्दर।।
वो मालिक छिपकर बैठा है, हर इंसान के अन्दर।
प्रेम भाव से सबको मिलना, इस दुनियाँ में सिकन्दर।।३।।

हे ! वृन्दावन के मधुर श्याम

हे ! वृन्दावन के मधुर श्याम, रसिकेन्द्र मौलि रस मुरलीधर।
करुणाकर हो तव कृपा यदि, पहुँचा दो राधा चरणों मे।।१।।
मैं सिसक रहा मैं तड़फ रहा, नहिं चैन मुझे दिन रैन प्रभो
इस दीन दशा पर दया करो, पहुँचा दो राधा चरणों में।।२।।
हे राधावर जन मन मोहन, हे शुक सनकादिक के जीवन।
मैं चरण पकड़ हा हा खाऊं, पहुँचा दो राधा चरणों में।।३।।
मेरे जनम-जनम के जप-तप का, हरि कथा श्रवण ध्यानादिक का।
यदि फल प्रदान करना चाहो, पहुँचा दो राधा चरणों में।।४।।
उपचार हेतु भव रोगों के, तव चरण-शरण को ग्रहण किया।
यदि नही सफलता मिली तुम्हें, पहुँचा दो राधा चरणों में।।५।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सांसो का ये खजाना

सांसो का ये खजान-ऐसे ही ना लुटाना।
जीवन बड़ा हैं अनमोल-बोल बोल राधे श्याम बोल।।
ये दुनियां बड़ी निराली है, किसी की ना होने वाली है।
सुख-दुख के हर ताले की, उसी के हाथें मे ताली है।
इन्ही मे खो ना जाना, मन को ना फंसाना।।
जीवन बड़ा है अनमोल, बोल-बोल राधे श्याम बोल।।१।।
रास्ता कठिन ये तेरा है, तम का घना अन्धेरा है।
माया की चली आंधी है, कलियुग ने डाला डेरा है।
तू नही घबराना, हरिनाम गाते जाना।।
जीवन बड़ा है अनमोल, बोल बोल राधे श्याम बोल।।२।।
जिसने उसे पुकारा है, उसका लिया सहारा है।
उसकी जीवन नौका को, प्रभु ने स्वयं तारा है।
प्रभु को ना भुलाना, यही तो समझना।।
जीवन बड़ा है अनमोल, बोल-बोल राधेश्याम बोल।।३।।

मैं श्याम नाम का दीवाना

मैं श्याम नाम का दीवाना, मुझे वृन्दावन दिखला दो ना।
जिस मन-मोहन ने मोह लिया, वो मन मोहन दिखला दो ना।।
जहां मधुर मुरलिया बजती थी, जहां राधा श्याम से मिलती थी।
मुझको प्यारा वा वंशीवट, वो बन मधुबन दिखला दो ना।।
जहां रास रचाने वाला था, दुनियां को नचाने वाला था।
वो यमुना-तट, वो कुंजगल, वो श्री निधिवन दिखला दो ना।।
गिरिवर को जिसने उठाया था, वर्षा से ब्रज को बचाया था।
वो सुन्दर-सुन्दर गिरिधारी, वो गोवर्धन दिखला दो ना।।
जहां बेटे ने मैया को रांधा था, जहां मैया ने ब्रह्म को बांधा था
वो ऊखल बन्धन दामोदर, वो यमलार्जुन दिखला दो ना।।
जो ग्वाले माखन खाते थे, चोरी से घर मे जाते थे।
वो तोष भद्र, वो श्रीदामा, वो मधुमंगल दिखला दो ना।।
जहां गौयें चारा चरती थीं, जहां गोपों की टोली चिरती थी।
वो अघमोचन, वो ब्रह्ममोहन, वो बन भोजन दिखला दो ना।।
जो नाग पे नाचा करता था, जो चीर चूराया करता था।
वो मोरमुकुट, वो भौं की मटक, कुण्डल की लटक दिखला दो ना।।
अब और कहां तक धीर धरुं, इस मन को कैसे बस में करुं।
जो गन्ध बसी मेरे नस-नस में, वो गन्ध पवन दिखला दो ना।।

Devavani Parishad New Delhi

मुरली बजाने वाले

मुरली बजाने वाले, दिल में हमारे आजा।।टेक।।
दर्शन दिखाके मोहन, तन की तपन बुझा जा।
हे नन्द के दुलारे, क्यों छुप गया है प्यारे।
अखियाँ दरश की प्यासी, बाँकी छवि दिखाजा।।१।।
शिर मोर मुकुट वाला, बनमाला गले में आला।
चढ़कर कदम की डाली, मुरली मधुर बजाजा।।२।।
मथुरा अयोध्या काशी, जगदीश पुरीवासी।
सब तीर्थ बनके मोहन, दिल में मेरे समाजा।।३।।
कमला प्रभो फंसी है, जगजाल में धसी है।
प्रभु हूँ तेरे सहारे, बन्दी मेरी छुड़ाजा।।४।।

मुरली बंजा के मोहन

मुरली बजाके मोहन क्यों कर लिया किनारा।। स्थाई।।
जमुना तू ही बता दे, छलिया मेरा कहाँ है।
तू भी छली गई है, कहती है नील धारा।।१।। मुरली।।
मधुवन तू ही बता दे, रसिया मोहन कहाँ है।
तू भी झुलस गया है, उनकी विरह का मारा।।२।। मुरली।।
ढूँढ़ा गली गली में, ढूँढा भवन भवन में।
दिल में यही तड़फ है, दर्शन मिले तुम्हारा।।३।मुरली।।
दुनिया कहे दिवाना, पागल कहे जमाना।
मैं तुमको भूल जाऊँ, मुझको नहीं गंवारा।।४।मुरली।।
मुझको क्या खबर थी, बर्वाद यूँ करोगे।
अपनों से हाय कैसा, व्यवहार है तुम्हारा।।५।। मुरली।।
मीरा की पीर कोई, व्याकुल हृदय ही जाने।
वो क्या समझ सकेगा, जिसे हो न गम तुम्हारा।। मुरली।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तू है मोहन मेरा

तू है मोहन मेरा, मैं दिवानी तेरी, मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है।
छोड़ दी मैंने किश्ती तेरे नाम पे, इसे पार लगाना तेरा काम है।। स्थाई।।
तू है शाहों का शाह, मैं हूँ दर की गदा, आज सुननी पड़ेगी मेरी वह सदा।
मस्त हरदम रहूँ, मस्ती उतरे नहीं, ऐसा जाम पिलाना, तेरा काम है।। १।।
मैंने दिल दिया तुम दिल्लगी कर गए, हम रोते रहे हँस के तुम चल दिए।
मन की नगरी में, विरह की अग्नि लगी, इस लगी को बुझाना, तेरा काम है।।२।।
दर्द तूने दिया तो अपने नाम का, है इलाज जिसका दर्शन हो घनश्याम का।
अपने नैनों से घायल किया सांवरे, अब दवा भी लगाना तेरा काम है।।३।।
या मैं जिन्दा रहूँगी या मैं मर जाऊँगी, वदनाम तुमको मैं कर जाऊँगी।
होगी वदनामी किसकी यह तुम सोच लो, अब आना न आना, तेरा काम है।।४।।
तू है ठाकुर मेरा मैं पुजारिन तेरी, तू है दाता मेरा मैं भिखारिन तेरी।
जब दर पे तुम्हारे मैं आ ही गई, लगी दिल की बुझाना तेरा काम है।।५।।

सन्तों का सहारा

सन्तों का सहारा नाम राधे-राधे बोल। रसिको का पियारा नाम, राधे -राधे बोल।।
मधुर-मधुर नाम राधे-राधे बोल। पावन-पावन नाम, राध-राधे बोल।।
बंशी में पुकारे श्याम, राधे-राधे बोल। भक्तों का प्यारा नाम राधे-राधे बोल।।
प्रिय राधे प्रिय राधे, राधे-राधे प्रिया-प्रिया। प्रिय श्यामा प्रिय श्यामा, श्यामा-श्यामा, प्रिया-प्रिया।।

गोपाल सहारा तेरा

गोपाल सहारा तेरा है, नन्दलाल सहारा तेरा है।
तू बंशी बजाने वाला है, रास रचाने वाला है।।
तू माखन चुराने वाला है, तू गाय चराने वाला है।
तू सबको रिझाने वाला है, गोपाल सहारा तेरा है।।

जय जय राधा रमण हरि बोल

जय जय राधा रमण हरि बोल। जय जय राधा रमण हरि बोल।।
जय जय राधा रमण - जय जय राधा रमण।।
नव नागर नवल छैल रसिया - प्यारो कान्हा है मन बसिया।
करे कालिन्दी कूल किलोल - जय जय राधा रमण हरि बोल।।१।।
अँखियन काजर मृग छोना सा - मुसकनि में जादू टोना सा
दोऊ रस के भरे हैं कपोल - जय जय राधा रमण हरि बोल।।१।।
व्रज नाचे इसकी थिरकन पै - कजरीली तिरछी चितवन पै।
शुक दास बिके बिन मोल - जय जय. राधा रमण हरि बोल।।३।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। चक्र सुदर्शन धारी ।।

चक्र सुदर्शन धारी, यशोदा तेरो गिरधारी।
नया-नया नित रूप बनावे, गली-गली में धूम मचावे।
नटखट श्याम बिहारी, यशोदा तेरो गिरधारी।।१।।
ग्वाल बाल संग लेकर आवे, माखन चोर-चोर कर खावे।
छुप-छुप खोल किवाड़ी, यशोदा तेरो गिरधारी।।२।।
जल भरने जब तट पर जावे, श्याम खड्यो पनघट पर पावे।
रोके डगर हमारी, यशोदा तेरो गिरधारी।।३।।
कभी मुरलिया तान सुनावे, कभी कुंज में हमें बुलावे।
हम पर घर की नारी, यशोदा तेरो गिरधारी।।४।।
श्याम नहीं अब बस में आवे, जादूगर का खेल दिखावे।
"बावरी" बनगई सारी, यशोदा तेरो गिरधारी।।५।।

ओ श्याम छोड़ बृज को

ओ श्याम छोड़ बृज को, मन में मेरे समा जा।
सुन्दर सी छवि तुम्हारी, करके दया दिखा जा।।
यमुना के नीर में जो, मिलती है याद तेरी।
वह याद आँसुओं में, आकर मेरे जगा जा।।
मधुबन का खेल तेरा, सुनता रहा हूँ भगवन्।
वह खेल दास के घर, आंगन में तू करा जा।।
कुंजन में घट गिराकर, गोरस को लूटता था।
स्वागत है श्याम तेरा, भरपेट आज खाजा।।
बृज की जो रास तेरी, जन-जन को भा रही है।
बह रास आज चाहे, सपनों में तू सजा जा।।
सत्संग भजन औ कीर्तन, दिन रात हो रहे हैं।
धुन "बावरी" लगाकर, बंशी मधुर बजा जा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राधे तेरे चरणों की

राधे तेरे चरणों की, यदि धूल ही मिल जाये। सच कहता हूँ मेरी तकदीर बदल जाये।।
सुनते है तेरी रहमत, दिन रात बरसती है। एक बूंद ही मिल जाये, दिल की कली खिल जाये।।
ये मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा नाम जपूँ। जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचला जाये।।
नजरों से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना। नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल ही सम्हल पाये।।
राधे मेरे जीवन में, बस एक तमन्ना है। तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये।।

दुनियां का बन कर देख लिया

दुनियां का बन कर देख लिया, राधा का बन कर देख जरा।।
राधा नाम में कितनी शक्ति है, इस राह पै चल कर देख जरा।। टेक।।
दुनिया के चक्कर में फंसकर, कई जन्म यूँही बरबाद किये।
अब शरण में श्यामा की आकर, तू नाम सुमिर कर देख जरा।। दुनियां ।१।।
राधा नाम में कितनी मस्ती है, ये पूछो प्रेम दिवानो से।
इस प्रेम के प्याले को प्राणी, एक बारतो पीकर देख जरा।दुनियां का।।२।।
जो भक्ति मार्ग पर चलते हैं, वो जग में अमर हो जाते हैं।
ये प्यार हकी की श्यामा की, तू नींद से जगकर देख जरा।। दुनियां का।।३।।

कामना नहीं है

कामना नहीं है काम केलि कमनीयता की, कामना नहीं है कुल कुटुम्ब बढ़ाने की।।
राज्य सुख वैभव विलास की न कामना, कामना नहीं नाम अपना बढ़ाने की।।
कामना नहीं है इन्द्रासन की भी न नेक हमें। कामना कदापि नहीं मोक्ष पद पाने की।।
कामना यही है एक वृन्दावन वास करूँ, राधे राधे कहने की कृष्ण कृष्ण गाने की।।

कन्हैया तुम्हें

कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है। जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है।।
अगर तुम ही दीनों की आहों के आशिक हो, तो आहों का अपना असर देखना है।।
विदुर भीलनी के जो घर तुमने देखे, तो हमको तुम्हारा भी घर देखना है।। कन्हैया०
टपकते हैं दृग 'बिन्दु' तमसे यह कहकर, तुम्हें अपनी उलफत में तर देखना है।। कन्हैया०

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वृज भूमि की महिमा

दोहा :- नारायण वृजभूमि को, सुर मुनि नावें माथ।
यहाँ आय गोपी बने, बाबा भोले नाथ।।

वृज भूमि प्राणों से प्यारी लगै, वृज मण्डल मांहि बसाय रहो।
रसिकों के सुसंग में मस्त रहूँ, जग जाल सौ नाथ बचाय रहों।
तेरी बाँकी झाँकी निहारा करूँ छवि छाक सों नाथ छकाय रहों।
एहो बॉके बिहारी यही अरजी, मेरे नैनों से नैना मिलाय रहो।

शरीर शुद्ध होत जब वृज रज उड़ अंग लगै, माया शुद्ध होत कृष्ण नाम पै लुटाये तै।।
शुद्ध होत कान कथा कीर्तन श्रवण किये, नैन शुद्ध होत दरश युगल छवि पायेते।।
हाथ शुद्ध होत पा ठाकुर की सेवा किये, पाम शुद्ध होत धाम वृन्दावन जायेते।।
मस्तक शुद्ध होत श्रीपति के चरण परे, रसना शुद्ध होत एक कृष्ण नाम गायते।।

बृजराज बृज बिहारी

बृजराज बृजविहारी, गोपाल बंशी वाले।
इतनी विनय हमारी, बृन्दा विपिन बसाले।। टेक।।
कितने दरों पे भटके, कितने ही घर बनाये।
अब तेरे दर पे आकर, जायें न फिर निकाले।। बृजराज बृजबिहारी।।१।।
जोड़ी तेरी हमारी, पहले रची विधाता।
हो तुम भी रंग के काले, और हम भी दिलके काले।। बृजराज बृजबिहारी।।२।।
बहुतों को अपना समझा, बहुतों के हो लिये हम।
अब तेरे बने रहेंगे, अपना हमें बना ले।। बृजराज बृजविहारी।।३।।
राजी हूँ तेरी रजा में, अपनी बने या बिगड़े।
नाचेंगे हम तो नटवर, जैसा हमें नचाले।। बृजराज बृजबिहारी।।४।।
दुनियां के ये इशारे, कहते हैं श्याम सबसे।
सबसे दिल हटाले, मोहन से मन लगाले।। बृजराज बृजबिहारी।।५।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीधाम वृन्दावन महिमा

पुण्यों का प्रताप उदय होता कई जन्मों का, इस वृज में मनुष्य तब आता है।।
सेवाकुंज बंशीबट कालीदह देख-देख, सुखद अतीत सुधा सिन्धु में समाता है।।
कामना न और किसी बात की रहती है उसे, सुरपुर के यान यों कहके फिराता है।।
एहो देव दूतों क्यों विमान तुम लाये यहाँ, बृन्दावन वास छोड़ स्वर्ग कौन जाता है।।

स्वर्ग में कहाँ है मधुर धुन राधे की, स्वर्ग में कहाँ कलित कुँज अभिराम है।।
स्वर्ग में कहाँ है भीर गोपियों की वह, स्वर्ग में कहाँ पुलिन यमुना ललाम है।।
स्वर्ग में सरिस बृज भाषा का प्रचार कहाँ, स्वर्ग में कहाँ माखन चोर घनश्याम है।।
स्वर्ग में अमित सुख इतना अपार कहाँ, स्वर्ग से भी अधिक श्रीवृन्दावन धाम है।।

श्रीवृन्दावन धाम अपार (अलीमाधुरी)

श्री वृन्दावन धाम अपार, भजे जा राधे राधे।
भजे जा राधे राधे, जपे जा राधे राधे।।
जो राधा राधा गावै, वो प्रेम पदारथ पावै,
वाको हो जाय बेड़ा पार, जपे जा राधे राधे।।१।।
जो राधा नाम न होतो, रसराज विचारो रोतो,
नहीं होतो कृष्ण अवतार, जपे जा राधे राधे।।२।।
ये बृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो।
वंशीवट कियो बिहार, जपे जा राधे राधे।।४।।
यह प्रेम की अकथ कहानी, नहीं जाने ज्ञानी ध्यानी,
ताहि जानें बृज की नारि, जपे जा राधे राधे।।५।।
तू बृन्दावन में आयो तेने राधा नाम न गायो,
तेरे जीवन को धिक्कार, जपे जा राधे राधे।।६।।
राधा वृषभानु दुलारी, श्रीकृष्ण चन्द्र की प्यारी,
वह कीरति राजकुमारी, जपे जा राधे राधे।।७।।
मोहन मुरली में गावें, वन-वन में धेनु चरावें,
सुनि मगन होय बृजनारि, जपे जा राधे राधे।।८।।
हम वृन्दावन के वासी, श्री राधा नाम उपासी,
यहाँ है रह्यो नित्य विहार, जपे जा राधे राधे।।९।।
कुन्जन मे रास रचायो, श्री अली माधुरी गायो,
वह निरखे नित्य विहार जप जाप राधे राधे।।१०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आली मोय लागे वृन्दावन नीको

आली मोय लागे बृन्दावन नीकौ।। टेक।।
घर घर तुलसी, ठाकुर सेवा, दरशन गोविन्दजी कौ।
रतन सिहांसन आप विराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को।।
कुंजन कुंजन फिरत राधिका, शब्द सुनत मुरली को।।
अष्ट प्रहर धुन नाम कीर्तन, राधा-राधा ही कौ।।
निरमल नीर बहत जमुना को, भोजन दूध दही कौ।।
संतन संगति कथा भागवत, सुनिये सुजश हरि कौ।।
निधिवन सेबाकुँज दरश नित, लीला रास थली कौ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीकौ।।

अक्रूर आगमन मथुरा प्रस्थान

मतवारी जाकी चाल मेरो यशोदा को लाल, मेरो यशोदा को लाल प्यारो प्यारो नन्दलाल।।
प्यारो प्यारो नन्दलाल मेरो मदन गोपाल, मतवारी जाकी चाल मेरो यशोदा को लाल।।
जाको नीले नीले गाल मेरो यशोदा को लाल, प्यारो प्यारो नन्दलाल मेरो मदन गोपाल।।
जाको घूंघर वाले बाल मेरो यशोदा को लाल, प्यारो प्यारो नन्दलाल मेरो मदन गोपाल।।
जाको नयन विशाल मेरो यशोदा को लाल, प्यारो प्यारो नन्दलाल मेरो मदन गोपाल।।
मतवारी जाकी चाल मेरो यशोदा को लाल, मेरो यशोदा को लाल प्यारो प्यारो नन्दलाल।।

ब्रज चन्द प्राण

ब्रज चन्द प्राण प्यारे मथुरा से शीघ्र आना। छवि देखकर वहाँ की मत भूल आप जाना।
मैं ले रहीं वलैया मेरे कुँवर कन्हैया। दाऊ के संग आके जल्दी से छवि दिखाना।
नवनीत और रोटी ये संग दे रही हूँ। बाबा से मांग करके रास्ते में आप खाना।
यह बाँसुरी तुम्हारी मैं सैंत कर धरूँगी। आकर यहां इसे फिर ब्रज धाम में बजाना।
यशोदा का प्रेम ऐसा है धन्य दास लक्ष्मण। पै है कठिन कन्हैया का फिर दरश बताना।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रुक जाओ मेरे घनश्याम

रुक जाओ मेरे घनश्याम।। टेक।।
प्यासी अंखियां तुम्हें पुकारें, रुक जाओ मेरे घनश्याम।
एक पलभर झलक देख लें, चलकर कर लें तुम्हें प्रणाम।।
जीवन के श्रृंगार सजाये, हमने घर-घर दीप जलाये।
किसने किया प्रहार, कि मंगल माला के मोती बिखराये।
आश के मंगल दीपो पर, चले लगाकर पूर्ण विराम।।१।। रुक जाओ मेरे।।
तेरा अजब विधान विधाता, क्या अनहोने खेल दिखाता।
बिन कान्हा कैसे जीयेगी, हाय हमारी यशुदा माता।
जाने वह दिन कब आयेगा, जब नाचेगा गोकुल गांव।।२।। रुक जाओ मेरे।।

एक पल तो दया की कर दो नजर

एक पल तो दया की कर दो नजर, ऐ श्यामसुन्दर ऐ मुरलीधर।। टेक।।
प्रह्लाद को तुमने तारा था, गजराज को आ के उवारा था।
ऐ संकटमोचन संकटहरन, ऐ श्यामसुन्दर ऐ मुरलीधर।।
निर्बल का बेड़ा पार करो, भक्तों का तुम उद्धार करो।
हमें सत्य धरम की बताओ डगर, ऐ श्यामसुन्दर ऐ मुरलीधर।।
पापों का कर दो नाश हरि, रहें पल पल तेरे साथ हरि।
जो तू ना सुने तो हम जायें किधर, ऐ श्यामसुन्दर ऐ मुरलीधर।।

ऊधौ हमें यह मथुरा

ऊधौ हमें यह मथुरा, लगती नहीं पियारी।
छिन भूलती नहीं है, ब्रज की लता सुखारी।
गौवों का वह चराना वंशी का वो बजाना।
कदमों की छाँह थी वो, कैसी प्रमोदकारी।।१।।
मोरों की पूँछ धरना, क्रीड़ा विपिन में करना।
पाऊँ कहाँ इहाँ मैं, वृषभानु की दुलारी।।३।।
उन ग्वाल बाल प्यारों की, क्या कहूँ मिताई।
हारे हुये जिताते थे, वे मुझे खिलारी।।४।।
जिसने मुझे किया था, निज आत्म का समर्पण।
उनका वियोंग हा हा, यह क्या दशा हमारी।।५।।
लक्ष्मण कहे सही है, तुम हो कठोर प्यारे।
रो रो मरें भले हम, तुम तो रहो सुखारी।।६।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं

ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंस सुता की सुन्दर कलरव, और कदमन की छाहीं।।
वे सुरभी वे वत्स दोहनी, खिरक दुहावन जाहीं।
ग्वाल बाल संग करत कोलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं।।
यह मथुरा कंचन की नगरी, मणि मुक्ता जिसि माहीं।
जबहि सुरत आवत वा सुख की, जिय उमगत सुध नाहीं।।
अगनित भाँति करी बहुलीला, यसुदा नन्द निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन हवै, यह कहि कहि पछताहीं।।

उधौ मैया को सुनैयो तेरो लाला

ऊधौ मैया कूँ सुनैयो, तेरो लाला दुःख पावै।।
कोऊ न मुख धोवे ताले जल, अचरा पोछ संभारै।
माखन रोटी को नाम न जानूँ, कनुंआ कहि के कोई न पुकारे।।
बाबा नन्द उँगरिया गहि गहि, चलनों नित्य सिखावे।
थको जान कनियां ले लेतो, धूरी पौछ मोहि हिय से लगावे।
दूध पिवाय बाड़ो हित करती, चुटिया गूंथ सिंहावै।।
नहाते बार गिरे जो मेरो, सौ सौ बार कुल देवी मनावैं।
आयें गोपी देन उलाहनौ, एक चित्त नहीं लावै।।
सो सुख उद्धव या मथुरा में, जननी बिन को लाड़ लड़ावे।
बन में भूखों जान कन्हैया, करि-करि छाक पठावे।।
हाथ जोड़ विनती कर दीजो, रिणिंया तेरो श्याम कहावे।

उद्धव इतनो कहियो जाई

उद्धव इतनो कहियो जाई।
वाको विलग कबहुँ जनि मान्यो, बड़ो कियो पय प्याई।
यद्यपि यहाँ अनेक भाँति सुख, तदपि रह्यो न जाई।।
जो कहुँ मिलें नन्दबाबा मेरे, तो कहियो समुझाई।
तौ लौं दुःखी होन नहिं पावें, मेरी कारी धौरी गाई।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कहा माधव ने उद्धव से

कहा माधवने उद्धव से, कि वृन्दावन जरा जाना।
वहाँकी गोपियोंको ज्ञान, का कुछ तत्त्व समझाना।।
विरहकी वेदनामें, वे सदा वेचैन रहती हैं।
तड़पकर आह भर-भरकर, यही वे गान गाती हैं।
है प्रेम जगतमें सार, और कुछ सार नहीं।।
चले मथुरासे जब कुछ दूर, वृंदावन निकट आया।
वहीं से प्रेमने अपना, अनोखा रंग दिखलाया।।
उलझकर वस्त्रमें काँटे, लगे उद्धवको समझाने।
तुम्हारा ज्ञान पर्दा फाड़, देंगे वे प्रेम दीवाने।।
विटप झुक-झुककर कहते थे, इधर आओ, इधर आओ।
पपीहा कह रहा था पिय, कहाँ ए भी तो बतलाओ।।
नदी यमुनाकी धारा शब्द, हरि-हरिका सुनाती थी।
भ्रमर गुञ्जारसे भी तो, मधुर गुञ्जार आती थी।।
है प्रेम जगतमें सार, और कुछ सार नहीं।।
कहा उद्धो ने जब बढ़कर, कि मथुरा से मैं आया हूँ।
सुनाता हूँ संदेशा श्याम, का जो साथ लाया हूँ।।......

गोपी विरह

आजा कहां है मेरे श्याम प्यारे

ओ आजा कहां है मेरे श्याम प्यारे, कोई गम का मारा है तुझको पुकारे।। टेक०।।
टपकते हैं आखों में आंसू हमारे, तू आजा कहां है ओ राधा के प्यारे।
तेरी याद में नैना रो रो के हारे।। ओ आजा०
तेरे दर की चौखट पै मैं सिर को फोड़ूँ, तू आजा तेरे सामने दम को तोड़ूँ।
बता मुझको छोड़ा है किसके सहारे।। ओ आजा०
तेरी याद की आग मे जल रहा हूँ, मैं कांटों पै दिल को लिये चल रहा हूँ।
मेरे हाल पै रोते चांद और सितारे।। ओ आजा०

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है

कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है। जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है।।१।।
अगर तुम हो दीनों की आहों के आशिक, तो आहों का अपना असर देखना है।।२।।
उबारा था जिस हाथ ने गीध गज को, उसी हाथ का अब हुनर देखना है।।३।।
विदुर भीलनी के जो घर तुमने देखे तो हमको तुम्हारा भी घर देखना है।।४।।
टपकते हैं दृग 'बिन्दु' तुम से यह कहकर तुम्हे अपनी उलफत में तर देखना है।।५।।

सलोनी साँवरी सूरत

सलोनी साँवरी सूरत दिखा दोगे तो क्या होगा।
मनोहर माधुरी मूरत, दिखा दोगे तो क्या होगा।।
पड़ी मंझधार में नैया, खिवैया कोई नहीं मेरा।
ये नैया पार में भगवन्, लगा दोगे तो क्या होगा।।१।।
सकल जग ढूँढ़ के हारा, पता लगता नहीं तेरा।
ठिकाना अपने रहने का, बता दोगे तो क्या होगा।।२।।
हृदय में ध्यान हो तेरा, जवाँ पर नाम हो तेरा।
पाठ निज नाम का भगवन्, पढ़ा दोगे तो क्या होगा।।३।।
पिता सुत माता औ बन्धू, जगत में कोई नहीं मेरा।
मुझे चरणों की दासी तुम, बना लोगे तो क्या होगा।।४।।

मेरा गोपाल गिरधारी

मेरा गोपाल गिरधारी, जमाने से निराला है।
रंगीला है रसीला है, न गोरा है न काला है।।
कभी सपनों में आ जाना, कभी रूपोश हो जाना।
ये तरसाने का मोहन ने, निराला ढंग निकाला है।।१।।
तुम्हें मैं भूल तो जाऊँ, मगर भूले नहीं बनता।
तुम्हारी साँवरी सूरत ने, कुछ जादू सा डाला है।।२।।
कभी वो रूठ जाता है कभी वो मुस्कराता है।
इसी दर्शन के खतिर तो, बड़े नाजों से पाला है।।३।।
मजे से दिल में आ बैठो, मेरे नैनों में बस जाओ।
अरे गोपाल मन्दिर ये, तुम्हारा देखा भाला है।।४।।
कभी ऊखल में बँध जाना, कभी ग्वालों में जा खेले।
तुम्हारी बाल लीला ने, अजब धोखें में डाला है।।५।।
तुम्हें मुझसे हजारों है, मगर मेरे तुम्हीं तुम हो।
तुम्ही सोचो हमारी और, कौन सुनने ही वाला है।।६।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सूनी यमुना सूना मधुबन

सूनी यमुना सूना मधुबन, सूना गोकुल गाँव रे।
मेरे घनश्याम चले आओ, मेरे घनश्याम चले आओ।
कहाँ गई वो मधुर मुरलिया, ढूढ़े हर ब्रजबाला।
विरह अगन में छोड़ गया, सबको गोकुल का ग्वाला।
ब्रज का कण-कण रोता है, ले-ले के तुम्हारा नाम।। मेरे घनश्याम चले आओ।।
जैसे चकोरा चन्दा ढूंढ़े, तुमको ढूंढे नैना।
कोई न समझे पीर पिया की, कोई न बोले बैना।
धरती अम्बर भूल गये सब, अपना-अपना काम।। मेरे घनश्याम चले आओ।।
सांझ सकारे पूँछ के राधा, हार गई सखियों से।
श्याम विना कोई रंग न भाये, क्यों प्यासी अखियो से।
दरश तेरे जो मिल जायें, तो नैन करे विश्राम।। मेरे घनश्याम चले आओ।।

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे, लताओं में ब्रज की गुजारा करेंगे।टेर।।
कहीं तो मिलेंगे वो बाँके विहारी, उन्हीं के चरण चित लगाया करेंगे।।१।।
बना करके हृदय में हम प्रेम मन्दिर, वहीं उनको झूला झुलाया करेंगें।।२।।
उन्हें हम बिठावेंगे आँखों में, दिल में, उन्हीं से सदा लौ लगाया करेंगे।।३।।
जो रूठेंगे हमसे वो बाँके विहारी, चरण पड़ उन्हें हम मनाया करेंगे।।४।।
उन्हें प्रेम डोरी से हम बाँध लेंगे, तो फिर वो कहाँ भाग जाया करेंगे।।५।।
उन्होने छुड़ाये थे गज के वो वन्धन, वही मेरे संकट मिटाया करेंगे।।६।।
उन्होंने नचाये थे ब्रह्माण्ड सारे, मगर अब उन्हें हम नचाया करेंगे।।७।।
भजेंगे जहाँ प्रेम से नन्द-नन्दन, कन्हैया छबि को दिखाया करेंगे।।८।।

दर्शन दो घनश्याम

दर्शन दो घनश्याम नाथ, मोरी अखियाँ प्यासी रे।
मन मन्दिर में आप विराजो, घट घट के बासी रे।टेर।।
मंदिर मंदिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी।
युग बीते ना आई मिलन की, पूरण मासी रे।।१।। दर्शन दो।।
द्वार दयाका जब तू खोले, पंचम सुर मे गूंगा बोले।
अंधा देखे लंगड़ा चल कर, पहुँचे काशी रे।।२।। दर्शन दो।।
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैंनन को कैसे समझाऊँ।
आँख मिचौली छोड़ दे अब तो, मन के बासी रे।।३।। दर्शन दो।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्याम पिया

श्याम पिया मेरी रंग दे चुनरिया, कृष्ण पिया मेरी रंग दे चुनरिया।
रंग दे चुनरियाँ, रंग दे चुनरिया, श्याम पिया मेरी रंग दे चुनरिया।। टेर।।
बिन रंगाए मैं घर नही जाऊंगी, बीत जाए चाहे सारी उमरिया।।१।।
ऐसी जो रंग दे रंग नही छूटे, धोबी धोए चाहे सारी उमरिया।।२।।
नीली न पीली, लाल नही ओढूँ, ओढूँगी कान्हा की काली कमलिया।।३।।
वृन्दावन ढूँढ़ी, गोकुल ढूँढ़ी, ढूँढ़ी है सारी मथुरा नगरिया।।४।।
कहत कबीर सुनो भई साधो, प्रेम नगर बिच खुली है गठरिया।।५।।

मन्दिर में रहते हो भगवन्

मन्दिर में रहते हो भगवन्, कभी बाहर भी आया जाया करो।
मैं रोज तेरे दर आता हूँ, कभी तुम भी मेरे घर आया करो।।
मैं तेरे दर का जोगी हूँ, हुआ तेरे बिना वियोगी हूँ।
तेरी याद में आँसू बहते हैं, इतना ना मुझे तड़पाया करो।। मैं रोज।।
आते क्यों मेरे नजदीक नहीं, इतना तो सताना ठीक नहीं।
मैं दिल से तुमको चाहता हूँ, कभी तुम भी मुझे अपनाया करो।। मैं रोज।।
मैं दीन हूँ दीनानाथ हो तुम, सुख दुःख में सबके साथ हो तुम।
मिलने की चाह खामोश करे, कभी तुम भी मिला मिलाया करो।। मैं रोज।।

क्या भरोसा...।

क्या भरोसा है इस जिंदगी का, साथ देती नहीं ये किसी का।।
श्वांस रुक जायेगी चलते-चलते, शमां बुझा जायेगी जलते-जलते।
दम निकल जायेगा रोशनी का।। क्या भरोसा।।
दुनियाँ है इक हकीकत पुरानी, चलके रुकना है इसकी रवानी।।
फर्ज पूरा करो वन्दगी का।। क्या भरोसा।।
हम रहें ना मुहब्बत रहेगी। दास्ताँ अपनी दुनियाँ कहेगी।।
नाम रह जायेगा आदमी का।। क्या भरोसा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बड़ी देर भई नन्दलाला

बड़ी देर भई नन्दलाला, तेरी राह तके बृजवाला।
ग्वाल बाल इक-२ से पूँछे, कहां है मुरली वाला रे।। टेक।।
कोई न जाए कुंज गली में, तुझ बिन कलियां चुनने को।
तरस रहे हैं जमुना के तट, धुन मुरली की सुनने को।
अब तो दरस दिखादे मोहन, क्यों दुविधा में डाला रे।। बड़ी देर भई।।
संकट में है आज वो धरती, जिस पर तूने जन्म लिया।
पूरा कर दे आज वचन वह, जो गीता में तूने दिया।
तुम बिन कोई नहीं है मोहन, भारत का रखवाला रे।। बड़ी देर भई।।

जरा सामने तो आओ

जरा सामने तो आओ छलिये, छुप-छुप छलने में क्या राज है।
तुम छुप ना सकोगे परमात्मा, मेरी आत्मा की ये आवाज है।।
हम तुम्हें चाहें तुम नहीं चाहो, ऐसा कभी नही हो सकता।
पिता अपने बालक से बिछुड़ के, सुख से कभी न सो सकता।
हमें डरने की जग में क्या बात है, जब हाथ में तिहारे मेरी लाज है।। तुम छुप।।
प्रेम की है यह आग मोहन, लौ इधर उठे और उधर जले।
प्यार के हैं यह तार प्रभो, जो इधर सजे और उधर बजे।
तेरी प्रभुता पर हमें बड़ा नाज है, इस दुनिया का तू ही सरताज है।। तुम छुप।।

आना सुन्दर श्याम

आना सुंदर श्याम, हमारे हरिकीर्तन में।। टेक।।
आप भी आना संग ग्वालों को लाना, बंसी मधुर बजाना ।।१।। हमारे...
आप भी आना संग गोपियों को लाना, माखन मिश्री खाना ।।२।। हमारे...
आप भी आना संग राधा जी को लाना, सुंदर रास रचाना ।।३।। हमारे...
आप भी आना संग नारदजी को लाना, वीणा मधुर बजाना।। ४।। हमारे...
आप भी आना संग ऊधो जी को लाना, आत्म-ज्ञान सुनाना।। ५।। हमारे...
आप भी आना संग द्रोपदी को लाना, सभा बीच चीर बढ़ाना।। ६।। हमारे...
आप भी आना संग अर्जुन को लाना, गीता ज्ञान सुनाना।। ७।। हमारे...
चन्द सखी भज बाल कृष्ण छवि, हरि के चरण चित लगाना।। ८।। हमारे...

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अब किसी महफिल में...

अब किसी महफिल में जाने, की हमें फुरसत नही।
अब किसी से दिल लगाने, की हमें फुरसत नहीं।।
एक था सर जो झुक गया, है श्याम तेरे सामने।
गैर के आगे झुकाने, की हमें फुरसत नहीं।।
इक था दिल जिसमें कि आकर, बस गया है सांवरा।
गैर को दिल में बसाने, की हमें फुरसत नहीं।।
हाले-दिल अपना कहेंगे, श्याम तेरे सामने।
गैर के आगे सुनानें, की हमें फुरसत नहीं।।
तोड़कर नाते सभी, जोड़ा है नाता श्याम से।
दुनियाँ से नाता निभाने, की हमें फुरसत नहीं।।
श्याम रूठे तो मनाते, ही रहेंगे हम सदा।
दुनियाँ रूठे तो मनाने, की हमें फुरसत नहीं।।
बेकदर दुनियाँ जो पूछे, गी भला वो कौन है?।
साफ कह देंगे बताने, की हमें फुरसत नहीं।।

तू सुमिरन कर राधे राधे

तू सुमिरन कर राधे राधे, तेरे कष्ट सभी मिट जायेंगे।
राधे के पीछे कृष्ण स्वयं तेरे द्वार पे दौड़े आयेगे।।
राधा बिन सूना साँवरिया, राधा बिन फीकी वाँसुरिया।
तुम कितना ही कृष्ण का ध्यान धरो, बिन राधा ध्यान न आयेंगे।
ब्रज मण्डल की गरिमा राधा, राधा बिन प्रेम शब्द आधा।
राधा है तो भक्ति रस है, हम राधा के गुण गायेंगे।।२।।

छटा निज साँवरे मोहन

छटा निज साँवरे मोहन, दिखा दोगे तो क्या होगा।
मनोहर तान बंशी की, सुना दोगे तो क्या होगा।।
अदा की भक्ति लाखों ने, उन्होंने मुक्ति भी पाई।
जरा सा प्रेम का रास्ता, दिखा दोगे तो क्या होगा।।१।।
उठाया तुमने गोवर्धन, अजी जब एक ऊंगली पर।
जरा से भार को मेरे, उठा लोगे तो क्या होगा।।२।।
ये चंचल मन हजारों कोस, बैठे-बैठे जाता है।
मेरे मन को तरफ अपने, लगा लोगे तो क्या होगा।।३।।
तेरे दरवाजे आया हूँ, पतित पावन सुसना बाना।
भंवर में अटकी नौका पार, कर दोगे तो क्या होगा।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सलोने श्याम सुन्दर की

सलोने श्याम सुन्दर की, सखी री याद आती है।
भुलाती हूँ मगर दिल से, भुलाई वह न जाती है।।
किया परसों का वादा था, बीत बरसों गई उनको।
पिपासी दर्श की अंखियाँ, तरसती ही रहीं उनको।।१।।
हृदय से मोह कर मोहन ने, निज मन से बिसारा है।
तरस मन में हमारा कुछ, नहीं उनने विचारा है।।२।।
बिना बंशी बजैया के, लगे ब्रज वन सभी सूना।
घिरे घनश्याम जब देखूँ, हृदय में दुख हो दूना।।३।।
हुए ऐसे निठुर जिनने, न भेजा एक भी पाती।
तुम्हारी याद में मेरी, ए प्राण भी अब निकलजाती।।४।।

मुझे क्या काम दुनियाँ से

मुझे क्या काम दुनियाँ से, मेरा श्रीकृष्ण प्यारा है।। टेक।।
यशोदा नन्द का लाला, मेरी आँखों का तारा है।
गये जब आप मथुरा को, आपने कंस मारा था।।१।।
उठाकर नख पे गिरिवर को, इन्द्र का मान मारा था।
तुम्हीं सब देश के मालिक, हमें तेरा सहारा है।।२।।
चाहे कोई लाख समझाये, न मानू मैं किसी की भी।
हमारा कृष्ण प्यारा है, सबों से पंथ न्यारा है।।३।।

पकड़ लो बाँह गिरधारी

पकड़ लो बाँह गिरधारी, नहीं तो डूब जायेगी।
हमारा कुछ न बिगड़ेगा, तुम्हारी लाज जायेगी।।
पड़ी मझधार में नैया, खेवैया कोई नहीं मेरा।
खेवैया आप बन जावो, तो नैया पार जायेगी।।१।।
लदी है पाप की गठरी, हमारे शीश के ऊपर।
वजन पापों का भारी है, इसी से डूब जायेगी।।२।।
तुम्हारे ही भरोसे पे, जमाना छोड़ बैठी हूँ।
जमाने की तरफ देखो, हमें कैसे निभाओगे।।३।।
लड़कपन की मोहब्बत है, हमारी छूट जायेगी।
नगीना नग जड़ी चूड़ी, हमारी फूट जायेगी।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मथुरा जाके

मथुरा जाके मथुरा में ही रह गये, आऊँगा दो चार दिन में कह गये।। टेक।।
याद है बंशी की धुन मुझको मोहन, गूँजकर कानों में वो स्वर रह गये।
मैं तो शिकवा और गिला न कर सकी, गम दिये जो हम तो उसको सह गये।।
कैसे निर्मोही से पाला पड़ गया, ब्रज में कान्हा हम तो तन्हा रह गये।
जिन्दा हूँ इस आश पर तू आयेगा, आस लेकर तेरी जिन्दा रह गये।।
अब सहा जाता नहीं गिरधारी, सहते सहते जख्म नासुर बन गये।
शायद आ जाये रहम तुझको मोहन, हर सितम यह सोच कर हम सह गये।।

बाँके बिहारी मुझको

बाँके बिहारी मुझको देना सहारा, कभी छूट जाय न दामन तुम्हारा।। टेक।।
तेरे बिना मेरा कौन जहाँ में, तुम्हीं बताओ अब जाऊँ कहां मैं।
तू ही मेरी मंजिल है तू ही है किनारा।। बाँके बिहारी।।
तेरे नाम का गीत गाता रहूँ में, सुबह शाम तुमको रिझाता रहूँ मैं।
तेरा नाम मुझको है प्राणों से प्यारा।। बांके विहारी।।
तेरे रास्ते से हटाती है दुनियाँ, अपने इशारे पै बुलाती है दुनियाँ।
कभी देखू न मैं इनका इशारा।। बाँके विहारी।।
तेरे सिवा मन में समाये न कोई, दिल का ये दीपक बुझाये न कोई।
तू ही मेरी किस्ती है तू ही है किनारा।। बाँके विहारी।।
बड़ी भूल की जो दुनियाँ में आया, मूल भी खो दिया और ब्याज भी गंवाया।।
तेरे दर पे आके जाऊँ न दुबारा, कभी छूट जाय न दामन तुम्हारा।।

सुबह साम जिसको

सुबह साम जिसको तेरा ध्यान होगा। बड़ा भाग्यशाली वो इंशान होगा।। टेक।।
तेरे नाम से जो भी भूला रहेगा। तो समझो बड़ा ही वो नादान होगा।।
उसी को तो हर दम लगन तेरी होगी। कि जिस पर तु खुद ही मेहरवान होगा।।
जिसने भी हृदय में तुझको टटोला। लगा खाक बन में क्यूँ हैरान होगा।।
जिकर जिस जगह हर घड़ी तेरा होगा। तो बैकुण्ठ सा ही वो स्थान होगा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राधे रानी के चरणों में

राधे रानी के चरणों में रह लेंगे हम, जैसे राखोगी वैसे ही रह लेंगे हम।।
तेरे चरणों का हमने सहारा लिया, जैसे गुजरेगी वैसे गुजारेंगे हम।। राधे..।।
कोई पागल कहे या दिवाना कहे, तेरी प्रीति में सब कुछ सह लेंगे हम।। राधे..।
तेरी ब्रज की लताओं में विचरा करें, जहाँ जो कुछ मिलेगा वो पा लेंगे हम।। राधे..।।
तेरे भक्तों को आशा तुम्हीं से लगी, ब्रज भूमि में जीवन बिता देंगे हम।। राधे..।।

कन्हैया रुलाते हो

कन्हैया रुलाते हो जी भर रुलाना, मगर आँसुओं में नजर तुम ही आना।। टेक।।
ये सूरज ये चंदा ये तारे हँसाते, ये सारे नजारे तुम्हारे हंसाते।
मेरी इस दशा पर चाहे जग को हंसाना, मगर उस हंसी में नजर तुम ही आना।।१।।
ये रो रो के कहता है तुम से पुजारी, क्यों फरियाद सुनते नहीं तुम हमारी।
दया के समुन्दर दया अब दिखाना, मगर उस दया में नजर तुम ही आना।।२।।
हो कितनी भी विपदा न विश्वास टूटें, लगन श्याम चरणों की मन से न छूटे।
भले ही अनेकों जनम पड़े आना, मगर हर जनम में नजर तुम ही आना।।३।।
कन्हैया रुलाते हो जी भर रुलाना, मगर आँसुओं में नजर तुम ही आना।

ये तो प्रेम की बात है

ये तो प्रेम की बात है ऊधौ, बंदगी तेरे बस की नही है।
यहाँ सिर देकर होते हैं सौदे, आशिकी इतनी सस्ती नही है।। टेक।।
प्रेम वालों ने कब वक्त पूँछा, उनकी पूजा में सुनले ऐ उधौ।
यहाँ दम दम में होती है पूजा, सिर झुकाने की फुरसत नही है।।१।।
जो असल में है मस्ती मे डूबे, उन्हें क्या परवाह जिन्दगी की।
जो उतरती है चढ़ती है मस्ती, वो हकीकत मे मस्ती नहीं है।।२।।
जिसकी नजरों में हैं श्याम प्यारे, वो तो रहते हैं जग से न्यारे।
जिसकी नजरो में मोहन समाये, वो नजर फिर तरसती नही है।।३।।
ये तो प्रेम की बात है ऊधौ, बंदगी तेरे बस की नहीं है।
यहाँ सिर देकर होते है सौदे, आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो शीश तली पर

जो शीश तली पर रख न सके, वह प्रेम गली मे आये क्यों।। टेक।।
संसार नही है रहने को, यहाँ कष्ट ही कष्ट है सहने को।
जिसे प्रेम नगर मे जीना है, वह इस मे चित्त भरमाये क्यों।। जो शीश।।
तुम्हें काम क्रोध से बचना है, माया की सारी रचना है।
गर मन विषयों से मोड़े नही, तो भक्ति का ढोंग रचाये क्यों।। जो शीश।।
जो प्रेम नगर मे रहते है, उन्हैं वावरे-वावरे कहते है।
जो ताने जग के सह न सके, प्रियतम से नयन मिलाये क्यों।। जो शीश।।
जिसे भव सागर से तरना है, उसे छोड़ खुदी खुद मरना है।
प्रकाश प्रेम का पा न सके जो, वह देह को फिर अपनाये क्यों।। जो शीश।।

•

साम भई घनश्याम

साम भई घनश्याम नहिं आये रे, बैठि रही मैं आश लगाये।। टेक।।
तुम्हारे दरश बिन दुःखी मैं साँवरिया, कब आवोगे प्यारे मेरी नगरिया।
कोई तो आके तेरा हाल सुनाये रे, बैठि रही मैं आश लगाये।।१।।
मन को तो मोहे तेरी तिरछी नजरिया, कैसे बीतेगी मेरी बारी उमरिया।
बारी उमरिया मेरी अतिदुःख पाये रे, बैठि रही मैं आश लगाये।।२।।
काँधे पे सोहे तेरे कारी कमरिया, मन को लुभाये तेरी श्याम वँसुरिया।
प्यारी बँसुरिया मोहिं रोज तड़पाये रे, बैठि रही मैं आश लगाये।।३।
कहाँ पे जाऊँ मुझे सूझे न डगरिया, कैसे चलूँ मेरे सिर पे गगरिया।
चले न गगरिया जिया अति दुःख पायेरे, बैठि रही मैं आश लगाये।।४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री राधे गोपाल

श्री राधे गोपाल भज मन श्री राधे।।
आजा आजा कृष्ण मुरारी, नाव भँवर में पड़ी है हमारी।
हमने शरणा लई है तिहारी, पार करो तत्काल भजमन।।१।।
द्रुपद सुता दुष्टों ने घेरी, आये नाथ करी ना देरी।
लाज रखी गोपाल भज मन श्रीराधे।।२।।
वृन्दावन में रास रचैया, सब गोपिन संग प्रेम बढ़ैया।
विदुर भक्त के साग खवैया, विदुरानी के मान बढ़ैया।।
प्रेम रूप गोपाल भज मन श्री राधे।।३।।
चीर घाट पर चीर बढ़ैया, दुःशासन के मान घटैया।
आगे भी गैया पीछे भी गैया, बीच खड़े नन्दलाल भज मन।।४।।
बीच भँवर में नाव हमारी, तुम बिन को ले खबर हमारी।
पार करो गोपाल, भज मन श्री राधे।।५।।

मेरे कनुवाँ को मनुवाँ

मेरे कनुवाँ को मनुवाँ लगे के नांय, उद्धव जल्दी बताय।। टेक।।
गोकुल में खावे नित माखन मिश्री, मथुरा के पेड़ा वाको भावे कि नाय।। उद्धव०।।
वृन्दावन में रहे संग राधा विशाखा, मथुरा की कुब्वा वाको भावे कि नाय।। उद्धव०।।
बावा नन्द घर महल अटारी, मथुरा को सिंहासन वाको भावे कि नाय।। उद्धव०।।
गोकुल के बाबा मैया नन्द यशोदा, मथुरा के देवकी वसुदेव भावे कि नाय।। उद्धव०।।
गोकुल के सखा मधुमंगल मनसुखा, मथुरा के सिपाही वाको भावे कि नाय।। उद्धव०।।

मिला दो श्याम से

मिला दो श्याम से उधो, तेरा गुण हम भी गावेंगी।।
मुकुट सिर मोर पंखन का, मकर कुण्डल है कानों में
मनोहर रूप मोहन का, देख दिल को, रिझावेंगी।।
हमन को छोड़ गिरधारी, गये जब से नहीं आये
चरण में शीश धर कर के, फेर उनको मनावेंगी।।
प्रेम हमसे लगाकर के, बिसारा नन्द नंदन ने
खता क्या हो गई हमसे, अरज अपनी सुनावेंगी।।
कभी फिर आप गोगुल में, हमें दर्शन दिलावेंगे
वो -"ब्रह्मानन्द" हम दिल से, नहीं उनको भुलावेंगी।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्याम को सँदेशो

श्याम को सँदेशो ऊधौ, पाती लै के आयो रे।।
पाती तो उठाय लीन्ही, छाती सों लगाय लीन्ही।
घूँघअ की ओट दै के, ऊधौ समझावै रे।। श्याम०।।
बसती उजाड़ दीन्ही, उजड़ी बसाय दीन्ही।
कुब्जा पटरानी कीन्ही, मोहि ना सुहावै रे।। श्याम०।।
श्याम सुन्दर जू से, ये जाय कहियो ऊधौ।
जीवत खसम कौन भसम रमावै रे।। श्याम०।।

ऊधौ जी मैंने सब

ऊधौ जी मैंने सब कारे अजमाये।।
कोयल, काग और भौरन के, कारे रंग सुहाये।
ये तीनों मतलब के साथी, फेर पास पहिं आये।। ऊधौ०।।
कोयल के सुत कागा पारे, बड़े- बड़े लाड़ लड़ाये।
बड़े भये जब उड़बे लायक, कुल अपने को धाये।। ऊधौ०।।

ऊधौ जब टेढ़े दिन आवैं

ऊधौ जब टेढ़े दिन आवैं।।
कंचन होत छुवत कर माटी, मूरख लोग बतावैं।।
पढ़ा लिख कुछ काम ना आवै, मुरख ज्ञान सिखावैं।।
यार दोस्त मुख से नहिं बोलें, ढिंग बैठत सकुचावैं।।
टेढ़ी दासी बनी कूबरी, ताको कंठ लगावैं।।
चन्द्रकली सी कुँवर राधिका ताको योग पढ़ावैं।।
अपना अपना भोग ऊधौ जी काकूँ दोष लगावैं।।
सूरदास विधना के अक्षर तिल भर घटत न पावे।।

ऊधौ मन ना भये

ऊधौ मन ना भये दस बीस।।
एक हुतो सा गयो श्याम संग, को आराधे ईश।।
इन्द्री शिथिल भई केशव बिन, ज्यों देही बिनु शीश।।
आंशा लगी रहत तनु बास्साँ, जीवो कोटि बरीश।।
तुम तो सखा श्याम सुन्दर के, सकल योग के ईश।।
सूरदास वा रस की महिमा, जो पूँछे जगदीश।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

ऊधौ ज्ञान चरचा

ऊधौ ज्ञान चरचा सुहाती नहीं है, बिना कृष्ण दर्शन के, शान्ति नहीं है।।
साधन की बातें तुम जो सुनाते, हमारी समझ में यह आती नहीं है।।
सुनाते हो क्या ये निर्गुण कहानी, हमारी समझ बीच आती नहीं है।।
नही योग साधना की हमको जरूरत, बिना प्रेम की बात भाती नहीं।।
मन में बसी श्याम सुन्दर की मूरति, किसी भाँति दिल से वह जाती नहीं है।।
रसना रटे नाम उनका निरन्तर, और के गीत यह गाती नहीं है।।
जपै नाम माधव का हमतो निरन्तर, ब्रह्मानन्द दिल से भुलाती नहीं है।।

मीरा तैने नैना

मीरा तैने नैना गँवाये रोय-रोय।।
बड़े घरन की मीरा बेटी, लाज शरम दई खोय।।
जहर का प्याला राणा भेजा, पीवत अमृत होय।।
बालापन में ओढ़ी चुनरिया, फटी ना मैली होय।।
दर्द की मारी बन-बन डोले, वैद्य मिल्यो नहिं कोय।।
मीरा को दुख जबहि मिटैगो, वैद्य सँवरिया होय।।

मैं तेरी हो गयीं श्याम

मैं तेरी हो गयी श्याम दुनियाँ क्या जाने।
तेरी ही सूरत आँखों में, कह दूँगी मैं तो लाखन में मैंने छोड़ दिया घर बार।। दुनिया।।
हो गये अब तो अपने पराये लोक लाज कुल कान मिटाये, हुई गली-गली बदनाम।। दुनिया।।
वृन्दावन की धूल बनूँ मैं, कालिन्दी का कूल बनूँ। बसूँ मैं वृन्दावन धाम।। दुनिया।।
तुझे छोड़ कर किस दर जाऊँ, किसको अपना हाल सुनाऊँ। मेरे हृदय कुंज के श्याम।। दुनिया।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो प्रेम गली में आये

जो प्रेम गली में आये नहीं, प्रियतम का ठिकाना क्या जाने।
जिसने कभी प्रीत लगाई नहीं, वह प्रेम निभाना क्या जाने।। जो०।।
जो वेद पढ़े और भेद करे, मन में नहीं निर्मलता आई।
कोई कितना चाहे ज्ञान कहे, भगवान को पाना क्या जाने।। जो०।।
यह दुनियाँ गोरख धन्धा है, सब जग माया में अन्धा है।
जिस अन्धे ने प्रभू को देखा नहीं, वह रूप बताना क्या जाने।। जो०।।
जिस दिल में ना पैदा दर्द हुआ, वह पीर पराई क्या जाने।
मीरा है दीवानी मोहन की, संसार दिवाना क्या जाने।। जो।।

सन्देशो देवकी सो कहियो

सन्देशो देवकी सो कहियो।
हौं तो धाय तुम्हारे सुत की दया करत नित रहियो।।
यद्यपि टेंव तुम जानत होइहो तऊ मोहि कहि आवे।
प्रातहि उठत तुम्हारे सुत को माखन रोटी भावे।।
तेल उबटनों अरु तातो जल देखत ही भज जावे।
जोई-जोर्अ माँगत सोई देतीं क्रम-क्रम तबै नहावे।।

श्री कृष्ण रुक्मिणि विवाह (आओ मेरी सखियों)

दोहा :- ऐसे वर को क्या वरूँ, जो जनमें और मर जाएँ।
बरिएँ गिरधर लाल को, चुड़्ल्यो अमर होई जाएँ।।

आओ मेरी सखियों, मुझे मेंहदी लगा दो। मेंहदी लगा दो, मुझे ऐसी सजा दो।
मुझे श्याम सुन्दर की दुल्हन बना दो।। आओ मेरी...
सत्संग में मेरी, बात चलाई, सतगुरु ने मेरी, कीन्ही रे सगाई।
उनको बुला के, हथलेवा तो करा दो, मुझे श्याम सुन्दर की, दुल्हन बना दो।।
ऐसी पहनूँ चूड़ी, जो कबहूँ न टूटे, ऐसा वरुँ दूल्हा, जो कबहुँ न छूटे।
अटल सुहाग की बिन्दियाँ लगा दो, मुझे श्याम सुन्दर की दुल्हन बना दो।।
ऐसी ओढुँ चुनरी जो रंग ना ही छूटे, प्रीत का धांगा कबहूँ न टूटे।
आज मेरी मोतियों से मांग भरा दो, मुझे श्याम सुन्दर की दुल्हन बना दो।।
भक्ति का सुरमा मैं आंख में लगाऊंगी, दुनियाँ से नाता तोड़ उन्ही की हो जाऊँगी।
सतगुरु को बुला के फेरे तो पड़वा दो, मुझे श्याम सुन्दर की दुल्हन बना दो।।
बाँध के घुंघरु मैं उनको रिझाऊँगी, लेकर इक तारा मैं श्याम-श्याम गाऊँगी।
सतगुरु को बुला कर डोली तो सजवा दो, सखियों को बुलाकर, विदा तो करादो।।

स्वागतम् कृष्णा शरणागतम् कृष्णा, स्वागतम् कृष्णा शरणागतम् कृष्णा।।
स्वागतम् सुस्वागतम् शरणागतम् कृष्णा, स्वागतम् सुस्वागतम् शरणागतम् कृष्णा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मांगलिक श्लोक

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना, गोदावरी नर्मदा, कावेरी सरयू महेन्द्रतनया, चर्मण्वती बेदिका।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी,ख्याता गया गण्डकी, पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः, कुर्वन्तु वो मंगलम्।।२।।

ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणां पतिः, शक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः, स्कन्दश्च सेनापतिः।
विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिस्तारापतिश्चन्द्रमाः, इत्येते पतयः सुपर्णसहिताः, कुर्वन्तु वो मंगलम्।।५।।

गंगा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविन्दगोवर्द्धनो, गीता गोमयगौरिजो गिरिसुता गंगाधरो गौतमः।
गायत्री गरुड़ो गदाधर-गया गम्भीर-गोदावरी, गन्धर्वग्रहगोपगोकुलगणः कुर्वन्तु वो मंगलम।

श्री सुदामा चरित्र

नाथ जाओ चले

नाथ जाओ चले द्वारिका को, इस नगर में गुजारा नहीं है।
दूर करदेंगे दुःख मुरली वाले, और किसी का सहारा नही है।।
कैसे जाऊँ प्रिये द्वारिका को, तुमने सोचा बिचारा नही है।
देखलो तन के कपड़े फटे हैं, हाल अच्छा हमारा नहीं है।।
बात मानो तुम स्वामी हमारी, मित्रता है श्याम से तुम्हारी।
देख लो तो मुसीबत मे किसने, मुरली वाला पुकारा नहीं।।

चले श्याम सुन्दर से

चले श्याम सुन्दर से मिलने सुदामा, गाते जाते मन में हरे कृष्ण रामा।। टेक।।
लोटा व डोर उन काँधे लटकाये, तंदुल की पोटली बगल में दबाये।
जाते जाते पहुँचे श्री द्वारिका के धामा।। चले श्याम सुन्दर से मिलने सुदामा।।
महलों के बीच सुदामा जी आये, छोड़ के सिंहासन प्रभु जी उठि धाये।।
नहला धुलाय प्रभु सिंहासन बैठाये, उत्तम उत्तम भोजन अपने हाथ से कराये।
पैर दावि पंखा झुलावें सत्यभामा, चले श्याम सुन्दर से मिलने सुदामा।।
पूछे सुदामा जी से कुँवर कन्हाई, कहो कौन भेंट भेज्यो है भौजाई।
दो मुट्ठी तंदुलों से दिया धन धामा, चले श्याम सुन्दर से मिलने सुदामा।।
चले श्याम सुन्दर से मिलने सुदामा, गाते जाते मन में हरे कृष्ण रामा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

एक ही गुरु के पास

एक ही गुरु के पास दोनों पढ़े थे।
श्री कृष्ण छोटे और सुदामा बड़े थे।।१।।
एक दिन गुरुजी ने, दोनों को बुलवाया।
लाने को लकड़ियाँ, वन में था भिजवाया।।२।।
पाकर के आज्ञा दोनो, वनको चले थे।।श्री कृष्ण।।
वनमें गये जब वो, आँधी जोर की आई।
होने लगी वर्षा, अंधेरी रात सी छाई।।३।।
एक ही पेड़ के नीचें, दोनों खड़े थे।।श्रीकृष्ण।।
लगी भूख दोनों को, घर याद आया।
सुदामा ने छुप कर, चना था चबाया।।
चाब लिये दानें जों, माता ने दिये थे।।श्री कृष्ण।।
सुदामा ने छुप कर, चोरी से चने खाये।
नही उसने अपने प्रेमी को बतलायें।।४।।
इसी कर्म से सुदामा, निर्धन बने थे।।श्री कृष्ण।।

तेरे दर को छोड़कर

तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊँ मैं। सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं।।
जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठायें हैं।।
क्या जानूँ इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं।।
हूँ शरमिन्दा आपसे, क्या बतलाऊँ मैं।।१।।तेरे दर को।।
मेरे पाप कर्म ही तुझ से, प्रीत न करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलूं आप से, रोक मुझे ये लेते हैं।।
कैसे स्वामी आप के, दर्शन पाऊँ मैं।।२।।तेरे दर को।।
है तू नाथ वरों का दाता, तुझ से सब वर पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं।।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।।३।।तेरे दर को।।
जो बीती सो बीती लेकिंन, बाकी उम्र संभालूँ मैं।
प्रेम पाश में बंधा आपकें, गीत प्रेम के गालूँ मैं।।
जीवन प्यारे देश का, सफल बनाऊँ मैं।।४।।तेरे दर को।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दया के धाम हो

दया के धाम हो भगवन्, दया की हड़ताल न करना।
मेरे पापों को हे प्रभु जी, कभी पड़ताल न करना।। टेक।।
गुनाहों की सजा देदो, मगर मुँह फेर ना मुझसे।
बड़ी आशा से आया हूँ, मुझे बे आश न करना।।
तेरे ही नाम के धन से, बना हूँ शहनशाह भगवन।
निकल कर मेरे हृदय से, मुझे कंगाल न करना।।

जावो मोहन के दरबार

जावो मोहन के दरबार बोली सुदामा की नार। दुःखहारी बड़े हैं मुरारी नटवर।। टेक।।
चावल की बांधे हुए बगल में पोटरिया, जाइके पहुंचे हैं श्याम की नगरिया।
जूते पावों में नादार, ढूंढे कान्हा का दुवार, दुःखहारी बड़े हैं मुरारी नटवर।।१।।
बोलो द्वारपालो कहाँ रहते सांवरिया, आने की मेरी उन्हें कर दो खबरिया।
बोला दरबारी फ़क़ीर आया एक दीन सरकार, दुःखहारी बड़े हैं मुरारी नटवर।।२।।
लाये सुदामा की कीन्हा है खतरिया, चावल की पुटली खींचा है संवरिया।
मूठी मुँह में ली दो डार, पकड़ा हाथ रुक्मिणी नार, दुःखहारी बड़े हैं मुरारी नटवर।। ३।।
घर को बिदा हो पकड़ी डगरिया, मन में विचारें कुछ दियो ना संवरिया।
भेजा मुझको नाहक नारि, जानि तोड़ा देइ हैं हजार, दुःखहारी बड़े हैं मुरारी नटवर।।४।।
घर जाय पहुंचे तो मिलैना झोपड़िया, रचा है रमेश वहां महल और अंटरिया।
बोली अंटा परसे नारि मोहन दियो मुसीबत टार, दुःखहारी बड़े हैं मुरारी नटवर।।५।।

दीन बन्धु मेरे

दीन बन्धु मेरे, आये द्वारे तेरे, को निभाना। मेरी बिगड़ी को भगवन् बनाना।।
सिर पै पापों की गठरी धरी है, नाथ क्यों तुमने देरी करी है।
है विपत्ति पड़ी, मुझको आशा तेरी, आ बचाना। मेरी बिगड़ी।।
ये भँवर में पड़ी मेरी नैया, नाथ तुम बिन कौन है खेवैया।
तुम हो तारन तरण, नाथ विपदा हरण, पथ निभाना।। मेरी बिगड़ी।।
तुमने लाखों ही पापी जो तारे, दीन दुखियों के संकट उबारे।
आय त्रास हरो, पार भव से करो, ना भुलाना।। मेरी बिगड़ी।।
तेरे दर का लिया है सहारा, नाथ तुम बिन कौन है हंमारा।
मैं करूँ नित नमन, मेरे आवागमन, को छुड़ाना।। मेरी बिगड़ी।।
दीन बन्धु मेरे, आये द्वारे तेरे, को निभाना। मेरी बिगड़ी।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बड़ी निठुराई तैने

बड़ी निठुराई तैने धारी रे सुदामा भैया।।
बहुत दिनन में आय मिल्यो है, अब तक क्यों सुरति विसारी।। रे सुदामा०।।
कृष्ण- एतो दुख पायो, मेरे पास क्यों ना आयो,
समय वृथा ही गँवायो, मोहि याही को बिलग।
वस्त्र फटे और पुराने, अंग सकल सुखाने,
नहिं जात पहिचाने, पनहियाँ नाहीं पग।।
फटी बेवाई दोऊ चरणन में, क्यों बनि रह्यो भिखारी।। रे सुदामा०।।
सुदामा- लीला तुम्हारी, जग से न्यारी, रे चितचोर कन्हैया।
अगम वेद विधि हरि हरहू को, फिर मैं तो निपट अनारी।। रे चितचोर०।।
एतो दुःख पाय, नीर नयन न बहाय,
देके श्राप पछताय, तेरी लीला है अपार।
समय- समय की है बात, दोनों पढ़े एक साथ,
एक भीख माँग खाय, एक बन्यो साहूकार।।
मैं अति दीन और तू भैया, दीनन पति हितकारी।। रे चितचोर०।।
कृष्ण- एक जग प्रतिपाल, दूजो बन्यो हैं कंगाल,
ऐसी विधिना की चाल, कछु लागे विपरीत।
दीन और दीनबन्धु, को अटूट है सम्बन्ध,
कोटि करे कोई यत्न, पर टूटे नहिं प्रीति।।
लई दरिद्रता बाँधि गाँठ ते, सुरति ना मेरी बिसारी।। रे सुदामा०।।
सुदामा- धन्य-धन्य यदुराई, मेरी करत बड़ाई,
निज प्रभुता भुलाई, और बनाई मेरी बात।
कहाँ पाते मित्रताई, जैसे आपने निभाई,
मैने भीख माँग खाई, मेरी क्या औकात।।
धोवैं चरण दरिद्री के तू, यह प्रभुता बनवारी।। रे चितचोर०।।
कृष्ण- करे व्यर्थ की क्यों बात, पंडिताई क्यों दिखात,
भाभी भेजी सौगात, सो जल्द दे दिखाय।
वह मोकूँ अति प्यारी, याद करत हमारी,
कैसी रहत विचारी, बाकी कुशल तो सुनाय।।
लायो है सो बेगि देखाय दे, लगी चटपटी भारी।। रे सुदामा०।।
सुदामा- तू है द्वारका नरेश, मेरो साधू को सो भेष,
तेरी भाभी को सन्देश, कहिवे में लगे लाज।
जाको भरे नहीं पेट, ओ क्या भेजेगी भेंट,
लगी दरिद्रता की चपेट, याते यहाँ आये भाजि।।
आयो हूँ कछु खास काम ते, कहि ना सक्यो वनवारी।। रे चितचोर०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सुदामा करि रह्यो

सुदामा करि रह्यो सोच विचार, महल ये कित से आयो है।
कहूँ मारग तो नहिं गयो भूल, लौट फिर द्वारिका आयो है।। सुदामा०।।
ग्राम छोड़ि क्यों द्वारिका धायो, मैं ब्राह्मण धन देखि लुभायो।
कोरी खातिर मिली मोय कछु हाथ ना आयो है।। सुदामा०।।
मेरी भामिनी भोरी-भारी, ये तो है विपदा की मारी।
अतो-पतो कोई मोय बता दे, मैं दुखियारी रे।। सुदामा०।।
यहाँ रही मेरी टूटी झोपड़िया, यामे ही मेरी टाट गुदरिया।
उलट-पुलट कर काहू नृप ने, एहि भाँति महल चिनायो है।। सुदामा०।।
देख भामिनी दौड़ी आई, चरण पकड़ कर आशिष पाई।
श्री जगतपति ने कृपा करि, सब कष्ट मिटायो है।। सुदामा०।।

करले नारायण से प्यार

करले नारायण से प्यार यही दुनिया में सार। ऐसी काया तुझे न मिलेगी बारम्बार।। टेक।।
क्या तू यहां लाया, क्या संग ले जायेगा। सब कुछ बन्दे तेरा, यहीं रह जायेगा।
यह सब धोखे का संसार इसमें फँसना हे बेकार।। ऐसी काया।।१।।
काया तुम्हारी नहीं, माया तुम्हारी नहीं। दूर मुसाफिर तेरा होगा ठिकाना कहीं।
तेरी हो जायेगी छार, मत प्रभु को बिसार।। ऐसी काया।।२।।
नाम प्रभु का भूला विषयों के झूले झूला। भटक रहा है काहें, मद में तू फूला-फूला।
खुला यम का है द्वार,जो कि पहले से तैयार।। ऐसी काया।।३।।
ना कोई संगी तेरा, ना कोई तेरा साथी। बुझ जायगी तेरी, जीवन की बाती।
होना वैतरणी से पार जरा करले तू विचार।। ऐसी काया।।४।।
जाना मुसाफिर तोहें, राम नगरिया। राह कठिन हे तेरी, सकरी डगरिया।
उसको करना मुश्किल पार, बैठेचोर नम्बरदार।। ऐसी काया।।५।।
राम सुमिरले बन्दे थोड़ा सुकृत करले। हरि गुण गाकर बन्दे भव से तू तरले।
"लक्ष्मण" काया को सुधार, होगा जीवन का उद्धार।। ऐसी काया।।६।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अरे द्वारपालो

अरे द्वारपालो कहो जा हरि से, मिलने सुदामा गरीब आ गया है।।
महलों में जा करके दरबान बोला, द्वारे भिखारी अजीब आ गया है।। अरे०।।
सिर पर ना टोपी बदन पे ना आँगा, ना पैरों में पदत्राण उसके दिखाते,
नहीं मानता कहता मोहन से कह दो, मिलने सखा बदनसीब आ गया है।।
सुनकर उठे श्याम नंगे पगों से, आने में देरी ना फिर कुछ लगाई,
लिपट कर सुदामा के सीने से रोये, कहा दौड़ो रुक्मिणि हबीब आ गया है,
सुसज्जित किया वस्त्र आभूषणों से, कहा मित्र कर भूल इधर कैसे आये,
सुदामा जी बोले घर वाली भेजी, दरश पाने तेरा गरीब आ गया है।। अरे०।।
रहे द्वारका में कुछ दिन सुदामा, चले जब वहाँ से तो घनश्याम बोले,
ना घबराओ प्यारे सुदामा विनोद अब खुशी का जमाना करीब आ गया है।।

आओ कन्हैया

आओ कन्हैया, आओ मुरारी, तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी।। टेक।।
क्या मैं बताऊँ, क्या मैं सुनाऊँ, एक दुख नहीं जो मैं मन में छिपाऊँ।
घट-घट की जानत हो, तुम हे मुरारी।। तेरे दर पे।।
नयनों में आँसू उठे ना कदम है, आओ कन्हैया अब तो होठों पे दम है।
आकर के देखो, दशा तुम हमारी ।। तेरे दर पे।।
ना तो डगर है ना कोई घर है, फटे हुये कपड़े हैं तुझे सब खबर हैं।
क्या तुम परीक्षा, लेते मुरारी।। तेरे दर पे।।
आवाज मेरी पहुँची नही क्या, दरवान ने तुझको खबर ही न दी क्या।
जरा आके देखो, दशा ये हमारी।। तेरे दर पे।।
क्या मुझसे दोष हुआ, हुआ क्या गुनाह है, दीनों के नाथ क्यों तू निष्ठुर बना है।
पाप किया है, क्या हमने भारी।। तेरे दर पे।।
आओ कन्हैया आओ छूटे अब दम है, अगर अब ना आये तुमको माँ की कसम है।
सुन के कसम पहुँचे, मिलने मुरारी।। तेरे दर पे।।

सीस पगा न झगा तन पे, प्रभु जाने को आहि बसै केहि गाँमा।
धोती फटी सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहि सामा।।
द्वार खड्यो द्विज दुर्बल देखि रह्यो चकि सो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपुनो नाम सुदामा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सुदामा सुनि बानी तन दशा भुलानी, कलश लिए रानी रही न सुधि पानी की।
द्वार पर धाये, बाँह फैलाये, अंग लपटाये, रही न याद चक्र चीर पानी कीं।।
अँसुवन झरैं नैन बोलें नहिं बैन, देखैं नहिं सैन सखा सुदामा अगवानी की।
देखत सब देव नर किन्नर प्रेमप्रवाह, भर शशि ज्यों सागर दशा ऐसे दीनदानी की।।

ऐसे बिहाल विवाइन सो पग कंटक जाल लगे पुनि जोये।
हाय महा दुःख पाय सखा तुम आये इतै न कितै दिन खोये।।
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करके करुणा निधि रोये।
पानी परातको हाथ छुओ नहिं नैननके जल सों पग धोये।।

एक मास दो पांख में दो एकादशी होंय। मेरे घर गोपाल जी सदा एकादशी होय।।
होनी है सो हो चुकी अब ना ऐसी होय। भाभी तेरे महल में नित्य द्वादशी होय।।

हाथ गह्यो प्रभु को कमला, नाथ कहा तुमने चित धारी।
तन्दुल खाय मुठी दुई दीन, दियो तुमने दो लोक विहारी।।
खाय मुठी तिसरी अब नाथ, कहाँ निज वासकी आस विचारी।
रंकहि आपु समान कियो, तुम चाहत आपन होन भिखारी।।
क्यौ रसमें विष वाम कियो तुम खान दियो और न एक फंका।
भामिनि मोहि जिवाँय भली विधि कौन रह्यो जगमें नर रंका।।
लोग कहैं हरि मित्र दुःखी हमसे न सह्यो यह जात कलंका।।

प्रभु दर्शन

मधुबन की लताओं में, घनश्याम तुझे देखूँ।
घनघोर घटाओं मे, घनश्याम तुझे देखूँ।।
यमुना का किनारा हो, चंचल सी धारा हो।
होठों पैं धरी मुरली, घनश्याम तुझे देखूँ।।
जब मुरली बजाते हो मन्द-मन्द मुस्काते हो।
सखियों को बुलाते हो, मेरे मन को लभाते हो।।
सन्ध्या या सवेरा हो, दिन हो या अन्धेरा हो।
सो जाऊँ तो सपनों में, घनश्याम तुझे देखूँ।।
तिरछे ही खड़े हो नटवर, तिरछा ही मुकुट सिर पर।
प्रभु रास रचाते हुए प्रभु मुरली बजाते हुए।।
भव सिन्धु में जब भगवन्, नैया मेरी डगमग हो।
पतवार लिए कर में, घनश्याम तुझे देखूं।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तेरे पूजन को भगवान

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मंदिर आलीशान।। टेक।।
किसनें जानी तेरी माया, किसनें भेद तुम्हारा पाया।
हारे ऋषिमुनि कर ध्यान, बना मन मंदिर आलीशान।। तेरे पूजन को।।
तूही जल में, तूही थल में, तूही मन में, तूही बन में।
तेरा रूप अनूप जहान, बना मन मंदिर आलीशान।। तेरे पूजन को।।
तू हर गुल में, तू बुलबुल में, तू हर डाल के हर पातन में।
तू हर दिल में मूरतिमान, बना मन मंदिर आलीशान।। तेरे पूजन को।।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बैठाये।
तेरी लीला परम महान, बना मन मंदिर आलीशान।। तेरे पूजन को।।
झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यों भरमाया।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मंदिर आलीशान।। तेरे पूजन को।।

दशा मुझ दीन की भगवन्

दशा मुझ दीन की भगवन्, सम्हालोगे तो क्या होगा।
अगर चरणों की सेवा में, लगा लोगे तो क्या होगा।। दशा...
मैं नामी पातकी हूँ और, नामी पापहर तुम हो।
ये लज्जा दोनों नामों की, बचा लोगे तो क्या होगा।। दश...
जिन्होंने तुमको करुणा कर, पतित पावन बनाया है।
उन्हीं पतितों को तुम पावन, बना लोगे तो क्या होगा।। दशा...
यहां सब मुझ से कहते हैं, तू मेरा है तू मेरा है।
मैं किसका हूँ ये झगड़ा तुम, मिटादोगे तो क्या होगा।। दशा...
अजामिल, गीध, गणिका जिस, दया गंगा में तरते हैं।
उसी में बिन्दु सा पापी, मिला लोगे तो क्या होगा।। दशा...,

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भगवान मेरी नैया

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना। अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।
दल-बल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर। तुम देखते न रहना झट आके बचा लेना।।
तुम इष्ट मैं उपासक, तुम देव मैं पुजारी। यह बात अगर सच है, सच करके दिखा देना।।
सम्भंव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊं। पर नाथ कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना।।
हम मोर वनके मोहन, नाचा करेंगे बनमें। तुम श्यामघटा बनकर, इस बनमें उठा करना।।
बन करके हम पपीहा, पी पी रटा करेंगे। तुम स्वाति बूँद बन कर, प्यासे पे दया करना।।
हम राधेश्याम जगमें, तुम ही को निहारेंगे। तुम दिव्यज्योति बनकर आखों में रहा करना।।

इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकलें।
गोविंद नाम लेकर, तब प्राण तन से निकलें।।
श्री गंगा जी का तट हो, या यमुना जी का तट हो।
मेरा साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकलें।।
श्री वृन्दावन सा थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो।
विष्णु चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकलें।।
मेरा सांवरा खड़ा हो, बंशी में सुर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकलें।।
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पे काली लट हो।
ये ही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकलें।।
उस वक्त जल्दी आना, मुझको न भूल जाना।
नूपुर की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकलें।।
जब कंठ प्राण आवे, कोई रोग न सतावे।
यम त्रास ना दिखावे, जब प्राण तन से निकलें।।
तेरा नाम आवे मुख से, मेरा प्राण निकले सुख से।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकले।।
यह नेक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है।
यह दास की गरज है, जब प्राण तन से निकलें।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तेरी बन जायेगी

तेरी बन जायेगी, गोविंन्द गुन गायेसे। गोन्दिगुण गायेसे, रामगुण गायेसे। टेर।।१।।
ध्रुवकी बन गई, प्रहलादकी बन गई। द्रौपदी की बन गई, चीर के बढ़ायेसे। तेरी।।
बालीकी बन गई, सुग्रीवकी बन गई। हनुमतकी बन गई, सिया-सुधि लायेसे। तेरी०।।
नन्दकी बन गई, यशोदा की बन गई। गोपियनकी बन गई, माखनके खवायेसे। तेरी०।।
गजकी बन गई, गीधकी बन गई। केवटकी बन गई, नाव पै चढ़ायेसे। तेरी०।।
ऊधवकी बन गई, भीष्मकी बन गई। अर्जुनकी बन गई, गीता-ज्ञान पायेसे। तेरी०५।।
तुलसीकी बन गई, सूराकी बन गई। मीराकी बन गई, गोविन्दके रिझायेसे। तेरी०।।६।।

कल कुण्डल कान्ति

कल कुण्डल कान्ति कपोलन पै बिखरी अलकावलियाँ घुँघराली।
अधरामृत स्वाद समुद्र भरी मुसकान छटा अति ही सुखकारी।।
करती रहे वृष्टि कृपा की सदा करुणावरुणालय दृष्टि तुम्हारी।
शशिमण्डल सो मुखमण्डल ये जिसे देख बनी हम दासी तुम्हारी।।

जब सौंप दिया

जब सौंप दिया सब भार तुम्हें, फिर मारो या त्यारो कहें हम क्या।
अब आप ही प्यारे विचार करो, इस दीन दुखी को सहारा है क्या।।
मँझधार में लाके डुबाओ हमें, चाहे पार लगाओ किनारे पे ला।
हम तेरे हैं तेरे रहेंगे सदा, अब और किसी को निहारेंगे क्या।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राम कहो, घनश्याम कहो

राम कहो, घनश्याम कहो, तुम बोलो सीताराम रे। बीत रही है उमरिया।
मधुर-मधुर जग के स्वपनों में, तूने जन्म कंवाया।
कभी न मन मन्दिर में तूने, प्रेम से हरि को ध्याया।
चाम लगे न दाम लगे न, कौड़ी और छदाम रे। बीत रही है उमरिया।।
कदम कदम पर पाप अनेंकों, तूने रोज कमाए,
कभी न हरि कीर्तन में जाके, तूने हरि गुण गाये।
झूठी काया झूठी माया, क्यों तू बना गुलाम रे। बीत रही है उमरिया।
हाड़ मास का यह तन तेरा, आज है कल नहीं रहना,
ये तड़क-भड़क, यह चमक-दमक, न देवेगी कुछ काम रे। बीत रही है उमरिया।
चेत अरे माटी के पुतले, नश्वर है तेरी काया,
चार दिनों .कि जिन्दगानी में, तू काहे भरमाया।
ध्यान करो, गुण गाण करो, ले लो प्रभु का नाम रे। बीत रही है उमरिया।
राम कहो घनश्याम कहो, तुम बोलो सीताराम रे।।

श्रीराम कहे सुखी

निर्धन कहे धनवान सुखी, धनवान कहे सुख राजा को भारी।
राजा कहे चक्रवर्ती सुखी, चक्रवर्ती कहे सुख इन्द्र को भारी।
इन्द्र कहे श्री राम सुखी, श्री राम कहे सुखसंतन को भारी।
संत कहें संतोष में सुख है, बिना सन्तोष, सब दुनिया दुखारी।।

ज्ञान बढ़े गुणवान की संगत, ध्यान बढ़े तपसी संग कीन्हें।
मोह बढ़े परिवार की संगत, लोभ बढ़े धन में चित दीन्हें।।
क्रोध बढ़े नर मूढ़ की संगत, काम बढ़े नारी संग कीन्हें।
बुद्धि विवेक विचार बढ़े, कवि 'दीन' सुसज्जन संगत कीन्हें।।१।।
ज्ञान घटे नर मूढ़ की संगत, ध्यान घटे चित विषय भ्रमायें।
तेज घटे पर नारी की संगत, बुद्धि घटे बहु भोजन खाये।।
प्रेम घटे नित ही कुछ मांगत, मान घटे नित पर घर जाये।
दियाल कहे सुन रे मन मूरख, पाप घटे हरि के गुण गाये।।२।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उलझ, मत दिल

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या।
सहारे टूट जाते हैं, सहारों का भरोसा क्या।
तमन्नायें जो तेरी हैं फुहारें है ये सावन की।
फुहारें सूख जाती हैं फुहारों का भरोसा क्या।।१।।
दिलासे जो जहाँ के हैं, सभी रंगीं बहारें हैं।
बहारें रूठ जाती हैं, बहारों का भरोसा क्या।।२।।
तू सम्बल नाम का लेकर, किनारों से किनारा कर।
किनारे टूट जाते हैं, किनारों का भरोसा क्या।।३।।
अगर विश्वास करना है, तो कर दुनियां के मालिक पर,
धनी, अभिमानी, लोभी, दुनियादारों का भरोसा क्या।।४।।
तू अपनी अक्लमंदी पर, विचारों पर न इतराना।
जो लहरों की तरह चंचल, विचारों का भरोसा क्या।।५।।
परम प्रभु की शरण ले, विकारों से सजग रहना,
कहां कब मन बिगड़ जाये, विकारों का भरोसा क्या।।६।।
उलझ मत दिन बहारों...

हम तो तेरी

हम तो तेरी शरण में आये, श्री बालाजी गोविंदा।
लाज बचालो आज हमारी, वेंकटरमणा गोविंदा, भक्त वत्सल गोविंदा। टेक।।
दूर देस से चलकर भगवन्, तिरूपती हम आये हैं,
तेरे चरणों में अर्पण करने, प्रेम भेंट हम लाये हैं।
हमको अपनी शरण में लेलो ऽ ऽ श्री बालाजी गोविंदा।। लाज बचालो।।
गोविंद राज के दर्शन करके, तिरुमलाई आये है,
बेद शास्त्र की महिमा सुनकर, पुष्करणी में न्हाये है।
वराहराज की करी रे अर्चना ऽ ऽ तेरे खातिर गोविंदा।। लाज बचालो।।
प्रथम आपके नगरी में हम, सारे दर्शन पाये है,
तेरे दर्शन करने को हम, धर्म की बारी लगाये है।
इस बारी के पिंजरे में हम ऽ ऽ नाम जप रहे गोविंदा।। लाज बचालो।।
जैसे तैसे करकर भगवन्, तेरे सम्मुख आये हैं,
जरगुंडी-जरगुहकर-गुहकर, हमको दूरहटाये है।
मनकी आस अधूरी रह गयी ऽ ऽ, दर्शन खातिर गोविंदा।। लाज बचालो।।
प्रभुजी तुम हो जग के ठाकुर, स्वप्न में हमसे मिला करो,
भजन मंडल ने लिख दी हुंडी ऽ ऽ, आप स्वीकारो गोविंदा।। लाज बचालो।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मन निर्मल भया

दोहा :- कविरा मन निर्मल भया जैसा गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरे कहत कबीर कबीर।
खुदी को कर बुलन्द इतना, कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बंदे से यूं पूछें, बता तेरी रजा क्या है।।

डूबतों को बचा लेने वाले

डूबतों को बचा लेने वाले, मेरी नैया है तेरे हवाले।। टेक।।
लाख अपनों को मैंने पुकारा, सब के सब कर गए हैं किनारा।
और कोइ न देता दिखाई, सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।
कौन तुझ बिन भँवर से निकाले।। मेरी नैया है तेरे...।।
जिस समय तू बचाने पे आवे, आग में भी बचा कर दिखावे।
जिस पे तेरी दया दृष्टि होवे कैसे उस पे कहीं आँच आवे।
आँधियों में भी तू ही संभाले।। मेरी नैया है तेरे...
पृथ्वी सागर व पर्बत बनाए तूने धरती पे दरिया बहाए।
चांद सूरज करोड़ों सितारे, फूल आकाश में भी खिलाए।
तेरे सब काम जग से निराले।। मेरी नैया है तेरे...
बिन तेरे चैन मिलता नहीं है, फूल आशा का खिलता नही है।
तेरी मरजी बिना तो जहां में, एक पत्ता भी हिलता नहीं है।
तेरे बस में अंधेरे उजाले। मेरी नैया है तेरे...

धुन

छीन लिया मेरा छोटा मन, मेरो भोला सा मन।
मदन मोहन प्यारे मदन मोहन, गोपियों का प्यारा मदन मोहन।
मेरो राधा रमण, मेरो राधा रमण, मेरो राधा रमण, मेरो राधा रमण।।

हम सेवक राधा रानी के, हम चाकर राधा रानी के।
हम सेवक राधा रानी के, हम चाकर राधा रानी के।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गोपाला गोपाला जय नन्दलाला, गोपाला गोपाला जय नन्दलाला।
जय नन्दलाला मदन गोपाला, जय नन्दलाला मदन गोपाला।
जय नन्दलाला जय वंशीवाला, जय नन्दलाला जय वंशीवाला।
जय वंशीवाला नन्दजीकालाला, जय वंशीवाला नन्दजीकालाला।

गागर मे सागर भर आया, ब्रह्म यशोदा तेरे घर आया।
कान्हा तेरी वंशी बजे धीरे-धीरे, लाला तेरी मुरली बजे धीरे-धीरे।
बजे धीरे-धीरे जमुना के तीरे, श्याम तेरी वंशी बजे धीरे-धीरे।

राधे कृष्णा गोविन्दा, गोपाल राधे माधवा, राधे कृष्णा गोविन्दा, गोपाल राधे माधवा।
जय भोले, बम भोले, राम दरस मारग खोले, जय भोले, बम भोले, राम दरस मारग खोले।

राधे राधे राधे राधे, राधे गोविन्दा। राधे गोविन्द भजो वृन्दावनचन्दा।
राधे गोविन्द भजो, बाल मुकुन्दा। राधे गोविन्द भजो वृन्दावन चन्दा।
राधे राधे राधे राधे, राधे गोविन्दा। राधे गोविन्द भजो वृन्दावनचन्दा।।

राधे राधे गोविन्द, गोविन्द राधे। गोविन्द राधे गोपाल राधे।
राधे राधे गोविन्द, गोविन्द राधे। गोविन्द राधे गोपाल राधे।।

मेरी लाडो का नाम श्री राधे, वृज रानी का नाम श्री राधे।
कृष्ण प्यारी का नाम श्री राधे, श्यामा रानी का नाम श्री राधे।
राधे राधे बोलो सहारा मिलेगा, जग में न कोई हमारा मिलोगा।
राधे राधे बोलो सहारा मिलेगा, जीवन न तुमको दुवारा मिलेगा।।

मेरे बाँके विहारी जय हो तुम्हारी, मेरे बाँके विहारी जय हो तुम्हारी।
मेरे कुञ्ज विहारी जय हो तुम्हारी, मेरे गिरवरधारी जय हो तुम्हारी।
मेरे कृष्ण मुरारी जय हो तुम्हीरी, मेरे रास विहारी जय हो तुम्हारी।
मेरे बाँके विहारी जय हो तुम्हारी, मेरे बाँके विहारी जय हो तुम्हारी।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला, भजो कृष्ण कन्हैया नन्दलाला।
मुरली मनोहर नन्दलाला, भजो नन्द यशोदा के लाला।

गोविन्द हरे गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे।
गोविन्द हरे गोपाल हरे, जय नन्द यशोदा के लाल हरे।

दाऊ जी को भैया कृष्ण कन्हैया, दाऊ जी को भैया कृष्ण कन्हैया।
माखन चुरैया कृष्ण कन्हैया, नाग नथैया कृष्ण कन्हैया।
गाय चरैया कृष्ण कन्हैया, वंशी बजैया कृष्ण कन्हैया।
रास रचैया कृष्ण कन्हैया, गिरिवर उठैया कृष्ण कन्हैया।
रंग के काले कृष्ण कन्हैया, मन के प्यारे कृष्ण कन्हैया।
दाऊ जी को भैया कृष्ण कन्हैया, दाऊ जी को भैया कृष्ण कन्हैया।

वृन्दावन बाँके विहारी को, बरसानो राधा प्यारी को।
वृन्दावन गिरिवर धारी को, बरसानो श्यामा प्यारी को।।
वृन्दावन रास विहारी को, बरसानो भानु दुलारी को।
वृन्दावन कुञ्ज विहारी को, बरसानो कीर्ति कुमारी को।
वृन्दावन विपिन विहारी को, बरसानो ब्रज रखवारी को।।
वृन्दावन बाँके विहारी को, बरसानो राधा प्यारी को।।

जय राम लला जय जनक लली, जय जय लक्ष्मण बंजरग बली।।

हे केशवा मधुसूदना, माधवा नारायणा। श्री राम कृष्ण गोविन्द नारायणा।
नारायणा जय जय नारायणा, श्री राम कृष्ण गोविन्द नारायणा।।

सीता राम जय सीता राम, राधे श्याम जय राधे श्याम।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

एकादश एवं द्वादश स्कन्ध

मेरे भगवन् मैं कुरबां

मेरे भगवन् मैं कुरबां तेरी शान तो, मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है।
भगवन् आजा मैं कुरबां तेरी शान पर, दो निगाहे कर्म अब तेरे हाल पर।
छोड़ दी मैंने किस्ती तेरे नाम पर, अब किनारे लगाना तेरा काम है।। मेरे भगवन्।।
पूरी दाता जी मन की तमन्ना करो, दर पे आये भिखारी की झोली भरो।
तेरे मुजरिम तेरे दर पे हाजिर हुये, अब इन्हे बख्सना तेरा काम है।। मेरे भगवन्।।
किससे शां दिल की हालत मै जाकर कहूँ, किससे फरयाद जाके मैं अपनी करूँ।
तेरे नाते सुनाना मेरा काम है, मेरे गम को मिटाना तेरा काम है।। मेरे भगवन्।।
इक तेरे ही दर ते मेरी फरियाद है, मेरे जख्म की मरहम तेरे पास है।।
दिल दो किश्ती तुफानां ने आके घेरी, अब किनारे लगाना तेरा काम है।। मेरे भगवन्।।
तेरी चौखट पे आना मेरा काम है, और गले से लगाना तेरा काम है।
ठोकरें खा के गिरना मेरा काम है, हर कदम पे उठाना तेरा काम है।। मेरे भगवन्।।
जिसको दुनिया में कोई न अपना कहे, उसको अपना बनाना तेरा काम है।। मेरे भगवन्।।

अगर दिल किसी का दुखाया न होता

अगर दिल किसी का दुखाया न होता, जमाने ने तुझको सताया न होता।
न होते तेरी आँख में आज आँसू, किसी हसते दिल को रुलाया न होता।।
न मिलते कदम दर कदम तुझको काँटे, जो काँटा किसी को चुभाया न होता।
न घर मे अंधेरा तेरे आज होता, जो दीपक किसी का बुझाया न होता।।

यह दुनियाँ

यह दुनियाँ अरे भोले इक राम कहानी है, यहाँ कोई नही अपना दुनियाँ ही वेगानी है।।
जब फूल सा बचपन भी कायम न रहा तेरा, हर श्वास यह कहता है रहती न जवानी है।।
मोह माया में फंस करके क्यों खुद को भुला बैठा, जो आया उसे जाना यह रीत पुरानी है।।
यहाँ कुछ भी नही अपना सब चीज बेगानी है।।
श्रीकृष्ण से तेजस्वी और अर्जुन से धनुषधारी, रावण की बता जग में क्या नाम निसानी है।।
शुभ कर्म ही साथी है सुख दुख में सदा तेरे। दुनिया ने तो दुनिया की दुविधा ही बढ़ानी है।।
प्रभु नाम का प्याला पी जो तू मुक्ति चाहता है, जीवन की अगर नैया उस पार लगानी है।।
यह दुनियां अरे भोले इक राम कहानी है।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मधुवन की लताओं में

मधुवन की लताओं में, घनश्याम तुझे देखूँ।
घनघोर घटाओं में, घनश्याम तुझे देखूँ।।
यमुना का किनारा हो, चंचल सी धारा हो।
होठों पै धरी मुरली, घनश्याम तुझे देखूँ।।
जब मुरली बजाते हो, मन्द-मन्द मुस्काते हो।
सखियों को बुलाते हो, मेरे मन को लुभाते हो।।
संध्या या सबेरा हो, दिन हो या अंधेरा हो।
सो जाऊँ तो सपनों मे, घनश्याम तुझे देखूँ।।
तिरछे ही खड़े हो नटवर, तिरछा ही मुकुट सिर पर।
प्रभु रास रचाते हुये, प्रभु मुरली बजाते हुये।।
भव सिन्धु में जब भगवन, नैया मेरी डगमग हो।
पतवार लिये कर में, घनश्याम तुझे देखूँ।।

हीरे जैसा जन्म मिला

हीरे जैसा जन्म मिला, प्रभु पाने के लिये।
वन्दे तूने कुछ किया नहीं, भव तर जाने के लिये।।
भजन बिना ओ मूर्ख बन्दे हीरा जन्म गंवाया है।
पाप कम नित करके प्राणी, प्रभु को तुमने भुलाया है।
मुख मिला था ईश्वर के गुण गाने के लिये।। वन्दे तूने।।
माया जोड़ी लाख करोड़ी, माया हित तू जीता है,
अपने हाथों जान बूझकर, जहर का प्याला पीता है।
भाई वन्धु सव कुटुम्ब कबीला, है सब खाने के लिये।। बन्दे तूने।।
अभी समय है समझ ले प्यारे ईस्वर के गुण गाओ तुम।
लाख चौरासी के चक्कर से, अपने आप बचाओ तुम।
गुरुजी आये है हम सबको, समझाने के लिये।। बन्दे तूने।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मुझे कौन पूछता था

मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।
मैं तुझको ढूढँता था, इस जिन्दगी से पहले।।
मेरी जिन्दगी थी ऐसी, जैसे खा़ली सीप होती है।
मेरी बढ़ गयी है कीमत, तूने भर दिये है मोती।
मैं दर दर भटक रहा था, तेरी बन्दगी से पहले।।१।।
मै तो कुछ भी नहीं था, मेरी कुछ नही थी हस्ती।
मै तो यूँ भटक रहा था, तूफान में हो किस्ती।
मै बुझा हुआ दिया था, तेरी बन्दगी से पहले।।२।।
तू तो सद्‌गुरु बड़ा है, तेरी रहमतें बड़ी है।
तुझे क्या-क्या मैं बताऊं, जो इस दास पर पड़ी है।
न यह गीत न गला था, तेरी बन्दगी से पहले।।३।।

आशा ही जीवन, मरण निराशा अरु, आशा ही मनुष्य की, समस्त अभिलाषा है।
आशा वश कोटिनु, अपमान सहकर भी नर, बोलता विहँस के, सुधामयी भाषा है।
आशा वश कोटिन, यज्ञ-जप-तप करत हैं नर, आशा ही जगत की, विचित्र परिभाषा है।
आशा वंत जेते नर, जग के तमाशा बने, तजी जिन आशा, तिन्हे जग ही तमाशा है।

जिसको जीवन में

जिसको जीवन में मिला सत संग है, उसको हर घड़ी आनन्द ही आनन्द है।
जिसका ईश्वर से जुड़ा सम्बन्ध है, उसको हर घड़ी आनन्द ही आनन्द है।। टेक।।
तुलसी मीरा कबीरा ने गाया, सूरदास ने दर्शन पाया।
जिसके हृदय में राम नाम वन्द है, उसको हर घड़ी आनन्द ही आनन्द है।
जिसका जीवन सच्चाई में ढल गया, उस के पापों का पर्वत भी गल गया।
रोम-रोम में बसे गोविन्द हैं, उसको हर घड़ी आनन्द ही आनन्द है।
संत ऋषियों की वाणी को मानों, तत्व क्या है जगत का ये जानों।
उसका चौरासी कट गया फंद है, उसको हर घड़ी आनन्द ही आनन्द है।
स्वर्ग जाने की इच्छा नहीं है, मुक्ति पाने क़ी इच्छा नहीं है।
साधू संतों को परमानन्द है, उसको हर घड़ी आनन्द ही आनन्द है।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मन की तरंग मार लो

मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन।
आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन।।मन की तरग...
आये हो तुम कहाँ से, अब जा रहे किधर।
इतना विचार लो तुम, बस हो गया भजन।।मन की तरंग...
कोई तुम्हें बुरा कहे, सुनकर क्षमा करो।
वाणी के स्वर सम्हाल लो, बस हो गया भजन।। मन की तरंग...
नेकी सभी के साथ में, बन जाय सो करो।
मत सिर बदी का भार लो, बस हो गया भजन।। मन की तरंग...
सिद्धांत साफ-साफ ये, नानक कबीर का।
निज हंस रूप देख लो, बस हो गया भजन।। मन की तरंग...

सुनेरी मैंने निरबल के बलराम

सुनेरी मैने निरबल के बल राम।।
पिछली साख भरुं सन्तन की, आय संवारे काम।।१।।
जब लग गज बल अपनो बरत्यो, नेक सर्‌यो नहिं काम।
निरबल है बलराम पुकार्‌यों, आये आधे नाम।।२।।
द्रुपद सुता निरबल भई जा छिंन, तजि आये निज धाम।
दुस्सासन की भुजा थकित भई, वसन रूप भये श्याम।।३।।
अपबल-तपबल और बाहुबल, चौथो है बल दाम।
सूर किशोर कृपा ते सब बल, हारे कों हरि नाम।।४।।

दोहा :- भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामा नन्द।
परगट किया कबीर ने, सप्त दीप नवखण्ड।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

बजा रामानुजी डंका

बजा रामानुजी डंका, सभी पाखण्ड भागे हैं।
सनातन धर्म के नेता, सभी सोते से जागे हैं।।
पुकारा जोर शोरों से, रमापति के शरण आवो।
तजो सब आस दुनियाँ की, न कोई संग लागे हैं।।
तजो दूरी से विमुखों को, जो हरि का नाम न लेते।
न बैठों पास भूलों में, जो विषयन रंग रागे हैं।।२।।
करो श्री मूर्ति का पूजन, पढ़ो वेदों पुराणों को।
हैं पूरे पाप के भागी, जो इन बातों को त्यागे हैं।।३।।
कोई कहते हमी ब्रह्म हैं, कोई कहते नहीं ब्रह्म हैं।
असत वादी कुमत वादी, सभी नर यह अभागे हैं।।४।।
सफल जीवन उन्हीं का है, जो हरि का नाम लेते हैं।
दिवस निशि भक्ति करते हैं, बंधे प्रेमों के धागे हैं।।५।।
विशिष्टाद्वैत का दिनकर, उदय है जिसके हिय नभ में।
तो मायाजाल अंधियारा, कभी आवे न आगे है।।६।।
करो यतिराज का सुमिरण, सुनो स्वामी जो कहते हैं।
हरिजन दास की आशा, हमेशा ये ही मांगे है।।७।।

इन्सान तुझे इस दुनियाँ से

इन्सान तुझे इस दुनियाँ से, इक रोज चले ही जाना है।। टेक।।
जो आज किया न हरि का भजन, फिर अन्त समय पछताना है।
इस झूठे जग की माया में, मानवता खोता क्यों बन्दे।
यह चार दिनों का चाँदनी, और फिर अन्धेरा होना है।।१।।
ये धन दौलत माया पत्नी, सब संग न तेरे जायेंगे।
जायेगा अकेला यहाँ से तू, सब यहीं धरे रह जायेंगे।
यह चार दिनों की चाँदनी, और फिर अन्धेरा होना है।।२।।
जब पड़ा गर्भ में उल्टा था, तब वादा करके आया था।
तुझे याद करूँगा जीवन भर, यह प्रभु से कहकर आया था।
अब भूल गया यहाँ आकर के, ईश्वर को नहीं पहचाना है।।३।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जिस दिल में प्रभु की याद नहीं

जिस दिल में प्रभु की याद नहीं, समशान उसे हम कहते हैं।
भूला है जो अपने मालिक को, नादान उसे हम कहते हैं।। टेक।।
चतुराई करे जो इन्सानों से, इन्सान नहीं हैवान है वह।
जो काम आये इन्सानों के, इन्सान उसे हम कहते हैं।।१।।
हर कला में चतुर सुजान हुआ, गुण सीख बड़ा गुणवान हुआ।
हरिनाम का जिसके पास हो गुण, गुणवान उसे हम कहते हैं।।२।।
वैसे तो करोड़ों अरबों ही, धनवान बहुत हैं दुनियाँ में।
जो भक्ति में सदा लवलीन रहे, कहते है सेवक भक्त उसे।
जो रक्षा करे नित दीनों की, भगवान उसे हम कहते हैं।।४।।

मेरा भी धाम ब्रज में

मेरा भी धाम ब्रज में तुम, बना देते तो क्या होता।
मुझे भी बाँसुरी अपनी, सुना देते तो क्या होता।
मेरे नटवर मेरे गिरधर, मेरे गोपाल मुरलीधर।
मुझे भी गोपिकाओं में, मिला लेते तो क्या होता।।१।।
अभी तुम सामने आये, अभी तुम हो गये ओझल।
प्रभू ये वीच का पर्दा, हटा लेते तो क्या होता।।२।।
सुना है तुमने वृन्दावन, में दावानल बुझाया था।
हृदय का ताप भी मेरे, बुझा देते तो क्या होता।।३।।
कन्हैया मैं तुम्हारे पास, आने को तरसती हूँ।
तुम्ही स्वयमेव निज मारग, बता देते तो क्या होता।।४।।

श्लोक

प्रथमेऽहनि चाण्डाली, द्वितीये ब्रह्मघातिनी।
तृतीये रजनी प्रोक्ता, चतुर्थेऽहनि शुध्यति।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्यामा गोरी नित्य किशोरी

जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्रीराधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण, जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण।।
श्यामा गोरी नित्य किशोरी, प्रीतम जोड़ी श्रीराधे।
रसिक रसीलो छैल छबीलो, गुण गर्बीलो श्रीकृष्ण।।१।
रासबिहारिणि रसविस्तारिणि, प्रिय उरधारिणि श्रीराधे।
नव-नवरंगी नवल त्रिभंगी श्याम सुअंगी श्रीकृष्ण।।२।।
प्राण पियारी रूप उजियारी, अति सुकुमारी श्रीराधे।
नयन मनोहर महामोद कर, सुन्दर नटबर श्रीकृष्ण।।३।।
शोभा श्रेणी मोहक नैनी, कोकिल बैनी श्रीराधे।
कीरतिबन्ता भामिनिकन्ता, श्रीभगवन्ता श्रीकृष्ण।।४।।
चन्दा बदनी कुन्दा रदनी, शोभा सदनी श्रीराधे।
परम उदारा प्रभा अपारा, अति सकुमारा श्रीकृष्ण।।५।।
हंसागमिनी राजनिरमणी, क्रीड़ाकमनी श्रीराधे।
रूप रसाला नैन विशाला, परमकृपाला श्रीकृष्ण।।६।।
कंचन वेली रतिरस रेली, अति अलबेली श्रीराधे।
सब सुखसागर सब गुणआगर, रूप उजागर श्रीकृष्ण।।७।।
रमणीरम्या तरुतरतम्या, गुण आगम्या श्रीराधे।
धाम निवासी प्रभा प्रकाशी, सहज सुहासी श्रीकृष्ण।।८।।
शक्त्याह्लादिनि अति प्रियवादिनि, उर उन्मादिनि श्रीराधे।
अंग-अंग ठोना सरस सलोना, सुभग सुठौना श्रीकृष्ण।।९।।
राधानामिनि गुण अभिरामिनि, हरिप्रियस्वामिनि श्रीराधे।
हरे हरे हरि, हरे हरे हरि, हरे हरे हरि, श्रीकृष्ण।।१०।।

कन्या के पाँच लकार युक्त सुलक्षण :-

अनुकूल, विमल, कुलज, सुशील और कोमल

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्याम सुन्दर को

श्याम सुन्दर को दिल में बसाकर तो देख, प्रभु खिचे हुए बंधे हुए चले आयेंगे।
मन के मन्दिर में उनको बिठा कर तो देख।। प्रभु खिचे हुए।। टेक।।
प्रेम दिवानी मीरा जहर पी गई, श्याम के रंग में रंग कर अमर हो गई।
मीरा वन कर, हृदय में वसा कर तो देख।। प्रभु खिचे हुए।।१।।
लाज द्रौपदी की तुम ने बचाई प्रभो, साड़ी पल में तुमने बढ़ाई प्रभो।
श्याम सुन्दर को भैया बना कर तो देख।। प्रभु खिंचे हुए...।।३।।
प्रीति कुब्जा ने जोड़ी थी घनश्याम से, टेढ़ी थी सीधी कर दी उसे श्याम ने।
कुब्जा जैसी तू प्रीति निभाकर तो देख।। प्रभु खिंचे हुए।।४।।
बेर भिलनी के हंस-हंस कर खाये प्रभो, दर्श कुटिया में तुम ने दिखाये प्रभो।
शबरी बन के तू पलकें बिछा कर तो देख।। प्रभू खिंचे हुए।।५।।
दीन दुःखियों के तू ही सहारे प्रभो, सन्त मण्डल की आँखो के तारे प्रभो।
दास वन, प्रभु को स्वामी बना कर तो देख।। प्रभु खिंचे हुए।।६।।

मैं तो बरसाने को

मैं तो बरसाने को जाऊँ मेरी वीर, नाय माने मेरौ मनुवा।
सीढ़ी-सीढ़ी शीश नवाऊँ, राधे राधे कहती जाऊँ।
तन, मन, धन सब भेंट चढ़ाकर, राधें दरशन पाऊँ मेरी वीर।।१।। नाय माने।।
चुन-चुन कलियाँ हार वनाऊँ, राधे जू के अंग सजाऊँ।
लता कुञ्ज के वीच बैठ के, राधे ध्यान लगाऊँ मेरी वीर।।२।। नाय माने।।
षटरस व्यञ्जन भोग लगाऊँ, जल झारी आचमन कराऊँ।
प्रेम से बीड़ा पान खिलाकर, नाँच के आरति गाऊँ मेरी वीर।।३।। नाय माने।।
वलि-वलि जाऊँ चरन दबाऊँ, प्रेम से चरनामृत को पाऊँ।
'भोली गोपी' दासिनि दासी, वरसाने बस जाऊँ मेरी वीर।।४।। नाय माने।।

श्लोक

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अरे मन चल वृन्दावन

अरे मन चल वृन्दावन धाम, रटेंगे राधे राधे।
तू विषयों में क्यों डोले, क्यों पाप पुण्य को तोले।
सबसे पावन है राधा नाम, रटेंगे राधे राधे ।। अरे मन चल।।
तू डगर डगर क्यों भटके, क्यों लोभ मोह में अटके।
कर ले राधा चरण विश्राम, रटेंगे राधे राधे।। अरे मन चल।।
आशा के फूल खिलेंगे, श्यामा और श्याम मिलेंगे।
दिन रैन सुबह और शाम, रटेंगे राधे राधे।। अरे मन चल।।
जहाँ बैठीं हैं कीरतकुमारी, संग में हैं रसिक बिहारी।
जहाँ चरण पलौटें श्याम, रटेंगे राधे राधे।। अरे मन चल।।

।। गोपाल सहारा तेरा है।।

गोपाल सहारा तेरा है, नन्दलाल सहारा तेरा है।।
मैं तेरा हूँ तू मेरा है, मेरा और सहारा कोई नही।। गोपाल सहारा।।
तू वंशी बजाने वाला है, तू रास रचाने वाला है।
तू माखन चुराने वाला है, तू गायें चराने वाला हैं।। गोपाल सहारा।।
अपने प्रभुको हम ढूँढ़ लियो, जैसे लाल अमोलक लाखन में।
प्रभुके अंग में जितनी नरमी, उतनी नरमी नही माखन में।।
छवि देखन को मन झांक रह्यो, मेरो चित चुरायो बातन में।
जियरा में बसों हियरा में बसो, प्यारे आय बसो दोऊ आँखन में।। गोपाल सहारा।।

श्लोक

असन्तुष्टाः द्विजो नष्टा सन्तुष्टश्च महीपतिः।
सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जा च कुलाङ्गना।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।।भली बनी छवि आपकी।।

भली बनी छवि आपकी, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवे, धनुष बाण ल्यो हाथ।।
धनुष बाण धारो सदा, अपने भक्तन काज।
जब भक्तन पर भीर पड़ी, तब सावधान महराज।।
कहाँ मुरली कहाँ चन्द्रिका, कहाँ गोपियन को साथ।
अपने जन के कारणे, श्री कृष्ण भये रघुनाथ।।
मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली गलमाल।
या छवि मेरे मन बसी, सदा बिहारीलाल।।

मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकले

मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकले। हर घड़ी हर घड़ी गुरुदेव निकले।।
मैं मन्दिर में ज्योति जगाऊँगी। प्रभु तेरे सदा गुण गाऊँगी।
मेरे रोम-रोम बीच राधेश्याम निकले।। मेरी रसना से...
मेरे अवगुण चित से भुला देना। पापी का पाप मिटा देना।
तेरी याद सुबह और शाम निकले।। मेरी रसना से...
आँखों में हरदम तुमको निहारूं। प्रेम गंगा में गोते सब दिन लगाऊँ।
तेरे चरणों जीवन तमाम निकले...।। मेरी रसना से...

रंग भरी बरसा करके

रंग भरी बरसा करके, बरषों की वियोंग व्यथा हरले।
मन मेरा मयूर-सा नाच उठे, कुछ भावना भाव नया भर दे।।
जलती इस छाती की ज्वाला मिटे, अपना पदकंज जरा धर दे।
हँसदे-हँसदे दृग फेर अरे, नटनागर नेक दया कर दे।।१।।

यह मूरति मंजु तुम्हारी प्रभो, मन मंदिर में अब लेखा करेंगे।
तुमसे रत रत्न को पाकर के, अब क्यों फिर कांच परेखा करेंगे।।
निज मन की लेखनी लेकर के, उर में छवि चित्त को लेखा करेंगे।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तुम देखों न देखो भले हमको, हम तो तुमको नित देखा करेंगे।।२।।

किस भाँति छुएँ अपने कर सों, पद् पंकज है सुकुमार तेरा।
हरे कृष्ण बसा इन नयनन में, अति सुन्दर रूप उदार तेरा।।
नहीं और किसी की जरूरत है, हमको बस चहिये प्यार तेरा।
तन पै, मन पै, सब पै, इस जीवन पर अधिकार तेरा।।३।।
इस प्यासे पपीहे से लोचन को, निज दर्शन स्वाति पिला दे जरा।
यह माया मरीचिका दूर हटा, दृढ़ प्रेम का पाठ पढ़ाजा जरा।।
नव नीरद वेश लिये मुरली, इन नयनों के बीच समा जा जरा।
अरे निष्ठुर मोहन आजा जरा, वह रूप अनूठा दिखा जा रजा।।४।।
असुँवन की सरिता बही है, नयनन बीच नदी उमड़ी है।
प्रेम जहाज महा झनकारत, नेह की डोरी सों लगन लगी है।।
प्रियतम प्यारे बिचार करो, बिन केवट नाव कहाँ निवही है।
प्यारे मल्लाह मिलो तो मिलो, नही डुबो दो नाव सल्लाह यही है।।५।।
ब्रज मण्डल का ही सितार नहीं, जगतीतल का उजियारा है तूँ।
मन मोहकता इतनी तुझमें, सबके मन को अति प्यारा है तूँ।
यह जीवन क्यों न न्योछावर हो, जब जीवन का ही सहारा है तूँ।।
किस भाँति बिसारूँ बता तुझको, मनमोहन प्राण पियारा है तूँ।।६।।
पहने यह कुण्डल यों ही रहो, अलकावली यों ही संवारे रहो।
अधरामृत पान कराते हुए, मुरली कर कंज में धारे रहो।।
नहीं और विषेश करो कुछ तो, उजियारे दृगों से निहारे रहो।
कहीं जाओ न मोहन छोड़ हमें, बने जीवन-प्राण हमारे रहो।।७।।
हरे कृष्ण सदा कहते-कहते, मन चाहे जहाँ वहाँ घुमा करूँ।
मन मोहन रूप का पीकर के, उसमें उनमत्त हो झूमा करूँ।।
अति सुन्दर वेश ब्रजेश तेरा, रमा रोम ही रोम में रूमा करूँ।
मन मंदिर में बिठला के तुझे, पग तेरे निरन्तर चूमा करूँ।।८।।

श्लोक

अमन्त्र मक्षरं नास्ति नास्ति मूल मनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।
अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्याय विस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येता चर्तुदशा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। जपो राम-नाम सुखदाई ।।

जपो राम - नाम सुखदाई, भजन करो भाई, यह मेला दो दिन का ।। टेर।।
यह तन है जंगल की लकड़ी, आग लगे जलजाई ।।१।।
यह तन है कागज की पुड़िया, हवा लगे उड़जाई ।।२।।
यह तन है फूलों का बगीचा, धूप पड़े मुरझाई ।।३।।
यह तन है माटी का ढेला, बूँद पड़े गलजाई ।।४।।
यह तन है भूतों की हवेली, मार पड़े भगजाई ।।५।।
यह तन है सपने की माया, आँख खुले कुछ नाहीं ।।६।।

।। सीताराम कहो, राधेश्याम कहो ।।

सीताराम कहो, राधेश्याम कहो मन मेरे, कट जायेंगे संकट तेरे। टेर।।
प्रभु कैसे मैं तुमको रिझाऊँ तेरे चरणों में मैं क्या चढ़ाऊँ,
मेरा छोटा सा मन, ले लो प्यारे मोहन, ना भुलाना, पेश करता है तेरा दीवाना।।१।।
आशा दुनियाँ की सब मैने छोड़ी, तेरे चरणों में प्रीति मैं जोड़ी।
अव मैं जाऊँ किधर, छोड़ तेरा ये दर, ना ठिकाना, पेश करता है तेरा दिवाना।। २।।
तुमने बिगड़ी सभी की बनायी आशा दर्शन की मैने लगायी।
श्यामसुन्दर हरि, सुन लो विनती मेरी, ना भुलाना, पेश करता है तरो दिवाना।।

मुझे कौन पूछता था

मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले। मैं तुझको ढूँढता था, इस जिन्दगी से पहले।।
मेरी जिन्दगी थी ऐसी, जैसे खाली सोप होती। मेरी पड़ गई है कीमत तूने भर दिये हैं मोती।।
मैं दर-दर भटक रहा था तेरी बन्दगी से पहले। मैं तो कुछ भी नहीं था मेरी कुछ नहीं थी हस्ती।।
मैं तो यूँ ही भटक रहा था, तूफान में हो किश्ती। मैं बुझा हुआ दिया था तेरी बन्दगी से पहले।।
तू तो सद्गुरु बड़ा है, तेरी रहमतें बड़ी हैं। तुझे क्या-क्या मैं बताऊँ, जो इस दास पर पड़ी है।।
न यह गीत न गला था तेरी बन्दगी से पहले। मुझे कौन पूछता था, तेरी बन्दगी से पहले।।

कर्म-फल

अगर दिल किसीं का दुखाया न होता, जमाने ने तुझको सताया न होता।
न होते तेरी आंख में आज आंसू, किसी हंसते दिल को रुलाया न होता।
न मिलते कदम दर कदम तुझको कांटे, जो कांटा किसी को चुभाया न होता।
न घर में अन्धेरा तेरे आज होता। जो दीपक किसी का बुझाया न होता।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अपने दुःख में

अपने दुःख में रोने वाले, मुस्कराना सीख ले। दूसरो के दर्द में, आंसू बहाना सीख ले।।
जो खिलानेमें मजा है, वह अपने खानेमें नहीं। जिन्दगीमें तू किसी के, काम आना सीख ले।।
कर्म तेरा हो भलाई, मुख में तेरे राम हो। बस इसी जीवन में तू, जीवन बनाना सीख ले।।
कर गरीबों का भला, बदनसीबों पर रहम। सेवा में भगवान है तू, दर्शन पाना सीख ले।।
दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले। अपने दुख में रोने वाले, मुस्कराना सीख ले।।

मधुवन की लताओं में

मधुवन की लताओं में, घनश्याम तुझे देखूँ। घनघोर घटाओं में, घनश्याम तुझे देखूँ।।
यमुना का किनारा हो, चंचल सी धारा हो। होठो, पै धरी मुरली, घनश्याम तुझे देखूँ।।
जब मुरली बजाते हो, मन्द-मन्द मुस्काते हो। सखियों को बुलाते हो, मेरे मन को लुभाते हो।।
सन्ध्या या सवेरा हो; दिन हो या अन्धेरा हो। सो जाऊँ तो सपनों में, घनश्याम तुझे देखूँ।।
तिरछेही खड़े हो नटवर, तिरछाही मुकट सिरपर। प्रभु रास रचाते हुए, प्रभु मुरली बजाते हुए।।
भव सिन्धु में जब भगवन, नैया मेरी डगमग हो। पतवार लिए कर में, घनश्याम तुझे देखूँ।।

जेहड़ा मन दिया बागां

जेहड़ा मन दिया बागां मोड़े, ऐसा कोई सन्त मिले।
जेहड़ा मन विषयां वलों मोड़े, ऐसा कोई सन्त मिले।।
संत दर्शन दा बड़ा है महातम, दुर्लभ जग में संत समागम।
जेहड़ा तार हरि दे नाल जोड़े, ऐसा कोई संत मिले। जेहड़ा मन।
संत मिले जे कोई अविनाशी, जन्म मरण दी कट जाये फांसी।
जेहड़ा मुख विषयां वलों मोड़े, ऐसा कोई संत मिले। जेहड़ा मन।

सुनो श्याम सुन्दर

सुनो श्याम सुन्दर विनती हमारी, तेरे दर पे आया है तेरा भिखारी।
बीच भँवर में फँस गयी नैया, तू ही बता अब कौन खिवैया।
कृष्ण कन्हैया हे गिरधारी, हे नट नागर कुँज बिहारी।
हे नाथ आकर के अब तो बचाओ, डूबती नैया मेरी पार लगाओ।
कृष्ण कन्हैया तेरी शरण में, तुम्हें लाज रखनी पड़गी हमारी।
तेरे बिन मेरा कौन जहाँ में, तुम्हीं बताओ अब जाऊँ कहाँ मैं।
मेरी लाज जाये तो जाये भले ही, मगर नाथ हँसी होगी तुम्हारी।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रीत न लगाई

प्रीत न लगाई बन्दे कृष्ण मुरार से, जनम गवाया तूने दुनियाँ के प्यार से।
सुन्दर काया तेरी जिसने बनायी है, उस ईश्वर की याद भुलायी है।।
प्रीत लगाले बन्दे कृष्ण मुरार से।। जनम।।
आया भी अकेला जग में जाये भी अकेला, दो दिन की दुनियाँ सारी दो दिन का मेला।
काहे तूने प्यार किया झूटे संसार से।। जनम।।
हीरा सा जनम पाके सफल बनाये जा, रात दिन मुख से तू राधे राधे गाये जा।
श्यामा करेंगी पार नैया मझधार से।। जनम।।
तेरी मेरी कहते-कहते जीवन बिताया है, जिसने जनम दिया उसको भुलाया है।
साथ न जायँ तेरे कोई नातेदार रे।। जनम।।

भजन श्याम सुन्दर

भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे। तो संसार सागर से तरते रहोगे।। टेक।।
कृपा नाथ बेशक मिलेंगे किसी दिन। जो सत्संग पथ से गुजरते रहोगे।।
बसोगे सभी के हृदय में सदा तुम। जो अभिमान गिरि से उतरते रहोगे।।
न होगा कभी क्लेश मन को तुम्हारे। जो अपनी बड़ाई से डरते रहोगे।।
छलक ही पड़ेगा कृपा सिन्धु का दिल। जो दृग बिंदु से रोज भरते रहोगे।।

राधा बन गई जिलाधीश

राधा बन गई जिलाधीश और ललिता पुलिस कप्तान। पकड़े गये कृष्ण भगवान। टेक।।
एक सखी के घर में जाकर माखन खाने लगे चुराकर।
पीछे से वो सखिया आई, पकड़ लिये नन्दलाल।। पकड़े ।।
नन्द बाबा के द्वारे जाकर, पेश किया मुजरिम को लाकर।
एक बात न पूछी ललिता ने, तुरत किया चालान।। पकड़े ।।
करी वकालत जब मनसुखा ने, झूठा केश लगाया इसने।
छींका ऊँचा बहियाँ छोटी, यह बालक नादान।। पकड़े ।।
अजब लीला है श्याम तुम्हारी, मैं तुम पर जाउँ बलहारी।
गति मति तेरी कोई न जानें, धरूँ चरणन में ध्यान।। पकड़े ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कुछ न बिगड़ेगा तेरा

कुछ न बिगड़ेगा तेरा, हरि की शरण आने के बाद।
हर खुशी मिल आयेगी, चरणों में झुक जाने के बाद।।
प्रेम की मंजिल के राही, कष्ट पाते हैं जरूर।
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।।
पूँछ उन फूलों से जाकर, खाई है कितनी बहार।
रात भर काटों में सोया, डाल पर आने के बाद।।
देखकर काली घटा को, उड़ भँवर मत हो निरास।
बन्द कलियाँ भी खिलेंगी, रात ढल जाने के बाद।।
प्रेम कर निर्मल सदा, तू उस मेरे घनश्याम से।
सूखी बगिया भी खिलेगी, ऋतु बदल जाने के बाद।।
जब तलक है भेद मन में, कुछ नहीं कर पायेगा।
रंग लायेगा ये साधन, भेद खुल जाने के बाद।।

सन्तन के संग लाग रे

सन्तन के संग लाग रेऽऽऽ तेरी अच्छी बनेगी।। टेक।।
तेरी अच्छी बनेगी तेरी बिगड़ी बनेगी, तेरी प्रभु से बनेगी तेरी सबसे बनेगी।।
सन्तन के संग पूर्ण कमाई। होय तेरो बड़ भाग रे।। तेरी०।।१।।
मोह निशा में बहु तक सोयो। जाग सके तो जाग रे।। तेरी०।।२।।
सुत बित नारि ईषणा तीनी। त्याग सके तो त्याग रे।। तेरी०।।३।।
सदगुरू कहें परमपद पइहौ। राम भजन में लाग रे।। तेरी०।।४।।

जीवन को अपना

जीवन को अपना सफल बनाये जा। श्रीराम जय राम जय जय राम गाये जा।।
सगे वो सम्बन्धी तेरे काम नहीं आयेंगे। एक दिन तुझे वो अकेला छोड़ जायेंगे।
नारद जी के वीणा का सुन्दर ये जाप है। जपने से मिट जाता जनम का पाप है।
तू भी मन धीरे-धीरे हरि से लगाये जा। श्रीराम जय राम जय जय राम गाये जा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कोई कहियो रे प्रभु आवन की

कोई कहियो रे! प्रभु आवन की। आवन की मन भावन की।। टेक।।
आप न आवे लिखियों न भेजे, बान पड़ी लालचावन की ।। कोई।।
कहा करूँ कछु वश नहीं मेरो, पाँख नही उड़ जावन की।। कोई।।
ये दो नैन कहो नहि माने, नदियाँ बहे जैसे सावन की। कोई
मीरा के प्रभु गिरिधरनागर, चेरी भई हूँ तेरे दामन की।। कोई।।

लेते जाओ रे

लेते जाओ रे हरि का नाम थोड़ा-थोड़ा। भागा जाये समय का घोड़ा रे।। टेक।।
आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर। कोई चढ़े विमानन जा रहा, कोई बाँधे जाय जंजीर।।१।।
तुलसी या संसार में सबसे मिलिये धाय। ना जाने किस वेष में, नारायण मिल जाय।।२।
तुलसी इस संसार में, पाँच रतन है सार। सन्त समागम हरि कथा, दया दीन उपकार।।३।।
धन दौलत से एक दिन, खाली होगा हाथ। अन्त समय में जायेगा, एक हरि का नाम।।४।।
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी मे कुछ आध। तुलसी संगत साधु की, हरै कोटि अपराध।।५।।
तीरथ व्रत और दान कर, मन में हो अभिमान। तुलसी निष्फल जात, है ज्यों कुंजर स्नान।।६।।
वारि मथे घृत होय बरु, सिकता से बरु तेल। बिन हरि भजन न भव तरिअ, यह सिद्धान्त अपेल।।७।।

लगन गुरु से

लगन गुरु से लगा बैठी, जो होगा देखा जायेगा।टेक।।
कभी ये ख्याल था दुनिया, हमें बदनाम कर देगी।
वही परदा हटा बैठी, जो होगा देखा जायेगा।।
कभी दुनियाँ से डरती थी, कि छुप-छुप याद करती थी।
शर्म सब बेच रक्खा है, जो होगा देखा जायेगा।।
दिवाने बन गये तेरे, मुझे दुनिया से क्या मतलब।
तुम्हें अपना बना बैठी, जो होगा देखा जायेगा।।
सलोनी मद भरी आँखें, गले घुँघराले बालों की।
निगाहों में बसा बैठी, जो होगा देखा जायेगा।।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जग असार में सार

जग असार में सार रसना हरि-हरि बोल।। टेक।।
यह तन है जर्जर नैया, केवल है हरि नाम खेवैया।
हरि से नाता जोड़, रसना हरि-हरि बोल।।
यह तन तुझको करज मिला है, चुकता तूने कुछ न किया है।
जग से नाता तोड़, रसना हरि हरि बोल।।
न पूरा तो थोड़ा कर ले, राम नाम हृदय में भर ले।
हरि सुमिरन कर शोर, रसना हरि-हरि बोल।।
लख चौरासी भरम गँवायों, बड़े भाग मानुष तन पायो।
जाग हो गया भोर रसना हरि-हरि बोल।।

प्रभु की यही पार्लियामेन्ट

प्रभु की यही पार्लियामेन्ट, हर दिल में हर दिल को आकर देता है जजमेन्ट।। टेक।।
जैसा कर्म कुकर्म करोगे, भला-भुरा फल तुम्ही भरोगे।
यह जग जेल जीव को जज का, आर्डर है अर्जेन्ट।।१।।
काल कोठरी लख चौरासी, जनम मरण दुख की ये फाँसी।
अन्डज-पिन्डज स्वदेश उद्रिज, लेडी हो या जेन्ट्स।।२।।
जो जन कड़ी दफाओं वाला, उसको उसी कैद में डाला।
विधि हर जेलर सब कुछ करते, नुक्सा ये पेमेन्ट।।३।।
बड़ी अदालत मानुष देही, कर्म फैसले हो उसमें ही।
अभी पैरवी कर न सके तो, लगे नरक में टेन्ट।।४।।
फिर भी किचिंत होश नहीं है, कर्मो का अफसोस नहीं है।
वर्कशाप पापों की खोल, वन गये जनरल मर्चेन्ट।।५।।
हाजिर होना पड़ेगा जरूरी, काम न देगी कोई मजबूरी।
अवश्य छोड़ना पड़ेगा एक दिन यह तन रेस्टोरेन्ट।।६।।
पहरेदार पुकार रहे हैं, जग जाओ ललकार रहे हैं।
बता रहे जीवन हितकारी, नुक्सा यह पेमेन्ट।।७।।
चौराहे पर सन्त सिपाही, लाल हरी बत्ती दिखलाई।
देख न पाते जो खतरे को, होता एक्सीडेन्ट।।८।।
सतगुरु एडवोकेट बैरिस्टर, वेदशास्त्र के प्वाइन्ट बताकर।
बरी करा देते फाँसी से, सही सेन्ट परसेन्ट।।९।।
जो जन सद्गुरु शरण में जाते, जीवन मिशिल उन्हे दिखलाते।
वो भव बन्धन तोड़ परमपद, होते परमानेन्ट।।१०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जीवन को अपना

जीवन को अपना सफल बनाये जा। श्रीराम जय राम जय जय राम गाये जा।।
सगे वो सम्बन्धी तेरे काम नहीं आयेंगे। एक दिन तुझे तो अकेला छोड़ जायेंगे।
तू भी मन धीरे-धीरे उनसे हटाये जा। श्रीराम जय राम जय जय राम गाये जा।।
नारद जी के वीण का सुन्दर ये जाप है। जपने से मिट जाता जनमों का पाप है।
तू भी मन धीरे-धीरे हरि से लगाये जा। श्रीराम जय राम जय जय राम गाये जा।।

एक तेरी दया का

एक तेरी दया का दान मिले, एक तेरा सहारा मिल जाये।
भवसागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाये।। टेक।।
जीवन की अंधेरी राहों में, चलकर ना तुझको जान सका।
आशाओं की झोली भर जाये, एक तेरा दुवारा मिल जाये।। एक तेरी...
मैं दीन हूँ दीनदयाल है तू, अल्पज्ञ हूँ मैं, सर्वज्ञ है तूँ।
अज्ञान का पर्दा हट जाये, एक तेरा उजियारा मिल जाये।। एक तेरी...
इस दुर्लभ अवसर को पाकर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका।
अब दिल की तड़फ यह कहती है, कहीं प्रियतम प्यारा मिल जाये।। एक तेरी...
अपने मुझको अपना न सके, औरों का उलाहना क्यों कर दूँ।
तू ही वरदान का दाता है, वरदान तुम्हारा मिल जाये।। एक तेरी...
मैं नर हूँ तू नारायण है, इतना तो भेद जरूरी है।
यदि शरण तेरी मैं पा न सका, नर तन तो दुबारा मिल जाये।। एक तेरी...

एक झोली में फूल

एक झोली में फूल भरे हैं, एक झोली में कांटे रे कोई कारण होगा।
तेरे वश में कुछ नहीं प्यारे, बाँटने वाला बाँटे रे कोई कारण होगा।। टेक।।
पहले बनती हैं तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर।
ये तो प्रभु की कारीगरी है, तू क्यों है गंभीर, रे कोई कारण होगा।। एक।।
धन का बिस्तर मिल जाये, पर नींद को तरसे नैन।
काँटों पर भी सोकर आये, किसी के मन को चैन, रे कोई कारण होगा।। एक।।
सागर से भी बुझ सकती नहीं, किसी के मन की प्यास।
एक बूँद से ही बुझ जाती, किसी के मन आश, रे कोई कारण होगा।। एक।।
नाग भी डस ले तो मिल जाये, किसी को जीवन दान।
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नामो-निशान, रे केई कारण होगा।। एक।।
तेरे वश में कुछ भी नहीं है, ये तो वांटने वाला जाने।
किसी को मीठे बोल हैं मिलते, किसी को मिलते ताने, रे कोई कारण होगा।। एक।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जो दिल से मेरा नाम

जो दिल से मेरा नाम गाता रहेगा, मुझे भी तो नित्य याद आता रहेगा।
न सच्चे हैं सुख और दुःख इन्द्रियों के, अगर इसमें धोखा तू खाता रहेगा।।
पिता माता भाई बहन पे ममता, तू कब तक यूँ ही डगमगाता रहेगा।
यहाँ के ये नाते यहीं पे रहेंगे, वहाँ पर किसी से न नाता रहेगा।।
नित्य कर्म तेरे उनको तू कर ले, करेगा न तू धर्म जाता रहेगा।
चलेगा जगत में जो इस भाँति अर्जुन, तो जीवन तेरा जगमगाता रहेगा।।

कर दो दूर प्रभो

कर दो दूर प्रभो, मेरे मन में अंधेरा है।
जबसे तेरी लगन लगी, हुआ मन में सवेरा है।। टेक।।
कई युग बीत गये, प्रभु आपसे बिछुड़े हुए।
आन मिलो मेरे प्रभु जी, प्यार मन में बहुतेरा है।। कर दो।।
जिनके मन में आप बसे, उनके मन की कलियाँ खिलीं।
चमक उठी ज्योति उनकी, हुआ मन में सवेरा है।। कर दो।।
परदा हटा दो प्रभु, मेरे मन पे जो छाया है।
कोई नहीं मेरा है, आसरा एक तेरा है।। कर दो।।
इतना बता दो प्रभु, मेरी मंजिल है कहाँ।
भेज दो मुझको वहाँ, जहाँ सन्तो का डेरा है।। कर दो।।
जन्मों से आश लगी, अब आन मिलो मेरे प्रभु जी।
बड़ी किस्मत है मेरी, पाया दर्शन तेरा है।। कर दो।।

श्लोक

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कभी-कभी भगवान

कभी-कभी भगवान को भी, भक्तों से काम पड़े।
जाना था गंगा पार, प्रभु केवट की नाव चढ़े।। टेक।।
अवध छोड़ प्रभु वन को धाये, सियाराम लखन गंगा तट आये।
केवट मन ही मन हरषाये, घर बैठे प्रभु दर्शन पाये।।
हाथ जोड़कर प्रभु के आगे, केवट मगन खड़े। जाना था।।
प्रभु बोले तुम नाव चलाओ, गंगा पार हमें पहुँचाओ।
केवट बोला सुनो प्रभु तुम्हारी, चरण धूलि की महिमा भारी।।
मैं गरीब हूँ नाव मेरी नारी न होय पड़े।। जाना था।।
केवट दौड़ के जल भर लाया, चरण धोके चरणामृत पाया।
वेद ग्रंथ जिनके यश गावे, केवट उनको नाव चढ़ावे।।
बरसे फूल गगन से ऐसे,भक्तों के भाग्य बड़े।। जाना था।।
नाव चली गंगा की धारा, सियाराम लखन को पार उतारा।
देने लगे प्रभु नाव उतराई, केवट बोला नहीं रघुराई।।
मैंने पार किया है तुमको, पभु मोहि पार करे।। जाना था।।

कभी राम बनके

कभी राम बनके, कभी श्याम बनके, चले आना प्रभु जी चले आना।
कभी राम रूप में आना-२
सीता साथ लेके, धनुष हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना। कभी राम।।
कभी कृष्ण रूप में आना-२
राधा साथ लेके बंशी हाथ लेके चले आना प्रभु जी चले आना।। कभी राम।।
कभी ब्रह्मा रूप में आना-२
वाणी साथ लेके, वेद हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना।। कभी राम।।
कभी विष्णु रूप में आना-२
लक्ष्मीं साथ लेके, सुदर्शन हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना।। कभी राम।।
कभी शिव के रूप में आना-२
गौरी साथ लेके, डमरू हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना।। कभी राम।।
कभी सन्त रूप में आना-२
संगत साथ लेके, माला हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना।। कभी राम।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust

दरबार हजारों

दरबार हजारों देखे मगर, तेरे दर-सा कोई दरबार नहीं।
जिस गुल में हो तेरा नूर नहीं, ऐसा तो कोई गुलजार नहीं।। टेक।।
वो आखें भला क्या आँखे हैं, जिन आँखों में तेरा नूर न हो।
वो दिल भी तो पत्थर होते हैं, जिस दिल में तुम्हारा प्यार नहीं।। दरबार।।
दुनिंया से भला मैं क्या माँगू, दुनियां तो आप भिखारी है।
मैं मांगू सद्गुरु प्यारे से, जहाँ होता कभी इन्कार नहीं।। दरबार।।
आ जाओ प्रभु अब आ जाओ, चन्द श्वासें मेरी बाँकी है।
जहाँ प्रेम से तुमको बुलाते हैं, वहाँ होता कभी इन्कार नहीं।। दरबार।।

नन्हा सा फूल हूँ मैं

नन्हा-सा फूल हूँ मैं, चरणों की धूल हूँ मैं।
आया हूँ मैं तो तेरे द्वार, प्रभु जी मेरी पूजा करो स्वीकार।। टेक।।
मैं तो निर्गुणिया हूँ, बस इतनी बात है। मेरे जीवन की डोरी, अब तेरे हाथ है।
थोड़ा-सा गुण मिल जाये, निर्धन को धन मिल जाये।
मानू तुम्हारा उपकार, प्रभुजी मेरी पूजा करो स्वीकार।। नन्हा।।
सुन लो ये मेरी अर्जी, मुझको कुछ ज्ञान दो। जीवन को जीना सीखूँ, ऐसा वरदान दो।
सूरज सी शान पाऊँ, चन्दा-सा मान पाऊँ। इतना सा दे दो उपहार।
प्रभु जी मेरी पूजा करो स्वीकार।। नन्हा।।

प्रभु मेरे जीवन को

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो, कोई खोट इसमें रहने न पाये।। टेक।।
करो मेरे जीवन में ऐसा उजाला, हर श्वांस हो तेरे चिन्तन की माला।
मेरे दिल की दुनियाँ को इतना वदल दो, कि दुनियां तेरी मुझे गले से लगाये।।
घटाओं की रिमझिम, पवन के तराने, लताओं का नाच और वृक्षों के गाने।
नजर जिस तरफ जाये भगवान मेरी, अमर ज्योति तेरी उधर मुस्कराये।।
जगत को मैं अपना परिवार समझूँ, परिवार को मैं तेरा उपकार समझूँ।
कुसंग लोभ अभिमान द्वेष और आलस्य, कोई इनमें मुझको सताने न पाये।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रभु मेरे जीवन का

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो, भँवर में है नैया इसे पार कर दो।।
मेरी इन्द्रियाँ हो सदा मेरे वश में, मेरे मन पे मेरा ही अधिकर कर दो।
न शुभ कर्म करनें में पीछे रहूँ मैं, कुकर्मो से मुझको खबरदार कर दो।।
मैं गाऊँ सदा ही वेदों की ऋचाएँ, तु तन-मन में वेदों का संचार कर दो।
मेरा सर झुके ये तेरे दर पे आकर, मुझे ऐसा दुनियाँ में सरकार कर दो।।
मै समझूँ न जग में किसी को बेगाना, मेरा विश्व भर के लिये प्यार कर दो।
'पथिक' राह में हो कोई दीन-दुखिया, मदद के लिये मुझको तैयार कर दो।।

मुझे गर्व न और

मुझे गर्व न और सहारों का, एक तेरा सहारा काफी है।
मंझधार में डूबने वालों को, एक तेरा किनारा काफी है।। टेक।।
बन-बन के सहारे टूटते हैं , ये रस्म पुरानी है जग की।
यहाँ रिश्वत और सिफारिश से, कोई काम नहीं बन सकता है।
बिगड़ी संवर जाने के लिये, एक तेरा सहारा काफी है।। मुझे।।
नजरों को धोखा देते हैं, ये झूठे नजारे दुनियाँ के।
मेरी प्यासी नजरों के खातिर, बस तेरा नजारा काफी है।। मुझे।।
पपीहे को है मतलब ही क्या, नदियों और तालाबों से।
बादल से बरसे स्वाति की, बस एक ही धारा काफी है ।। मुझे।।

मुझे प्रेम का पंथ

मुझे प्रेम का पंथ बता दे, ऐसा कोई सन्त मिले।। टेक।।
भटक रहा हूँ कब से जग में, पड़कर माया के बन्धन में।
मेरा आवागमन मिटा दे, ऐसा कोई सन्त मिले।। मुझे।।
इस झूठे जग में भरमाया, सत्य मानकर प्रेम लगाया।
इस भ्रम को जो कि मिटा दे, ऐसा कोई सन्त मिले।। मुझे।।
सन्त दरश का बड़ा है महातम, बड़े भाग्य से मिले समागम।
मुझे प्रभु की शरण लगा दे, ऐसा कोई सन्त मिले।। मुझे।।
यह जीवन दिन चार रहेगा, ऐसा अवसर फिर न मिलेगा।
मानव-तन सफल बना दे, ऐसा कोइ सन्त मिले। मुझे।।
सन्त कृपा बिन हरि नहीं मिलते, पाप सभी दर्शन से धुलते।
मेरा रोम-रोम पुलका दे, ऐसा कोई सन्त मिले।। मुझे।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मुझे अपना जीवन

मुझे अपना जीवन बनाना न आया। रूठे हरि को मनाना न आया।। टेक।।
भटकता रहा दुनियाँ वाले के दर पे, रहा पाप ढोता मैं सारी उमर से।
जगत के प्रभु को रिझाना न आया, रूठे हरि को मनाना न आया।।
जग है सराय यहाँ सभी को है जाना, यहाँ रहने वालो से दिल न लगाना।
हरि चरणों में मन लगाना न आया, रूठे हरि को मनाना न आया।।
समझ न सका मैं हरि की ये माया, यूँही अपने मन को हरइक में फसाया।
लगा दिल जगत से छुड़ाना न आया, रूठे हरि को मनाना न आया।।
किसी काम आयी न मेरी कमाई, हरिनाम बिन यूँ ही आयु गंवाई।
हरिनाम का धन कमाना न आया, रूठे हरि को मनाना न आया।।
कभी याद दिल में प्रभु की न आई, है जिसकी बदौलत ये सारी खुदाई।
उसी राम का गीत गाना न आया, रूठे हरि को मनाना न आया।।

गज निरखत फहरान बसन की

गज निरखत फहरान बसन की।।
ललकि लग्यों मुख कमल बिलोकन, भूलि गयो सुधि ग्राह ग्रसन की।।
मन रथ पर आवत दरसावत, भुज भूषित ज्यों सिर परसन की।।
कुण्डल कच लहरात बदन पर, दामिनी सी मृदु मन्द हँसन की।।
बनमाला लहकत उर झलकत, पीताम्बर कटि फेंट कसन की।।
यह छबि बरनि सकै कवि केहि विधि, पहुँचत नहिं बुधि सहस रसन की।।
कमल उखारि उठाय सूँड सों, भेंटि कियो जिमि भाव असन की।
प्रेम सखी गज छीनि ग्राह सों, तहँ पठयो जहँ डर ना खसन की।।

मैं तो गोवर्धन को जाऊँ

मैं तो गोवर्धन को जाऊँ मेरे वीर, नाय माने मेरो मनुवाँ।
सात सेर की करूँ रसोई, गिरिवर को भोग लगाऊँ मेरी वीर।
पेड़ पेड़ पे खाऊँ मेरी वीर, नाय मानो मेरो मनुवां।।
तोसा बाँध बगल में राखूँ, मै तो मन आवै वहाँ खाऊ मेरी वीर।। नाय०।।
सात कोस की दै परिकरमा, मानसी गंगा नहाऊँ मेरी वीर।। नाय माने।।
ना चाहिए मोय पार परोसी, मैं तो इकली दुकली जाऊँ मेरी वीर ।।नाय०।।
चकलेश्वर की पूजा करके, ननदी न्योति जिमाऊँ मेरी वीर ।। नाय०।।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, हरि चरणन बलि जाऊँ मेरी वीर।।नाय०।।
गिरि गोवर्धन देव हमारी, गोवर्धन को ध्याऊँ मेरी वीर ।।नाय०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

नख पर धारि लियो

नख पर धारि लियो गिरिराज, नाम गिरिधारी पायो है।।
सुरपति पूजा भेट आप, गिरिराज पुजायो है।
सवा लाख मन सामग्री को भोग लगायो है ।। नख०।।
खबर भई जब इन्द्र लोक में, इन्द्र रिसायो है।
सात रात दिन प्रलय को, जल बरसायो है ।। नख०।।
सब बृजवासी मिल करके, गिरिराज उठायो है।
पड़ी ना ब्रज पर बूँद देखि, सुरपति घबरायो है ।। नख०।।
सुरभी गाय कर्ण घोड़ा, ऐरावत लायो है।
चरणन में गिर गयो क्षमा, अपराध करायो है ।। नख०।।
धन्य-धन्य बृजराज इन्द्र को, मान घटायो है।
घासीराम बृजवासी ने, कहि गाय सुनायो है।। नख०।।

हरि नाम बोलो

हरि नाम बोलो सहारा मिलेगा, ये मानव जनम न दुबारा मिलेगा।।
हरी नाम लेने से बिगड़ी बनेगी, डूबे हुये को किनारा मिलेगा।। हरी०।।
हरी नाम लेने से संकट कटेंगे, कभी तो हमें प्राण प्यारा मिलेगा।। हरी०।।
हरी नाम बोलो समय जा रहा है, गुरुजन मिलेंगे किनारा मिलेगा।। हरी०।।

मैं आया शरण तेरी

मैं आया शरण तेरी, मुझे अपना बना लेना।
जो होय खाता मेरी, उसे दिल से भुला देना।। मैं०।।
संसार में माया का, क्या चक्कर बनाया है।
मोह माया के बन्धन से, प्रभु मुझको छुड़ा देना।। जो होय०।
सुनता हूँ मैं सन्तों से, सागर के खेवैया हो।
प्रभु डग-मग डोल रही, मेरी जीवन नैया हो।
बिन आसरे जा रही है, प्रभु पार लगा देना।। जो होय०।।
लाया तो मैं कुछ भी नहीं, प्रभु तेरे रिझाने को।
ना फूल हैं पूजा के, ना दीप जलाने को।
अरदास यही भगवन् चरणों में लगा देना।। जो होय०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दरबार में वंशी वाले

दरबार में वंशी वाले के, दुख दर्द मिटाये जाते हैं।
दुनिया के सताये लोग यहाँ, सीने से लगाये जाते हैं।। टेक।।
यह महफिल है दीवानों की, हर भक्त यहाँ पर मतवाला।
भर-भर के प्याले अमृत के, यहाँ त्रसबक्ो पिलाये जाते हैं।। दरबार०।।
मत घबराओ ऐ जग वालों, इस दर पर शीश झुकाने से।
ऐ नादानों इस दर पर तो, सर भेंट चढ़ाये जाते हैं।दरबार०।।
जिन भक्तों पर हे जग वालों, हो जाय कृपा उस ईश्वर की।
उन्ही को संदेशा जाता है, दरबार बलाये जाते हैं।। दरबार०।।
सर रख के तली पर आ जाओ, हरसत हो जिन्हें कुछ पाने की।
इस ईश्वर को पाने के लिये, कुछ कष्ट उठाये जाते हैं। ।दरबार०।।

दरबार हजारों देखे हैं

दरबार हजारों देखे हैं, पर ऐसा कोई दरवार नहीं।।
जिस गुलशन में वेश नूर नहीं, ऐसा कोई गुलजार नहीं ।। टेक।।
आशिकों के फरिश्ते रहते हैं, दिन-रात तुम्हारे कदमों पे।
हैं कौन बशर इस दुनिया में, जो तेरे दर का खिदमतगार नही।। दरबार०।।
दुनियाँ से हम क्या माँगे, दुनियाँ तो खुद ही भिखारी है।
माँगो उस मुरली वाले से, जहाँ होता कभी इन्कार नहीं।। दरवार०।।
वह नेत्र नहीं, है मोर पंख, जिसमें शर्मो हया ही नही।
वह दिल नहीं पत्थर होता है, जिस दिल में प्रभु का प्यार नहीं।। दरबार०।।
हसरत है तुमसे हे भगवन्, जिस वक्त मेरा यह दम निकले।
तेरा एक नजारा काफी है, बस और मुझे दरकार नहीं ।। दरबार०।।

श्लोक

प्रातः द्यूत प्रसङ्गेन मध्याह्ने स्त्री प्रसङ्गतः।
रात्रौ चौर प्रसङ्गेन कालो गच्छति धीमताम्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तेरी मेहरबानी

तेरी मेहरवानी का है बोझ इतना, उसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ ।
मैं तो आ गया हूँ, मगर जानता हूँ, तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूँ।। टेक।।
जमाने की चाहत ने मुझको मिटाया, मेरा नाम हरगिज जुवाँ पर ना आया।
गुनहगार हूँ मैं, खतावार हूँ मैं। तुम्हें मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।। तेरी०।।
तुम्हीं ने अदा की मुझे जिन्दगानी, मगर तेरी महिमा मैंने ना जानी।
तलबगार हूँ मैं तेरी कृपा का, कर्जा चुकाने के काबिल नहीं हूँ ।। तेरी०।।
यह माना कि तुम हो दाता जहाँ के, मगर कैसे फैलाऊँ झोली दर पे आके।
जो पहले दिया है वही कम नहीं है, उसी को निभाने के काबिल नहीं हूँ।। तेरी०।।
जी चाहता है दर पे सर को झुकाऊँ, तेरा दर्श जी भर के एक बार पाऊँ।
सिवा दिल के टुकड़ो के ऐ मेरे दाता, कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ ।। तेरी०।।

सबका दाता

सबका दाता है वो सबका मालिक है वो, दर बदर आने-जाने से क्या फायदा।।
वे तलब देने वाले ने सब कुछ दिया, फिर सदायें लगाने से क्या फायदा।।
एक ही आस्ताने से अजमत भी है, एक का होके रहने में इज्जत भी है।।
एक ही आस्ताने पर सर झुक गया, दर बदर सर झुकाने से क्या फायदा।।
होंठ हिलते हैं लेकिन सदा कुछ नहीं, हाथ उठते हैं लेकिन दुवा कुछ नहीं।।
दिल का जो हाल है उसको मालूम है, फिर मेरे लव हिलाने से क्या फायदा।।
मैंने माना जहाँ में तेरा राज्य हैं, तेरा हेरा फकत तेरा मुहताज है।।
तू हैं मालिक मेरा मैं हूँ बन्दा तेरा, फिर मुझे आजमाने से क्या फायदा।।

श्लोक

श्री वेकंट रमणा गोविन्दा श्री श्री निवासा गोविन्दा।
संकट हरणा गोविन्दा सब सुख करणा गोविन्दा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राम नाम के हीरे मोती

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली-गली।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली-गली।। राम०।।
माया के दीवाने सुनलो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा।
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चरचा होगी गली-गली।। ले लो०।।
क्यों करता है मेरी-मेरी, यह तो तेरा मकान नहीं।
झूठे जग मे फँसा हुआ है, वह सच्चा इन्सान नहीं।
जग का मेला दो दिन का है, अन्त में होगी चला चली।। ले लो०।।
जिन-जिन ने यह मोती लूटे, वह तो माला माल हुए।
धन-दौलत के बने पुजारी, आखिर वह कंगाल हुए।
चाँदी-सोने वालों सुन लो, बात सुनाऊँ खरी-खरी।। ले लो०।।
दुनियाँ को तू कब तक पगले, अपनी कहता जायेगा।
ईश्वर को तू भूल गया है, फिर पीछे पछतायेगा।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझेंगी कली-कली।। ले लो०।।

मुझे रास आ गया है

मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।
तुझे मिल गया भिखारी, मुझे मिल गया ठिकाना।। मुझे०।।
मुझे इसका गम नहीं है, कि बदल गया जमाना।
मेरी जिन्दगी के मालिक, कहीं तुम बदल ना जाना ।। मुझे०।।
मेरी आरजू यही है, कि निकले दम तुम्हारे आगे।
अभी स्वाँस चल रही है, तुम चले ना जाना ।। मुझे०।।
तुम देवता हो मेरे, सब कुछ है भेंट तेरी।
तुझे मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना ।। मुझे०।।
कितने ही द्वार भटके, कितने ही घर बनाये।
अब अपने दर से दिलवर, कभी हमको ना हटाना ।। मुझे०।।
सजदे भी कर रहा हूँ शिकवे भी कर रहा हूँ।
तुझे मिल गया ओ दिलवर, मुझे मिल गया ठिकाना ।। मुझे०।।
गर मुझको तू उठाये, दस्ते करम से अपने।
दुनियाँ को छोड़ दूँ मैं, मुझे मिल गया खजाना।। मुझे०।।
मैंने समझ लिया है, तुम ही हो एक मेरे।
दुनियाँ है एक धोखा, सपनों का है फँसाना।। मुझे०।।
नजरें मेहर से कर दे, कुछ ऐसा मस्त मुझको।
ऐसी पिला दे साकी, भूले सभी जमाना।। मुझे०।।
मधुकर को भी पिलाकर, मदहोश ऐसा कर दो।
जामे सबूरी लेकर, दुनियाँ से हो बेगाना।। मुझे०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जिस देश में जिस भेष में

जिस देश में, जिस भेष में, परदेश में रहो।
श्री राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो।। जिस०।।
जिस हाल में जिस चाल में, जिस काल में रहो।
श्री राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो, ।। जिस०।।
जिस रंग में, जिस ढंग में, जिस संग में रहो।
श्री राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।। जिस०।।
जिस धर्म में, जिस कर्म में, जिस मर्म में रहो।
श्री राधारमण, राधारमण, राधारमण कहो ।। जिस०।।
जिस रोग में, जिस भोग में, जिस योग में रहो।
श्री राधारमण, राधारमण, रधारमण कहो ।। जिस०।।
मान में, सम्मान में, अपमान में रहो।
श्री राधारमण राधारमण, राधारमण कहो ।। जिस०।।

तेरी सूरत जो मन मे बसी

तेरी सूरत जो मन में बसी है, क्या करेंगे हम मन्दिर शिवाले।
खाक हो जायेंगे तेरे दर पे, जान कर देंगे तेरे हवाले ।। तेरी०।।
अपनी नजरों के साये में रखना, और दिल से मुझे ना भुलाना।
दुनियाँ बेदर्द और बेवफा है, मेरे दिल को नहीं तोड़ डाले ।। तेरी०।।
देख सकते नहीं गम किसी का, है नरम दिल मेरे सतगुरु का।
एक बार जो दिल से पुकारे, वह तो बैठे हैं दामन सम्हाले।। तेरी०।।
अब तो सतगुरु तेरा आसरा है, कौन मुझको भँवर से निकाले।
पार कर दो या मुझको डुबा दो, नैया कर दी है़ तेरे हवाले। तेरी०।।

कथा का रस

कथा का रस वृन्दावन से आया।। टेक।।
भक्तन के पीवे के कारण, श्री गोपाल पढ़ाया।। कथा०।।
कोरे-कोरे कलश धरे हरि मन्दिर, झीने पटन छनाया।। कथा०।।
बाटूँ वहुत घटे नहिं तोला, दिन-दिन बढ़े सवाया।। कथा०।।
ध्रुव जी ने पिया, प्रह्लाद जी ने पिया, नारद के मन भाया।। कथा०।।
चोर ना लेवै कोई राजा ना दण्डे, बाँट सके नहिं भाया ।। कथा०।।
जिन हरि कथा सुनी नहिं श्रवणन, जीवन व्यर्थ गँवाया ।। कथा०।।
कहे शुकदेव सुनो राजा परीक्षित, वेद व्यास यश गाया ।। कथा०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आदत बुरी सँभाल ले

आदत बुरी सँभाल ले, बस हो गया भजन।
मन की तरंग मार ले, बस हो गया भजन ।। आदत०।।
आये हो तुम कहाँ से, जा रहे कहाँ।
इतना दिल में विचार ले, बस हो गया भजन ।। आदत०।।
कोई तुझे बुरा कहे तू वार उसे जाना।
वाणी का स्वर सुधार ले, बस हो गया भजन ।। आदत०।।
नेकी सभी के साथ में, बन जाये तो करो।
मत सरवती का भार, ले बस हो गया भजन ।। आदत०।।
कहना है साफ-साफ, सद्गुरु कबीर का।
निज दोष को निहार ले, बस हो गया भजन ।। आदत०।।

मेरे मन की बाँगा मोड़े

मेरे मन की बॉंगा मोड़े ऐसा कोई सन्त मिले, मेरा तार हरी के साथ जोड़े ऐसा कोई सन्त मिले।।
सन्त मिलन का बड़ा महातम, दुर्लभ जग में सन्त समागम, सोये को आन जगाये ।। ऐसा०।।
भटक-भटक कर पेंडा नहिं छुटता, चंचल मन रोके नहीं रुकता, जो रोके मन के घोड़े ।। ऐसा०।।
इस काया के पॉंच हैं बैरी, भजन में विघ्न करें बरजोरी,. जो पाँच में एक ना छोड़े।। ऐसा०।।
प्रभु जी ऐसा सन्त मिला दो, सन्त मिला उपदेश सुना दो, मन हरि का भजन ना छोड़े।। ऐसा वार

कभी राम बनके कभी श्याम बनके

कभी राम बन के कभी श्याम बन के चले आना, प्रभु जी चले आना।।
कभी राम रूप धरि आना, सीता साथ ले के धनुष हाथ लेके चले आना।। प्रभु०।।
कभी कृष्ण रूप धरि आना, राधा साथ लेके, मुरली हाथ लेके चले आना ।। प्रभु०।।
कभी विष्णु रूप धरि आना, लक्ष्मी साथ लेके, सुदर्शन हाथ लेके चले आना ।। प्रभु०।।
कभी ब्रह्मा रूप धरि आना, वाणी साथ लेके, वेद हाथ लेके चले आना।। प्रभु०।।
कभी रुद्र रूप धरि आना गौरा साथ लेके, त्रिशूल हाथ लेके चले आना ।। प्रभु०।।
कभी संत रूप धरि आना, संगत साथ लेके, माला हाथ लेके चले आना ।। प्रभु०।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

।। श्री कृष्ण रूपमाधुरी ।।

क्षणभंगुर-जीवन की कलिका, कल प्रात को जाने खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द, सुगन्ध समीर मिली न मिली।।
कलि-काल कुठार लिये फिरता, तन-नम्र से चोट झिली न झिली।
कहले हरिनाम अरी रसना, फिर अन्त समय में हिली न हिली।

मुख सूख गया रोते-रोते, फिर अमृत ही बरसाया तो क्या।
जब भवसागर में डूब चुके, तब नाविक नाव को लाया तो क्या।।
युगलोचन बन्द हमारे हुए, तब निष्ठुर तू मुस्काया तो क्या।
जब जीवन ही न रहा जग में, तब आकर दर्श दिखाया तो क्या।।

बलि जाऊँ सदा इन नैनन की, बलिहारी छटा पे मैं होता रहूँ।
मुझे भूले न नाम तुम्हारा प्रभु, चाहे जागृत स्वप्न या सोता रहूं।
हरे कृष्ण ही कृष्ण पुकारुं सदा, मुख आसुओं से नित धोता रहूं।
बृजराज तुम्हारे वियोग में मैं, बस यूं ही निरन्तर रोता रहूं।।

शाम भयी पर श्याम न आये, श्याम बिना क्यों शाम सुहाये।
व्याकुल मन हर शाम से पूछे, शाम बता क्यों श्याम न आये।।
शाम ने श्याम का राज बताया, शाम ने क्यों कर श्याम को पाया।
शाम ने श्याम के रंग में रंग कर, अपने आपको श्याम बनाया।।

जो उस साँवले को ढूंढ़ता है, उसे एक दिन साँवला ढूंढता है।
जिसे ढूंढने का अमल पड़ चुका है, वो इस ढूंढने में मजा ढूंढता है।।
अरे दिल जिसे कल यहाँ ढूंढता है, वो मुझमें है तू कहाँ ढूंढता है।।
मिला उसको जो दिल मिला ढूँढता है जुदा उससे है जो जुदा ढूँढता है।।

वह पायेगा क्या रस का चस्का, नहीं कृष्ण से प्रीत लगायेगा जो।
हरे कृष्ण उसे समझेगा वही, रसिकों के समाज में जायेगा जो।।
बृज धूरि लपेट कलेवर में, गुण नित्य किशोरी के गायेगा जो।
हँसता हुआ श्याम मिलेगा उसे, निज प्राणों की बाजी लगायेगा जो।।

मन में है बसी बस चाह यही, प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करुं।।
बिठला के तुम्हें मन मन्दिर में, मनमोहिनी रुप निहारा करुं।।
भर के दृग पात्र में प्रेम का जल, पद पंकज नाथ पखारा करुं।।
बन प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभो, नित आरती भव्य उतारा करुं।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वह मोद न मुक्ति के मन्दिर में, जो प्रमोद भरा बृजधाम में है।
इतनी छवि राशि अनन्त कहां, जितनी छवि सुन्दर श्याम में है।।
शशि में न सरोज सुधारस में, जो ललित सुधा अभिराम में है।
इतना सुख और कहीं भी नहीं, जितना सुख कृष्ण के नाम में है।।

जिनके मन में नन्दलाल बसे, तिन और को नाम लियो न लियो।
जिसने वृन्दावन धाम कियो, तिन औरहु धाम कियो न कियो।।
जिसने जमुना जल पान कियो, तिन अमृत पान कियो न कियो।
जिंनकी रसना नहीं कृष्ण भजे, तिन मानुष जनम लियों न लियो।।

लाल ही लाल के लाल ही लोचन, लालन के मुख लाल ही बीरा।
लाल बनी कटि काछनी लाल की, लाल के शीश पे लाल ही चीरा।।
लालहि बाग बने अति सुन्दर, लाल खड़े यमुना जी के तीरा।
गोविन्द यों प्रभु शोभा बखानत, लाल के कंठ बिराजत हीरा।।

छल छोड़ के जो भजता छलिया, छलिया भी उसी की चाह करता है।
दिखलाता उसे छवि की किरणें, दिन रात जो दर्द सहा करता है।।
श्रीकृष्ण हमारा सनेही सखा, कुछ मीठी सी बात कहा करता है।
जिन आँखों में नीर बहा करता, उन आँखों में श्याम रहा करता है।।

बृज धूरि ही प्राण सों प्यारी लगे, बृजमंडल मांहि बसाये रहो।
रसिकों के सुसंग में मस्त रहूं जगजाल सो मोहि बचाये रहो।।
नित बाँकी झाँकी निहारा करुं, छवि छाक सो नाथ छकाये रहो।
अहो बाँके बिहारी यही बिनती, मेरे नैनों से नैन मिलाये रहो।।

पीत कसे कटि में कछनी, बनमाल गले सिर मोर की पाखें।
गोल कपोलन पे मकराकृति, मार अनेकन के मद माखे।।
टेरत बेनु कदम्ब तरे लखि, दीन हिये उपजें अभिलाखें।
या छवि देखन को करतार, करो प्रति रोम हजारन आँखें।।

उर ऊपर नित्य रहूं लटका, अपनी बनमाल का फूल बनादे।
लहरें टकराती रहें जिससे, कमनीय कालिन्दी का कूल बनादे।।
कर कंज से थामते हों जिसको, उस वृक्ष कदम्ब का मूल बनादे।
पद-पंकज तेरे छूएंगे कभी, बृजराज हमें बृज धूरि बनादे।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हरिनाम का पारस पास में था, मतिमन्द गंवार ने जान न पाया।
वन मारग की धूलि बटोरन में, यह हीरा सा जनम अमोल गंवाया।।
सुख सिंधु अथाह भरा उर में, मृगतृष्णा के पीछे वृथा भरमाया।
अब तो भज मूढ़ दयानिधि को, सिर ऊपर काल ने डंका बजाया।।

वृन्दावन धाम को वास भलो, जहाँ नित्य बहें यमुना पटरानी।
जो जन नहाय के ध्यान धरें, बैकुण्ठ मिले तिनको रजधानी।।
चारिहु वेद बखान करें, अरु सन्त मुनीस गुनी मनमानी।
यमुना यम दूतन टारत हैं, भवतारत हैं श्री राधिका रानी।।

गजब की बाँसुरी बजती है, वृन्दावन बसइया की।
करुं तारीफ मुरली की, या मुरलीधर कन्हैया की।।
जहाँ चलता न था कुछ काम, तीरों और कमानों से।
विजय नटवर की होती थी, वहाँ मुरली की तानों से।।

रसना रसनाम का पीती रहे, भरी प्याली रहे नित नेह सदा ही।
इठलाता, मुस्काता, उडोलता सा रस, मेरे सामने हो मेरा साँवला साकी।।
थिरकूं गाऊँ रिझाऊँ इसे, मन में न रह जाए कोई अरमान बाकी।
बस चाह यही नित देखा करूँ, मनमोहन की मनमोहिनी झांकी।।

मन मोहन ते बिछुरी जब सों, तन ऑसुन सों सदा धोवती हैं।।
हरिचन्द जब प्रेम के फन्द परी, कुल की कुल लाजहिं खोवती हैं।।
दुःख के दिन केही भाँति बितै, बिरहागम रैन संजोवती हैं।
हम ही अपनी दसा जाने सखि, निसि सोवती हैं किधों रोवती हैं।।

नहीं ब्रह्म सो काम कछु हमको, बैकुण्ठ की राह न जावनी है।
बृज की रज़ में रज हौं के मिलूं, यही प्रीति की रीत निभावनी है।।
वन वल्लभ गाय चराया करुँ, सुन ग्वालिन की गुहरावनी है।
नन्द नन्दन की देहरी पै घिसके, हमें कर्म की रेखा मिटावनी है।।

हम ऐसे नहीं चाहन हारे, जो आज तुम्हें कल और को चाहें।
फेंक दे दूर निकाल के ऑखें, जो किसी और की ओर लखें औ लखायें।।
लाख मिलों तुमसे बढ़के, हम तुम्हें ही चाहें तुम्हें ही सराहें।
जब तक तन में प्राण रहें, तब तक नेह का नाता निबाहें।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

क्षणभंगुर

क्षणभंगुर जीवनकी कलिका, कल प्रातको जाने खिली न खिली।
मलयाचलकी शुचि शीतल, मन्द, सुगन्ध समीर मिली न मिली।।
कलि काल-कुठार लिये फिरता, तन नम्रसे चोट झिली न झिली।।
रट ले हरि नाम अरी रसना ! फिर अन्त समयमें हिली न हिली।।

बुद्धि बड़ी चतुराई बड़ी मनमें ममता अतिसय लिपटी है।।
ज्ञान बड़ो धन धाम बड़ो, करतूत बड़ी जगमें प्रगटी है।।
गज बाजी हूँ द्वार मनुष्य हजार, तो इन्द्र समानमें कौन घटी है?
सो सब विष्णुकी भक्ति बिना, मानो सुन्दर नारिकी नाक कटी है।।

जब दाँत न थे तब दूध दियो, अब दाँत दिये तोको अन्न भी दैहैं।।
जलमें थलमें पशु-पक्षिनमें, सबकी सुधि लेत वो तेरी भी लैहैं।।।
जानको देत अजानको देत, जहानको देत वो तोकों भी दैहैं।।
रे मनमूरख ! सोच करे क्यूँ, सोच करे कछु हाथ न अइहैं।।

तिन्ह तें खर-सूकर-स्वान भले, जड़ता बस ते न कहैं कछु वै।।
'तुलसी' जेहि रामसों नेहु नहीं, सो सही पसु पूँछ विषान न द्वै।।
जननी कत भार मुई दस मास, भई किन बाँझ, गई किन च्वै।
जरि जाउ सो जीवनु, जानकीनाथ ! जिये जगमें तुम्हरो बिनु ह्वै।।

कौन कुबुद्धि भई घट अन्दर तूँ अपने प्रभुसों मन चोरै।
भूलि गयो विषयासुखमें सठ, लालच लागि रयो अति थोरै।।
ज्यों कोउ कंचन छार मिलावत, ले करि पत्थरसों नग फोरै।
सुन्दर या नरदेह अमोलक, तीर लगी नउका कत बोरै।।

दोहा :- रतन बन ब्याधि-बिपत्तिमें, रहिमन मरउ न रोय।
जो रच्छक जननी-जठर, सो हरि गये न सोय।।१।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मेरे भोले बाबा

मेरे भोले बाबा को, अनाड़ी मत समझो। अनाड़ी मत समझो, खिलाड़ी मत समझो।
वो है त्रिपुरारी अनाड़ी मत समझो।। मेरे।।
मेरे भोले बाबा के गले सर्पो की माला, सर्पो को देखकर सपेरा मत समझो।। मेरे।।
मेरे भोले बाबा के है हाथों मे डमरू, डमरू को देखकर मदारी न समझो।। मेरे।।
मेरे भोले बाबा के है तन पै मृगछाला, मृगछाला को देखकर शिकारी न समझो।मेरे।।
मेरे भोले बाबा के है संग में नन्दी, नन्दी को देखकर व्यापारी मत समझो।। मेरे।।
मेरे भोले बाबा के हैं साथ में पार्वती, पार्वती को देखकर संसारी न समझो।। मेरे।।

भोले नाथ सुनो

भोले नाथ सुनो, मेरी अरज प्रभो, त्रिपुरारी। आया-आया मैं शरण तिहारी।।
जग के कष्टों ने है मुझको घेरा, है भरोसा प्रभो एक तेरा।
मैं पुकारूँ तुझे, तू बचा ले मुझे, त्रिपुरारी।। आया २...
कैसे मंजिल पे पहुँचूं मैं स्वामी, दो सहारा हे अन्तरयामी।
लड़खड़ा मैं रहा, धबड़ा मैं रहा, त्रिपुरारी।। आया......
दीन दुखियों के तुम हो सहारे, हम सिवा तेरे किस को पुकारें।
कोई सुनता नहीं, कोई अपना नहीं, त्रिपुरारी। आया...
तेरे द्वारे पे जो भी है आता, तेरे चरणों में शीश झुकाता।
सबकी सुनता है तू, झोली भरता है तू, त्रिपुरारी। आया २...

तेरी चौखट पे आना

तेरी चौखट पे आना मेरा काम है, मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है।। टेक।।
मैं घर से चला था यही सोचकर, आगे रास्ता बताना तेरा काम है।।
बीच धारा में नैया हमारी पड़ी, उसमें बतली लगाना तेरा काम है।
जिसको कोई न दुनिया में अपना कहे, उसे अपना बनाना तेरा काम है।।
जिससे सारा जमाना ही नफरत करे, गले उसको लगाना तरो काम है।।
हम आये हैं माधव तेरे द्वार पर, हमको अपना बनाना तेरा काम है।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

मैं आया शरण तेरी

मैं आया शरण तेरी, मुझे अपना बना लेना।
जो होय खता मेरी, उसे दिल से भुला देना।। टेक।।
संसार में माया का, क्याचक्कर बनाया है।
इस झूठी दुनिया में, क्या रिस्ता बनाया है।।
मोह माया के बन्धन से, प्रभु मुझको छुड़ा देना।। जो होय०।।
सुनता हूँ मैं सन्तों से, सागर के खेवैया हो।
प्रभु डगमग डोल रही, मेरी जीवन नैया हो।
बिन आसरे जा रही है, प्रभु पार लगा देना।। जो होय०।।
लाया तो मैं कुछ भी नहीं, प्रभु तेरे रिझाने को।
ना फूल हैं पूजा के, ना दीप जलाने को।।
अरदास यही भगवन् चरणों में लगा लेना।। जो होय०।।

श्री रघुवीर जी की आरती

हे रघुवर तेरी आरती गाऊँ-आरती गाऊँ प्रभु तुमको रिझाऊँ
शीश पे रघुवर मुकुट विराजे-गले वैजयन्ती माला साजे।
चरणों में तेरे फूल चढाऊँ-हे रघुवर तेरी........।।१।।
बाएँ सोहत हैं जगजननी- चरनन चापत है सुत अंजनी।
मैं बलिहारी तिहारे जाऊँ-हे रघुवर तेरी..........।।२।।
लखनलाल जी विराजें दाएँ- भरत शत्रुघन चँवर झुलाएँ।
मैं भी सियावर तेरा दास कहाऊँ-हे रघुवर.......।।३।।
सर्व जनों के आप हैं रक्षक-दूर करो दुःख हे जगपालक।
चरणों में तेरे सीस नवाऊँ-हे रघुवर तेरी ....।।४।।

आरती बाल कृष्ण की।

आरती बालकृष्ण की कीजे अपनो जनम सुफल करि लीजे।
श्री यशुदा को परम दुलारो, बाबा की अँखियन को तारो।
गोपिन को प्राणन ते प्यारो, इन पै प्राण न्योछावर कीजे।। आरती...
बलदाऊ कौ छोटो भैया, कनुआ कहि कहि बोलत मैया।
परम मुदित मन लेत बलैयां, यह छवि नैनन में भरि लीजै।। आरती...
श्री राधावर कुँवर कन्हैया, ब्रज जन को नव नीत खवैया।
देखत ही मन लेत चुरैया, अपनो सरबस इन को दीजै।। आरती...
तोतरि बोलन मधुर सुहावै, सखन संग खेलत सुखपावै।
सोई सुकृती जो इनको ध्यावै, अब इनको अपनो कर लीजै।। आरती...

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्री गिरिधर जी की आरती

हे गिरिधर तेरी आरती गाऊँ, आरती गाऊँ प्यारे तुमको रिझाऊँ।
बांके बिहारी तेरी आरती गाऊँ। हे गिरिधर तेरी आरती गाऊँ।।
मोर मुकुट तेरे शीश पे सोहे, प्यारी बंशी मुनि मन मोहे।
देख छवि बलिहारी मैं जाऊँ, हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ।।
चरणों से निकली गंगा प्यारी, जिसने सारी दुनियाँ तारी।।
उन चरणों में शीश नवाऊँ, हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ।।
व्यास दास के नाथ आंप हो, सुख-दुःख जीवन साथ आप हो।
श्री चरणों की बलि-बलि जाऊँ, हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ।।

श्री सद्गुरु देव जी की आरती

आरती सतगुरु देव की कीजै। तन मन धन न्यौछावर कीजै।।
ज्ञानप्रेम की मूरत स्वामी, समदर्शी उर अन्तर्यामी, निरखत नैन सफल कर लीजै।१।
अतिउत्तम वाणी की शोभा, जाको सुनत मेरा मन लोभा, होत विमलमति भवदुःख छीजै।२।
राम राम' विभुजेहि श्रुति गावै, सो ही सतगुरु रूप लखावै, झरत सदा अमृत भर पीजै।३।
कर जोरे सब शिष्य मनावे, बार बार यह विनय सुनावे, भक्ति अनन्य प्रभु वर दीजै।४।

आरती श्रीवामन भगवान की

ऊँ जय वामन देवा, हरि जय वामन देवा।
बलि राजा के द्वारे, सन्त करे सेवा।। वामन।।
रूप अनूपम सुन्दर, छत्र दण्ड सोहा।
तिलक भाल सुमनोहर, भक्तन मन मोहा।।१।।
आगम निगम पुराण बखाने, मुख मण्डल शोभा।
कर्णन कुण्डल भूषित, हार पड़े ग्रीवा।।२।।
बलि मखशाला याचें, भूमि तीन पदा।
तीन पाँव है थोड़ी, बलि अभिमान करा।।३।।
प्रथम पाद गयो ब्रह्मलोक में, दूजो धारे धरा।
तृतीय पाद मस्तक पे, बलि अभिमान हरा।।४।।
रूप त्रिविक्रम आरती, जो चित से गावे।
सुख सम्पति नाना विधि, हरिजी से पावे।।५।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आरती श्री नृसिंहजी की

ऊँ जय नरसिंह हरे प्रभु जय नरसिंह हरे।
खम्भ फाड़ प्रभु प्रगटे, जन का ताप हरे।। टेक।।
तुम हो दीन दयाला, भक्तन हितकारी (प्रभु) अद्भुत रूप बनाकर, प्रगटे भयहारी।।१।।
नख से उदर विदारयो, दुष्ट दियो मारी (प्रभु) दास जान अपनायो, जन पर कृपा करी।।२।।
ब्रह्माजी करत आरती, मालप पहिनावे (प्रभु) शिवजी जै जै कहकर, पुष्पन बरसावे।।३।।
नारद बीन बजावे, सनकादिक गावे (प्रभु) इन्द्रदेव सब मिलकर जै जै कार करे।।४।।
जो कोई साँझ सवेरे, यह आरती गावे (प्रभु) पद्मनाभ उनके घर, सुख सम्पति आवे।।५।।

आरती श्रीरघुनाथजी की

ऊँ जय जानकी नाथा प्रभु जय श्री रघुनाथा, दोउ कर जोड़े बिनऊँ प्रभु मेरी सुन बाता।। टेक।।
तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता, तुम हो सजन संगाती भक्ति मुक्ति दाता।।१।।
चौरासी प्रभु फन्द छुड़ाओ मेटो यम त्रासा, निशिदिन प्रभु मोय राखो अपने संग साथा।।२।।
सीता राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न संग चारों भैया, जगमग ज्योति विराजत शोभा अति लहिया।।३।।
हनुमत नाद बजावत नेवर ठिमकाता, सुवरण थाल आरती करत कोसल्या माता।।४।।
क्रीट मुकुट कर धनुष बिराजत शोभा अति भारी, मनीराम दर्शन की आशा पल पल बलिहारी।।५।।
रामकृपालु दया कर, बोले उपकारी। वे हरि हमें बताओ, सीताराम धनुष धारी।।६।।
ब्रह्मा शेष सदा शिव, नारद गुण गाता। तुलसीदास की विनती सुनजो रघुनाथा।।७।।

श्लोक

धनानि भूमौ, पशवश्च गोष्टे, नारी गृहद्वारि, जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकयाने, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः।।

कार्येसु मंत्री करणेषुदासी धर्मेषु लक्ष्मी क्षमया धरित्री।
स्नेहेषु माता शयनेषु रम्भा र सखी लक्ष्मण! सा प्रिया मे।।

ठाकुर हमरे रमण बिहारी हम है रमण बिहारी के।
साधु सेवा काम हमार काम न दुनियाँ दारी से।।
कोई भला कहे चाहे बुरा कहे हम हो गये रमण बिहारी के।
ठाकुर हमरे रमण बिहारी हम है रमण बिहारी के।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

परिशिष्ट

सरस्वती वन्दना

जयति जय जय माँ सरस्वती; जयति वीणा धारणी।। टेक।।
कमल आसन छोड़ दे माँ, देख जन की दुर्दशा।
शांति की सरिता बहा माँ, तुम हो बिपति बिनाशनी।।
देवी हँस वाहनी तू, हंस सी उड़ान भर, कविता कला की कल पिगंल पढ़ाती जा।
वीणा वर बादनी बिराज वाक्य वाणी मध्य, तंत्र तार पूरियों की ताल झनकाती जा।।
गाती जा गवाती हरि चरित सुझाती अम्ब, अश्रु शक्ति शक्ति की उमंग उमगाती जा।
जब तक जियूं इस महीतल जगतीतल पर, राम रस पियूँ यह बरदान बरसाती जा।।

गणेश वन्दना

ज्ञान उजागर सुख के सागर, प्रथम मनाऊं तुम्हें गणेश।
माता जिनकी पारवती है, पिता है जिनके श्री महेश।।
सिद्धि होत जिनके सुमिरण से, काटत जन के सकल कलेश।
सुर नर मुनि सब ध्यान धरत है, तारा गण रवि शशि सुरेश।।
गणपति गुणों के धाम, बल बुद्धि के निधान।
कर गौर शिव का ध्यान, कर स्तुति महान।।
भ्राता जिनके काल केतु है, मात उमा और पिता महेश।
ज्ञान उजागर सुख के सागर, प्रथम मनाऊं तुम्हें गणेश।।

ऊधौ मोहे सन्त

ऊधौ मोहे सन्त लगें अति प्यारे।
मेरे कारण छोड़ जगत के भोग पदारथ सारे।
निस दिन ध्यान धरत हृदय में सब घर काज बिसारे।।
मैं सन्तन के पीछे जाऊँ जहाँ जहाँ सन्त पधारे।
चरणन रज निज अंग लगाऊँ सोधू गात हमारे।
सन्त मिले तो मैं मिल जाऊँ सन्त न मुझसे न्यारे।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गुरु देव आपके चरणों में

गुरु देव आपके चरणों में, मैं सादर शीश झुकाता हूँ।
मेरे मन की कली खिल जाती है, जब दरस आपका पाता हूँ।।
मुझे आपका नाम प्यारा है, इसका ही मुझे सहारा है।
तेरे नाम में ऐसी शक्ति है, जो चाहता हूँ वह पाता हूँ।
गुरु देव तपस्वी राजा हो, तुम राजा हो महाराजा हो।
मैं एक मूढ़ सा दास तेरा, कुछ कहते हुये सरमाता हूँ।।
श्री गुरु चरणों में अरज यही, दास ने आपकी शरण लई।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे, श्री चरणों से यह चाहता हूँ।।

कपिल मुनि मात अपनी

कपिल मुनि मात अपनी को, भक्ति मारग बताते है।
ज्ञान वैराग्य सुख दायक, भक्ति हरि की सिखाते है।।
संग सन्तों का नित्य कीजै, जो सच्चे हर तरह से है।
विविध सन्ताप दुःख हारी, कथा हरि की सुनाते है।।
प़िता सुध बन्धु गुरु भाई, इष्ट हरि को बनाते है।
न चाहे भक्त इन्द्रासन, राज दुनियाँ का सुख सारा।।
बैठ एकान्त हृदय में, श्याम छवि नित्य गाते है।
कपिल मुनि मात अपनी को, भक्ति मारग बताते है।

सवैया

जब नाम मंगल धाम प्रभु का, होय विबस उसने लिया।
कई कोटि जन्मों के अघों का, नाश तच्छण कर दिया।।
अक्षर सुखाद ये चार अक्षर, नारायण उसने कहा।
भये उदय सब पूर्ण उसके, पाप नहिं उसका रहा।।

संकेत मे परिहास में, तान में आलाप में।
हरि नाम लीन्हे अघ नसे, यों मुनि कहे ब्याख्यान में।।
अनजान में अमृत पिये, तो भी अमर हो जायेगा।
ये नाम जान अजान लीन्हे, फल अवश्य ही पायेगा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

हरि नाम चरित्र न जीभ रटे, पल पल मन चित्त नहीं सुमिरे।
सिर कृष्णहि नाहि नवैं कबहुँ, अरु तीरथ में नहिं पाँव धरे।।
सत सगंत में नहि जाये कभी, अरु वैष्णव कर्म न भूलि करै।
तिन पापिन को यहाँ लाय धरो, हम नरक में डाल के सुद्ध करैं।।

भजो सुत साँचे

भजो सुत साँचे श्याम पिता हि।
जाके शरण जात ही मिटिहैं, दारुण दुख की दाहि।।
कृपा वन्त भगवन्त सुने प्रभु, तोसों मिलिहैं आहि।
तेरे सकल मनोरथ पुरिहैं, जो मधुवन लौ जाहि।।
वे कृपालु दयाल दीन तू, करिहैं कृपा निबाहि।
और ठौर न अनाथ दुखियन को, मैं देख्यों जग नाहि।।

ध्रुव प्रसंग

हे वत्स तुम भी भक्त वत्सल, विष्णु का आश्रय रहो।
भव चक्र भय से मुनि चहैं, वह प्रेम पथ को तुम लहो।।
तज अन्न चिन्तन भक्त से, प्रभु को हृदय में धार लो।
दुःख विनाशक हरि कृपा से, उच्च पद अधिकार लो।।

गज प्रसंग

गज पूर्ण निराश भयो जबहीं, तब आरत नाद सुनय दियो।
प्रण आपन नाथ भुलाय क़हो, किमि आवन माहि बिलंब कियो।।
तुरतहिं विनिता सुत को तजिके, डूबत गज राज बचाय दियो।
तेहि अंतिम नाम को रा दुःख में, म सुख कहि के पांय छियो।।

दोहा- हाथी कहि धायो प्रभु, गज को देख निराश।
हा उचरेउ निज देख में, थी हाथी के पास।।

मोहनी मूरत नार सरूपा

मोहनी मूरत नार सरूपा।।
अंग अंग में विष व्यापत, जहां लागत अमृत कूपा।
कामी मूढ़ न अन्त निहारे, सुर मुनि साहू भूपा।।
दौड़त जीव नार के पीछे, समझे छांह न धूपा।
माधव राम श्याम सुर हित को, भयो मोहनी रूपा।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अम्बरीस प्रसंग

नैन वही जो लखे हरि को, अरु बैन वही हरि नाम उचारे।
कान वही जो सुने हरि के गुण, दान वही भव पार उतारे।।
काम वही जग छाय रहे, सर नाम वही प्रभु के तन गारे।
ध्यान वही जो लगे निशि वासर, ज्ञान वही जो विवेक बिचारे।।

है आँख वो

है आँख वो जो राम का दर्शन किया करे।
वो शीश है हरि चरणों में वन्दन किया करे।।
बेकार वो मुख है, रहे व्यर्थ वाद विवाद में।
मुख वो जो हरि नाम का, सुमिरण किया करे।।
हीरों के कड़ो से नही, शोभा है हाथ की।
है हाथ वो जो नाथ का, पूजन किया करे।।
मर कर भी अमर नाम है, उस जीव का जग मे।
प्रभु प्रेम में बलिदान, जो जीवन किया करे।।
कविवर वही है श्याम के, सुन्दर चरित्र का।
रसना के जो रस विन्दु से, बर्णन किया करे।।

श्री गंगा मईया

श्री गंगा मईया तेरी लहर मन भाई।
हरि चरणन से निकली सुरसरि, ब्रह्म कमण्डल आई।।
भागीरथ ने तपस्या कीनही, शिव ले शीश चढाई।
हरि क्षेत्र होय सूकर क्षेत्र हाय, कर्ण क्षेत्र को धाई।।
प्रयाग राज जमुना से मिल कर, काशी भेंटी जाई।
भारत भूमि पावन कीन्ही, तारे अधम कसाई।
साठ हजार सगर सुत तारे, गंगा सागर धाई।।
नन्द दास गंगा की महिमा, मोपे कही न जाई।
जो गंगा को महातम गावे, भव सागर तर जाई।।

श्री राम चन्द्र रघुवर रक्षा करो

श्री राम चन्द्र रघुवर रक्षा करो हमारी।
धनुबान के धरैया हम है शरण तुम्हारी।।
करुणा की मूर्ति प्रभु तुम, भक्तों के दुःख मिटाते हो।
लाखों है तुमने तारे, अब है हमारी बारी।।
अवधेश राम प्यारे, दीनों के हो सहारे।
मुझसा न दीन कोई, यह मन में लो विचारी।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

छठी प्रसंग

आज मोहन छठी आई रे रसिया।
आई रे रसिया मन भाई रे रसिया।।
बन्धनवार पताका घर घर, मोतियन चौक पुराई रे रसिया।
पूजे गणपति गौर सदा शिव, घर घर सुरभि सुहाई रे रसिया।।
प्रेम मगन रोहणी यसोमति, मणि धन धेनु लुटाई रे रसिया।
लै लै गोद ललन मुख चूमत, गिरधर गावे बधाई रे रसिया।।

आज इतनी देर क्यों

आज इतनी देर क्यों, तुमको मुरारी हो गई।
था गरुड़ जो पास में, क्या वो सवारी खो गयी।।
ये समझ लेना हंसी, धनश्याम होगी आपकी।
द्रोपदी के शीश से, जो दूर साड़ी हो गई।।
खींचता है चीर, दुःशासन तुम्हारे भक्त का।
आपके रहते हुये भी, मेरी ख्वारी हो गयी।।
क्या कहेंगे लोग करुणा, सिन्धु मधुसूदन तुम्हे।
द्रौपदी दासी अगर, नंगी तुम्हारी हो गई।।
काट लो उनकी जुबां, अपने सुदर्शन चक्र से।
कह रहे है लोग जो, दासी हमारी हो गई।।
खींचता है लाख दुःशासन, मगर साड़ी खिचती नहीं।
दासी की इतनी बड़ी, आनन्द सारी हो गई।।

प्यारे मोहन मुरलिया

प्यारे मोहना मुरलिया बजाय दे कि मन्द मुस्काय दे लला।
वृन्दावन की कुञ्जं गली में, टेढी चितवन साँवरिया चलाय दे।। कि मन्द ।।
दै-दै ताल कदम तरू नाचत गोपीजन के राधा मन के मनोरथ पुराय दे। कि मन्द।।
कीरति कुमारी के सर्वस्व बिहारी नैन चातक की प्यास बुझाय दे।। कि मन्द।।
मोर मुकुट मकरा कृति कुण्डल बाँकी झाँकी सँवरिया दिखाय दे।। कि मन्द।।
परम पुनीत मीत रघुबर के रासलीला के दर्शन कराय दे।। कि मन्द।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

माँगा है मैने श्याम से

माँगा है मैने श्याम से, बरदान एक दिन,
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी।। टेक।।
जिस पर प्रभु का हाथ था, वह पार हो गया,
कोई सोच सका नहीं, माया बड़ी अजीब,
जिसने प्रभु को पा लिया, वोही खुश नसीब।
जिसकी इजाजत के बिना, पत्ता हिले नही।। माँगा है मैने।।
ऐसे दयालू श्याम से, रिस्ता बनाइये,
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाहिये,
ऐसा करिश्मा होगा, जो हुआ कभी नही।। माँगा है मैने।।
कहते है लोग जिन्दगी, किस्मत की बात है,
किस्मत बनाना भी मगर, उसके ही हाथ है,
करले यकीन अब मेरा, ज्यादा समय नहीं।। माँगा है मैने

मेरे बाँके बिहारी लाल

मेरे बाँके बिहारी लाल नजर तोहे लग जायेगी।।
मत कर इतना श्रृंगार नजर तोहे लग जायेगी।।
शीश पगी पगिया जरतारी, तेरी आँखों पे डोरे लाल।। नजर।।
मोर पंख तेरे शीश पे सोहे तेरी टेढी मेढी चाल।। नजर।।
गजब करे तेरी कारी कमरिया, तेरे गले बैजयन्ती माल।। नजर।।
मस्त बजे तेरी प्यारी रे बाँसुरिया नाचे दै-दै ताल।। नजर।।
पैरन में पैजनिंया बाजै तेरी लकुटि करे कमाल।। नजर।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गोपी गीत

जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते।।१।।
शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदर श्रीमुषा दृशा
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः।।२।।
विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः।।३।।
न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले।।४।।
विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात।
करसरोरूहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम।।५।।
ब्रजजनार्तिहन् बीर यौषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो जलरुहाननं चारू दर्शय।।६।।
प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम।
फणिफणार्पितं ते पदाम्भुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्।।७।।
मधुरया गिरा बल्गुवाक्यया बुध मनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती रधरसीधुनाऽप्याययस्व नः।।८।।
तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।।९।।
प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यान मंगलं।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि।।१०।।
चलसि यद् ब्रजाच्चारयन पशून् नलिन सुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति।।११।।
दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।
धनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि।।१२।।
प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपङ्कजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्।।१३।।
सुरतवर्धनं शोकनाशंन स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर. नस्तेऽधरामृतम्।।१४।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम्।।१५।।
पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तें ऽन्त्यच्युता गताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि।।१६।।
रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः।।१७।।
व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिन हन्त्र्यलं विश्वमंगलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्।।१८।।
यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः।।१९।।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे।।१।।
अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे।।२।।
बिष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः।।३।।
कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक।।४।।
राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातुमाम्।।५।।
धेनुकारिष्टका निष्टकृद्द्वेषिहा चाणूरकंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरज़ाखेलनो बालगोपालकः पातु मां सर्वदा।।६।।
विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं लोहिताङ्घ्रिद्वयं बारिजाक्षं भजे।।७।।
कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे।।८।।
अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविष्वम्भर स्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम्।।९।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतमच्युताष्टकं सम्पूर्णम्।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

किस कदर तोड़ा

किस कदर तोड़ा है दिल, ऐ साँवरे तूने मेरा।
गिरते पड़ते आई थी, कुछ तो रहम खाते मेरा।।
आपके मंदिर में जाने क्यों, चली आती हूँ मैं।
लग गयी ऐसी लगन ये, दिल नही माने मेरा।।
मैंने तो तन मन सभी कुछ, तेरे अर्पण कर दिया।
पकड़ा जो दामन तेरा तो, किस कदर झटका मेरा।।
मै तो दासी आपकी हूँ, आप हो मेरे पिया।
आप भी गर छोड़ दोगे, हश्र क्या होगा मेरा।।

मुझे नजर से उतार

मुझे नजर से उतार करके, न चैन पाया तो क्यां करोगे।
चले हो जिसको भुला के दिल से, वो याद आया तो क्या करोगे।।
ये मैंने माना बगैर मेरे, तुम्हारी महफिल जवां रहेगी।
कहीं जो भूल से नाम मेरा, जुबां मे आया तो क्या करोगे।।
तुम्हारी महफिल में रोज होगे, नयी कहानी नयी फसाने।
कहीं जो भूल से ख्वाब में हमने, आ जगाया तो क्या करोगे।।

मना लूँगी मैं मनालूँगी

मना लूँगी मैं मनालूँगी, अपने रूठे सँवरिया मनालूँगी।
बसालूँगी मैं बसालूँगी, अपने हृदय में उनको बसालूँगी।।
जो मिल जाये मोहे, नन्द जू को लाला, देखो मदन गोपाला।
बिठा लूँगी मै बिठा लूँगी, अपने नयनों में उनको बिठा लूँगी।।
जाने न दूँगी कहीं से भी प्यारे, बन्द कर लूँगी सारे द्वारे।
कर लूँगी मैं तो कर लूँगी, नयन द्वारे ही बन्द मैं तो कर लूँगी।।
मै तो दासी श्याम तिहारी, बुला बुला कर प्रभु मैं हारी।
पकड़ लूँगी मैं पकड़ लूँगी, श्याम चरणों को तेरे पकड़ लूँगी।

नयन दोउ हमरे

नयन दोउ हमरे तुम्हरी ओर, तुम्हरी ओर तुम्हरी ओर।
हम चितवत तुम चितवत नांही, ओ मोहन चित्त चोर।। नयन।।
तुम तो चन्दा जग उजियारे, जग उजियारे जगत उजियारे।
हम बन बैठे चकोर, नयन दोउ हमरे तुम्हरी ओर।।
हमरे मोहन एक ही मोहन, हमसे लाख करोड़।
हम सब दासी दरशन प्यासी, निरखो हमरी ओर।। नयन ।।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust

सौजन्य से :-

1. वैकुण्ठवासी माताजी श्रीमती केलीबाई श्रीबंशीलालजी काबरा
जूसरी निवासी की पुण्य स्मृति में,
श्री सत्यनारायण जी काबरा
258, दूसरा माला, कालबा देवी,
मुम्बई-2

2. श्री दामोदरलालजी भण्डारी,
कोरेगाँव, सतारा,
महाराष्ट्र

3. वैकुण्ठवासी श्री छैलबिहारी अग्रवाल की प्रथम पुण्यस्मृति में
श्री गोविन्द, प्रेम, तरुण, मनोज, मोहन एवं चन्दू
सुनीता बिल्डिंग, अपोजिट सुन्दर नगर,
मलाड (पश्चिम) मुम्बई-64

4. श्री वासुदेव टीबड़ेवाल
202, सुनीता बिल्डिंग, अपोजिट सुन्दर नगर,
मलाड (पश्चिम) मुम्बई-64

5. श्रीमती ओमवती शर्मा
अध्यक्ष-श्री वैष्णव महिला मण्डल,
C-8-10 यमुना बिहार, दिल्ली-53.
फोन न० 2179413

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

डा० आचार्य श्रीस्वामी पुरुषोत्तम जी महाराज श्रीधाम वृन्दावन, का संक्षिप्त जीवन परिचय :-

श्रीरामानुजसम्प्रदाय की श्रेष्ठपरम्परा में अशर्फी भवन, अयोध्यापीठाधीश्वर प्रात: स्मरणीय वै० वा० अनन्तश्रीविभूषित परमार्थरत्न जगदाचार्य श्रीस्वामी मधुसूदनाचार्यजी महाराज के प्रशिष्य एवं श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री स्वामी श्यामनारायणाचार्य जी महाराज के कृपा प्राप्त शिष्य डा० स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का आविर्भाव आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में एक ऐसे ज्योतिपुंज के रूप में है जो विगत 25 वर्षों से अपने ज्ञान एवं प्रखर प्रतिभा से सभी को मार्ग दर्शन एवं दिशा प्रदान कर रहे हैं।

संतप्त मानवता को शान्ति प्रदान करते हुए, अनुपमेय आदर्शों की स्थापना करते हुए, आध्यात्मिक चिंतन को जनसाधारण तक सुलभ बनाते हुए, विशिष्टाद्वैत वेदान्त एवं भागवत धर्म को व्यावहारिक बनाते हुए अपने गुरुदेव की आज्ञानुसार सनातन धर्म के प्रचार एवं प्रसार द्वारा एक नवीनयुग का निर्माण करने में लगे हैं।

प्रारम्भिक शिक्षा तथा उपनयन संस्कारोपरान्त आपने वृन्दावन, अयोध्या, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि स्थानों में अध्ययन कार्य पूर्ण करते हुए उच्चशिक्षा हेतु वाराणसी के लिए प्रस्थान किया तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर शिक्षा पूर्ण की, पुन: सन् 1985 में श्रीधामवृन्दावन लौटे तथा श्रीधामवृन्दावन को अपनी साधना स्थली बनाई। वृन्दावन के आदर्श श्रीरंगलक्ष्मीविद्यालय के वेदान्तविभागाध्यक्ष पं० श्रीमधुसूदनजी से वेदान्तशास्त्र का गहन अध्ययन किया, 1985 में व्याकरणाचार्य, 1990 में वेदान्तचार्य तथा श्रीलालबहादुरशास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली से पीएच० डी० की मानद उपाधि सन् 1994 में प्राप्त की। आपने श्रीवैष्णववेदान्त शिक्षा संस्थान, श्रीवैष्णवधामट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन दिल्ली में कराया। आप इन दोनों संस्थाओं के संस्थापकाध्यक्ष हैं। महाराजश्री का कार्यक्षेत्र श्रीधामवृन्दावन है। **श्रीवैष्णवधाम ट्रस्ट** हेतु एक विशाल भूखण्ड श्रीधामवृन्दावन में लेने की योजना है। आप अपने तन-मन-धन से यथा शक्ति सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बने।

महाराजश्री श्रीमद्भागवत, श्रीरामायण, गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, धर्मग्रन्थ तथा भारतीय संस्कृति और संस्कारों के प्रबल तथा प्रखर प्रवक्ता हैं। अभी तक महाराजश्री ने हजारों प्रवचन कार्यक्रम तथा भारत और विदेशों में 100 से अधिक श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा परायण कर असंख्य भक्तों को कथामृतरसपान कराया है।

आपके द्वारा लोक कल्याणार्थ उपरोक्त ट्रस्ट की तरफ. से समय-समय पर सामाजिक सेवायें सम्पन्न होती रहती हैं।

卐 *// श्रीरस्तु शुभमस्तु //* 卐

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

जय श्रीराधे   श्रीमते रामानुजाय नमः   जय श्रीकृष्ण

श्री सद्गुरुदेवाय नमः

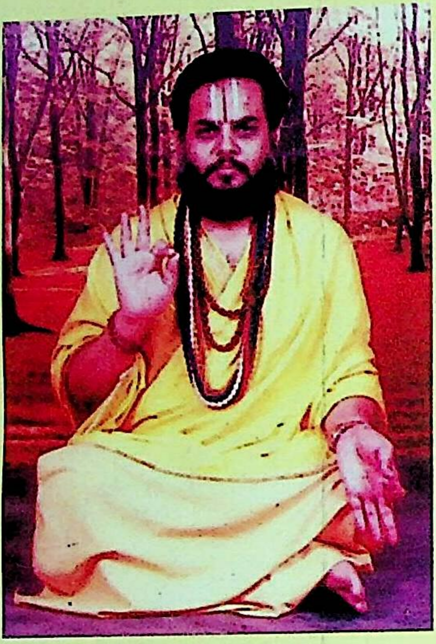

वेदान्त व्याकरणाचार्य विद्यावारिधि उपाधि समलंकृत पद वाक्य प्रमाण पारावारीण

अन्तर्राष्ट्रियख्यातिप्राप्त श्रीकृष्णकथामर्मज्ञ अनन्तश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजसम्प्रदायाचार्य

डा० आचार्य श्री स्वामी पुरुषोत्तम जी महाराज श्रीधामवृन्दावन

संस्थापक एवं परमाध्यक्ष

निर्माणाधीन :- श्रीवैष्णवधाम, परिक्रमा मार्ग के समीप वृन्दावन-मथुरा रोड़, श्रीधामवृन्दावन

श्रीसारस्वतकुलारविन्दतरणिं श्रीवैष्णवार्यप्रियम्
श्रीमच्छ्रीमधुसूदनार्य प्रशिष्यं भक्त्या प्रदीप्तोज्जवलम्।
श्रीमच्छ्यामपदाब्जलुब्धमधुपं वेदान्तविज्ञंगुरुम्
श्रीमच्छ्रीपुरुषोत्तमार्यमनघं वन्दे दयैकसागरम्।।

Devavani Parishad New Delhi